यीशु मसीह
एक
अनन्त बलिदान

बेटी बर्टन चोट

प्रकाशक
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली-110049

Hindi Translation of Jesus Christ The Eternal Sacrifice

Betty Burton Choate

Published by

Church of Christ
Post Box 3815
New Delhi-110049

परिचय

पहली शताब्दी का आरंभ पृथ्वी पर यीशु मसीह के जन्म के साथ हुआ था। यीशु शब्द का अर्थ है ''उद्धार करनेवाला'', और मसीह शब्द का अर्थ है ''अभिषिक्त''। परमेश्वर ने यीशु मसीह को संसार के सब लोगों का उद्धारकर्त्ता तथा मुक्तिदाता ठहराकर स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था। इसीलिये, जैसे कि हम बाइबल में पढ़ते हैं, पृथ्वी पर यीशु मसीह का व्यक्तित्व सभी अन्य लोगों से निराला और विचित्र था। उसके जन्म और जीवन में, कामों और शिक्षाओं में एक विचित्र निरालापन था। और इसका कारण विशेष रूप से यही था, कि यीशु मसीह इस जगत में तो आया था पर वह इस संसार का नहीं था। वास्तव में वह एक स्त्री से जन्मा परमेश्वर का पुत्र था। वह स्वर्ग को छोड़कर, पृथ्वी पर मनुष्यों को पाप-मुक्त करके उन्हें स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाने के लिये आया था।

प्रस्तुत पुस्तक में इसलिये आप एक ऐसे महान् और अद्‌भुत व्यक्ति के विषय में पढ़ने जा रहे हैं जो मनुष्य होकर भी वास्तव में मनुष्य नहीं था। एक ऐसा व्यक्ति जिसने सारी मानवता को पाप से मुक्ति तथा उद्धार देने के लिये एक ऐसा अद्‌भुत काम किया था जो पृथ्वी पर कोई भी अन्य मनुष्य नहीं कर सकता था।

यीशु मसीह आदि से, स्वर्ग में, परमेश्वरत्व में, परमेश्वर के साथ, परमेश्वर था। परन्तु मनुष्यों का पाप से उद्धार करने के लिये वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। परमेश्वर के होनहार के अद्‌भुत ज्ञान ने, मनुष्यों के हाथों से ही उसे एक क्रूस पर मृत्यु दण्ड दिलवाकर सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित ठहराया था।

परन्तु क्या वास्तव में, यीशु मसीह का बलिदान केवल इतना ही था कि उसने सारे जगत के सब पापों को अपने ऊपर लेकर, सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित बनकर अपने आप को एक क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया था? क्रूस पर अपनी मृत्यु और मृतकों में से जी उठने के बाद, जब वह

स्वर्ग में वापस चला गया था तो क्या उसने फिर से परमेश्वरत्व में उसी स्थान को अपने लिये प्राप्त कर लिया था जिसमें वह, स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आने से पहले, आदि से परमेश्वरत्व में विद्यमान था?

इस पुस्तक में आप यीशु मसीह के ''अनन्त बलिदान'' के विषय में पढ़ेंगे, अर्थात् एक ऐसा बलिदान जो केवल क्रूस के ऊपर उसकी शारीरिक मृत्यु तक ही सीमित नहीं था, परन्तु वास्तव में एक ऐसा विशाल बलिदान था जिसका कभी अंत नहीं होगा! इन ही शब्दों के साथ अब मैं आपको प्रस्तुत पुस्तक को पढ़ने के लिये आमंत्रित करता हूं।

सनी डेविड
नई दिल्ली
मई, 2011

प्रस्तावना

यीशु मसीह एक ऐसा विशाल व्यक्तित्व है जिसके बारे में अनेकों लेखकों और प्रचारकों ने समय-समय पर बहुत कुछ लिखा है और बहुत कुछ कहा है। वर्षों से यीशु के बारे में बहुत कुछ पढ़ने और सुनने के बाद, मेरे मन में एक विचार आता रहा है, कि क्यों न यीशु के बारे में कुछ ऐसा लिखा जाए जिससे कि उद्धारकर्त्ता यीशु का एक 'बड़ा चित्र' प्रस्तुत किया जाए। मेरे मन में उत्पन्न हुए उसी विचार के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक को एक ऐसा रूप दिया गया है, जिससे पाठक को यीशु मसीह के बारे में सही और उचित जानकारी प्राप्त हो सके।

जहां तक ईश्वरत्व का प्रश्न है, वह ऐसा महान है कि मनुष्य की कल्पना में वह कैद नहीं हो सकता। हम उसे एक सीमा तक ही समझ सकते हैं, और बड़े से बड़े विद्वान भी उसे वास्तव में समझने में असहमत तथा असमर्थ रहे हैं।

फिर भी, मैं ने यह प्रयत्न किया है कि इस विषय पर मिलनेवाली सारी जानकारी बाइबल में से प्राप्त करके इस पुस्तक में ले आऊं। परन्तु मैंने आरंभ से ही यह निश्चय कर लिया था, कि इन सब बातों को एक पुस्तक का रूप केवल तभी दिया जाएगा, जब मुझे यह निश्चय हो जाएगा कि सारी बातें जो हमें यीशु मसीह के बारे में बाइबल में मिलती हैं उसका एक सही और बड़ा चित्र पाठक के सामने प्रस्तुत करेंगी।

परन्तु मुझे यह भी आभास है, कि प्रत्येक पाठक का एक अपना निजि दृष्टिकोण भी हो सकता है। तौभी, चाहे आप पूरी तरह से इस पुस्तक में लिखी किसी बात पर सहमत हों या असहमत हों, मेरी यही प्रार्थना आप सब के लिये रहेगी कि आप खुले मन से बिना किसी पूर्वद्वेष के इन सब बातों पर, विशेषकर उन बातों पर जिन्हें आप इस विषय पर कदाचित् पहली बार देखने जा रहे हैं, पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे। इस पुस्तक में मिलनेवाली जानकारी मेरे पन्द्रह वर्षों के उस बाइबल अध्ययन का नतीजा

है जिसमें मैंने कड़ा परीश्रम किया था। और मैंने यह प्रयत्न किया है कि, केवल उसी दृष्टिकोण को पाठक के सामने रखूं जिसे परमेश्वर के वचन की पुस्तक में दर्शाया गया है।

इस बात का भी प्रयत्न किया गया है, कि बाइबल के हवालों को वैसे ही इस पुस्तक में वर्णित किया जाए, जैसे कि उन्हें हम बाइबल में पढ़ते हैं। ताकि वे पाठक भी पूरा लाभ उठा सकें जिनके पास परमेश्वर के वचन की पुस्तक नहीं है। मैने इस विषय पर अनेकों विद्वानों के विचारों को भी पढ़ा है, किन्तु मेरा ऐसा मानना है कि स्वयं बाइबल से ही पढ़कर सही जानकारी प्राप्त करना सबसे अच्छा उपाय है। इसलिये इस विषय में प्रत्येक बात को ठीक से समझने के लिये बार-बार बाइबल के हवालों पर पाठक का ध्यान दिलाया गया है।

मेरा सुझाव है, कि यदि इस पुस्तक को बाइबल स्टडी के लिये इस्तेमाल में लाया जाए तो ऐसा करना लाभकारी ठहरेगा। लेकिन अच्छा यह होगा, यदि इसे दो बार पढ़कर देखा जाए।

2 कुरिन्थियों 3:18 से हमें यह आश्वासन मिलता है: ''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रुप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।'' यदि हम उसके समान बनना चाहते हैं, तो अवश्य है कि हम पहले उसके सच्चे व्यक्तित्व से परिचित हो जाएं।

इस विषय पर जितना अधिक मैंने अध्ययन किया है, उतना ही अधिक मैंने अपने आपको परमेश्वर के निकट अनुभव किया है, और फलस्वरूप मेरा प्रेम प्रभु के प्रति और भी अधिक बलवन्त हुआ है। और यह एक ऐसा विषय है जो मेरे जीवन में ''एक बहुमूल्य मोती'' के समान है। परमेश्वर की आशीष उन सब लोगों पर हो जो मेरे साथ मिलकर, इस अध्ययन के द्वारा उसे और भी अधिक अच्छी तरह से जानने में प्रयत्नशील हैं जो वास्तव में प्रेम है।

बेटी बर्टन चोट

विषय-सूची

	परिचय	v
	प्रस्तावना	vii
1.	यीशु मसीह	1
2.	इस जगत में आने से पहले वह परमेश्वरत्व में उसके साथ विद्यमान था	4
3.	शून्य कर दिया	18
4.	मनुष्य का भाई	31
5.	उसे पिता ने भेजा था	45
6.	सम्पूर्ण समर्पण	53
7.	मृत्यु	60
8.	क्या शारीरिक मृत्यु ही पर्याप्त थी?	79
9.	मृत्यु के बाद	86
10.	हमारी प्रतिक्रिया	94
11.	यादगार	105
12.	प्रभु राज्य कर रहा है	126
13.	अनादि पुत्र	138
	निष्कर्ष	145

यीशु मसीह

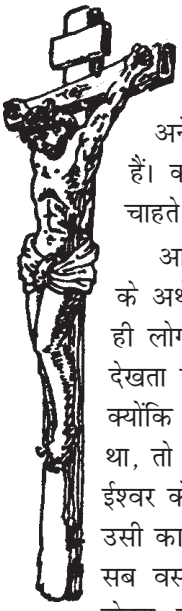

पृथ्वी पर लगभग सभी मनुष्य किसी न किसी रूप में परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। सभी किसी न किसी धर्म को मानते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो परमेश्वर को अनेकों रूप में मानते हैं, और उन सब की आराधना करते हैं। क्योंकि वे उनमें से किसी को भी अप्रसन्न नहीं करना चाहते।

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रेरित पौलूस जब यूनान के अथेने नाम के नगर में गया था तो वहां उसने अनेकों ऐसे ही लोगों को देखकर उनसे कहा था, ''हे अथेने के लोगो, मैं देखता हूं कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए जब तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई जिस पर लिखा था, 'अनजाने ईश्वर के लिये' इसलिये जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर, हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता, न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है। क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं, और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिये बांधा है कि वे परमेश्वर को ढूढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं, जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं।' सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और

कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों 17:22-31)।

अक्सर सभी लोग धार्मिक स्वभाव के तो होते हैं, पर धार्मिक बातों को गम्भीरतापूर्वक न लेकर लोग अपने-अपने कामों में अधिकांश रूप में व्यस्त रहते हैं। लोग अपने अच्छे कामों पर अधिक भरोसा करते हैं। क्योंकि अक्सर सभी ऐसा सोचते हैं कि यदि वे एक अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे तो परमेश्वर इससे प्रसन्न होगा, और परमेश्वर उन्हें, उनकी मृत्यु पश्चात्, अपने स्वर्ग में स्वीकार करेगा।

यह तो सही है कि सभी धर्म यह सिखाते हैं कि अच्छे काम करने चाहिए, और अच्छा और भला जीवन व्यतीत करना चाहिए। परन्तु प्रश्न यह है, कि क्या मनुष्य अपने अच्छे कामों के आधार पर ही परमेश्वर को प्रसन्न करके उसके स्वर्ग में प्रवेश कर लेगा?

नाना प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाज़ों को मानकर लोग स्वयं अपने पापों से उद्धार पाने की कोशिश में लगे रहते हैं। कुछ दान-बलिदान चढ़ाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो स्वयं अपने आपको दु:ख देकर अपने पापों का स्वयं ही प्रायश्चित करना चाहते हैं। और कुछ ऐसे भी हैं, जो सोचते हैं कि वे पृथ्वी पर बार-बार किसी न किसी रूप में जन्म लेकर किसी न किसी जन्म में स्वयं अपने पापों का दन्ड उठाकर अपने आप को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना लेंगे। पर इन सब बातों का निचोड़ एक ही है। अर्थात् यह, कि, प्रत्येक मनुष्य को अपने पापों का दण्ड स्वयं ही उठाना है, और प्रत्येक को स्वयं अपने आप ही अपने पापों का प्रायश्चित करना है।

किन्तु, परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में हमें एक अलग ही संदेश मिलता है। बाइबल के अनुसार, कोई भी मनुष्य स्वयं ही कुछ करके या कुछ देकर स्वयं अपने आपको अपने पापों से मुक्ति नहीं दिला सकता।

मनुष्य को एक उद्धारकर्त्ता, एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है। और वह मुक्तिदाता है- यीशु मसीह।

परन्तु कोई यह कह सकता है, कि यीशु मसीह ही क्यों? संसार में अन्य और भी बहुत से महान् व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने मानवता के लिये बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण काम किये हैं। उन्होंने अच्छी-अच्छी शिक्षाएं दी हैं, धर्मों की स्थापना की है। लोग उनकी पूजा और आराधना करते हैं, उन्हें ईश्वर और भगवान और पवित्र मानते हैं। क्या वे सब भी मनुष्यों के मुक्तिदाता नहीं हो सकते?

पर क्या यह वास्तव में सच है? क्या यीशु मसीह और अन्य सभी धर्मों के संस्थापकों में कोई अन्तर नहीं है? और यदि है, तो फिर वह क्या है? यीशु मसीह में ऐसी कौन सी विशेषता है जो उसे सभी अन्य लोगों से अलग करती है? उसने मानवता के लिये ऐसा कौन सा बड़ा और विशेष काम किया है, जो उसे अन्य सभी 'महा-पुरुषों' से अलग बनाता है?

इसी बात को ध्यान में रखकर यीशु के इन शब्दों पर ध्यान दें।

''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)।

इन शब्दों से हमें यह सीखने को मिलता है कि परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र उचित साधन केवल प्रभु यीशु मसीह ही है। परन्तु यीशु ने ऐसा क्यों कहा था? और यदि यह बात वास्तव में सच है, तो केवल वही सारे जगत का एकमात्र प्रभु और उद्धारकर्त्ता और मुक्तिदाता है। इसी एक बात को अच्छी तरह से समझने और जानने के उद्देश्य को लेकर प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है।

इस जगत में आने से पहले वह परमेश्वरत्व में उसके साथ विद्यमान था

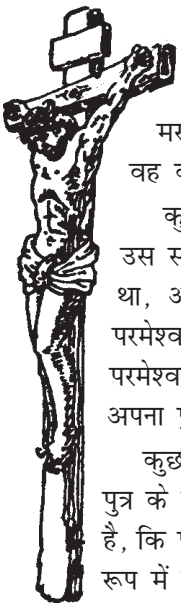

यीशु मसीह के व्यक्तित्व और अधिकार के विषय में सही जानकारी प्राप्त करने के लिये हमें यह समझना उसके बारे में बड़ा ही आवश्यक है, कि वास्तव में यीशु मसीह कौन है? पृथ्वी पर आने से पहले वह कहां था? और वह कब से है?

कुछ लोगों का विचार है, कि यीशु के जीवन का आरंभ उस समय हुआ था जब वह इस पृथ्वी पर जन्म लेकर आया था, और उसने एक अच्छा जीवन निर्वाह किया था, वह परमेश्वर की सभी आज्ञाओं को मानता था, और इसलिये परमेश्वर ने उसे सभी अन्य मनुष्यों में सबसे महान् मानकर उसे अपना पुत्र होने का अधिकार दिया था।

कुछ अन्य लोग ऐसा मानते हैं, कि यीशु आरंभ से ही एक पुत्र के रूप में परमेश्वर के साथ विद्यमान था। उनका ऐसा मत है, कि परमेश्वर का वही पुत्र जो सदा से ही उसके साथ पुत्र के रूप में वर्तमान था, मनुष्य का रूप धारण करके पृथ्वी पर आ गया था।

संसार में अनेकों ऐसे लोग भी हैं जो ऐसा मानते हैं कि समय-समय पर परमेश्वर किसी न किसी रूप में पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में प्रकट हुआ है, अर्थात् वह एक मनुष्य बनकर किसी भविष्यवक्ता के रूप में या कोई अवतार लेकर जगत में समय-समय पर आया है। और यीशु को भी वे इसी तरह से देखते हैं, अर्थात् वे मानते हैं कि वह भी अनेकों अन्य अवतारों में से एक था जिसे परमेश्वर ने लोगों का मार्ग-दर्शन करने के लिए संसार में भेजा था।

इस विषय पर लोगों के अलग-अलग विचार और मत हो सकते हैं। क्योंकि लोगों की धारणाएं अन्य लोगों के मतों और विचारों पर ही आधारित होती हैं। परन्तु यदि हम वास्तव में केवल सच्चाई ही जानना चाहते हैं यीशु मसीह के बारे में, तो ज़रूरी है कि हम उस एक-मात्र स्रोत के पास जाएं, जिसके द्वारा ही हमें यीशु के बारे में सही जानकारी मिल सकती है- और वह एकमात्र सही और उचित स्रोत है: बाइबल। सो, बाइबल के अनुसार, यीशु कौन है? वह पृथ्वी पर कहां से आया था?

यूहन्ना 1:1-3 में बाइबल में हमारा ध्यान जगत की उत्पत्ति पर दिलाया गया है, अर्थात् यह बताया गया है, कि जगत की सृष्टि के समय परमेश्वरत्व किस रूप में आदि से वर्तमान था, लिखा है:

''आदि में (जैसा कि उत्पत्ति 1:1 में हम पढ़ते हैं, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की थी)। वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।''

इब्रानियों 1:2 में उसी वचन का वर्णन करके इस प्रकार कहा गया है:

''उसी के द्वारा उसने (परमेश्वर ने) सारी सृष्टि की रचना की है।''

और कुलुस्सियों 1:15-17 में उसी वचन के विषय में यूं लिखा है:

''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।''

बाइबल में लिखे ये शब्द हमारा ध्यान विशेष रुप से परमेश्वरत्व में उपस्थित उस एक व्यक्तित्व पर दिलाते हैं जिसे 'वचन' कहकर सम्बोधित किया गया है। और यहां हम ऐसा बिल्कुल नहीं पाते कि उसे एक पुत्र के रूप में दर्शाया गया है। परन्तु इसके विपरीत, उसे परमेश्वरत्व में एक समान परमेश्वर के तुल्य दर्शाया गया है।

वचन

वचन परमेश्वर था। वचन परमेश्वर के साथ था, और वह, परमेश्वर, परमेश्वर के साथ था। उसमें (वचन में) जीवन था- जीवन उसे किसी अन्य स्रोत सें नहीं प्राप्त हुआ था, परन्तु स्वयं उसी में था। अर्थात् वह स्वयं ही परमेश्वर था और जीवन का स्रोत था।

उसी वचन को यहां इस प्रकार दर्शाया गया है, जिसके द्वारा और जिसके लिये जगत की सारी वस्तुओं की रचना की गई थी।

उसी का वर्णन करके कहा गया है कि, ''वह अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है'' और ''वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है।'' (इब्रानियों 1:3)।

सामान्य रूप से जो लोग पुराने नियम को और नए नियम को पढ़ते हैं उनको कदाचित यही प्रतीत होता है, कि पुराने नियम में विशेष रूप से परमेश्वर पर ध्यान दिलाया गया है और नया नियम विशेष रूप से हमें परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में ही बताता है। परन्तु इस विषय पर गम्भीरता के साथ अध्ययन करने के बाद हमें वास्तव में कुछ और ही मिलता है।

एल और एलोहिम

बाइबल का पुराना नियम सर्वप्रथम इब्रानी भाषा में लिखा गया था, और इब्रानी भाषा में 'परमेश्वर' शब्द का उच्चारण अधिकांश रूप में बहु-वचन में हुआ है। जबकि परमेश्वर के लिये इब्रानी भाषा के शब्द 'एल' को, जो कि एक-वचन है, पुराने नियम में लगभग 500 बार उपयोग में लाया गया है। दूसरी ओर 'एलोहिम' शब्द, जो कि बहु-वचन है, और जिसका तात्पर्य 'परमेश्वरत्व' से है, लगभग 3000 बार इस्तेमाल हुआ है। इसका अर्थ यह है, कि जब हम बाइबल में 'परमेश्वर' के बारे में पढ़ते हैं, किसी भी अन्य भाषा में, तो जबकि हम परमेश्वर को एक ही वचन में देखते हैं, दूसरी ओर, बाइबल में हम 'परमेश्वरत्व' के बारे में, जो कि वास्तव में बहु-वचन है, पढ़ रहे हैं, अर्थात् पिता परमेश्वर और वचन और पवित्र आत्मा।

निम्नलिखित उदाहरणों को देखें:

''आदि में परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) ने आकाश और पृथ्वी की रचना की'' (उत्पत्ति 1:1)।

''फिर परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) ने कहा, हम (बहु-वचन) मनुष्य को अपने (बहु-वचन) स्वरूप के अनुसार अपनी (बहु-वचन) समानता में बनाएं'' (उत्पत्ति 1:26)।

''फिर यहोवा परमेश्वर (बहु-वचन) ने कहा, 'मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से (बहु-वचन) एक के समान हो गया है।'' (उत्पत्ति 3:22)।

''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) है, यहोवा एक ही है।'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)। (अर्थात, परमेश्वरतत्व में एक से अधिक व्यक्तित्व होते हुए भी वास्तव में परमेश्वर केवल एक ही है।)

''यहोवा, जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है, ''मैं सब से पहला हूं, और मैं ही सदा रहूंगा, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) है ही नहीं।'' (यशायाह 44:6)।

''क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर (एलोहिम, बहु-वचन) हूं, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्त्ता हूं।'' (यशायाह 43:3)।

सो बाइबल में से पढ़कर हमें यह सीखने को मिलता है कि पुराने नियम में जहां कहीं भी परमेश्वर के बारे में हम पढ़ते हैं, तो अधिकांश रूप से वहां परमेश्वरत्व का वर्णन हुआ है। किन्तु, इस पुस्तक में विशेष रूप से हम परमेश्वरत्व में के उस व्यक्तित्व पर ध्यान दे रहे हैं, जिसे 'वचन' कहकर सम्बोधित किया गया है। उसी वचन के बारे में यूहन्ना 1:1 से पढ़कर हमने देखा था कि लिखा है, कि वह परमेश्वर था और वही परमेश्वर के साथ था। हमने परमेश्वरत्व के बारे में भी बाइबल से देखा है, जिसका अर्थ है, एक ही परमेश्वरत्व में एक से अधिक व्यक्तियों का

विद्यमान होना, अर्थात् पिता, और पवित्रात्मा एक परमेश्वर है। 'वचन' का ईश्वरत्व में विद्यमान होने का तात्पर्य यह है कि वह स्वयं भी उसी तरह से परमेश्वर है, जिस प्रकार से पिता और पवित्र-परमेश्वर हैं; उसमें जीवन है, वह सर्व शक्तिमान है, वह सर्व-वर्तमान है, और सर्व-ज्ञानी तथा सर्व-सिद्ध है। अर्थात् परमेश्वरत्व में प्रत्येक व्यक्तित्व स्वयं अपने आप में ही सम्पूर्ण है, और एक समान है।

फिर हम वचन के बारे में यूं पढ़ते हैं कि वही वचन जो परमेश्वर के साथ था और परमेश्वर था, वही वचन एक मनुष्य के रुप में पृथ्वी पर आया था। लिखा है यूहन्ना 1:14 में: ''और वचन देहधारी हुआ।''

इस प्रकार अब हमारा परिचय यीशु मसीह से होता है। परन्तु उस 'पिता के एकलौते' (यहून्ना 1:14) पर और अधिक देखने से पहले, हमें इन शब्दों पर भी ध्यान देना ज़रूरी है, ''आदि में'' और ''वचन देहधारी हुआ।'' परन्तु इससे पहले वह स्वर्ग में था। सो पुराने नियम के समय में उसका कार्य क्या था?

पुराने नियम में उसकी भूमिका

क्या वचन (जो समय पूरा होने पर 'देहधारी' होकर जगत में आया था- यीशु मसीह) मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आने से पहले, जगत में जो कुछ भी हो रहा था उसके प्रति कार्यरत था? या क्या वह एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह अपने पिता के सीधे हाथ पर बैठकर इस बात की बाट जोह रहा था कि कब उसे पृथ्वी पर भेजा जाएगा?

इस प्रश्न का सही उत्तर हमें बाइबल में से ही पढ़कर इस प्रकार मिलता है:

''यहोवा जो इस्राएल का राजा है, अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है मैं सबसे पहला हूं, और मैं ही सदा रहूंगा, मुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (यशायाह 44:6)।

प्रकाशितवाक्य 1:8 में यीशु मसीह ने कहा था, ''प्रभु परमेश्वर, जो है और जो था, और जो आनेवाला है, जो सर्व शक्तिमान है यह कहता है, 'मैं ही अलफ़ा और ओमेगा हूं।'''

इन दोनों ही स्थानों से पढ़कर हम यह देखते हैं, कि जो यीशु मसीह नए नियम में लोगों से बोल रहा है, वही वह प्रभु है जो पुराने नियम में लोगों से बोल रहा था।

''....यहोवा ने अपने दास को छुड़ा लिया है। जब वह उन्हें निर्जल देशों में ले गया, तब वे प्यासे न हुए, उसने उनके लिये चट्टान में से पानी निकाला, उसने चट्टान को चीरा और जल बह निकला।'' (यशायाह 48:20, 21)

''...हमारे सब बाप-दादे बादल के नीचे थे.....और सबने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।'' (1 कुरिन्थियों 10:1-4)

ये दोनों ही हवाले उसी एक प्रभु की ओर संकेत करते हैं जो इस्राएलियों को मिस्र देश की बंधुआई में से छुड़ाकर लाया था, और वह प्रभु मसीह था।

परमेश्वर का दूत

यदि हम पुराने नियम के निर्गमन 3 अध्याय को नए नियम के 1 कुरिन्थियों 10:1-4 तथा यूहन्ना 8:51-59 को एक साथ मिलाकर पढ़ें तो हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि पुराने नियम के समय में वचन का क्या स्थान था। निर्गमन 3:2 में हम एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं, जिसे ''परमेश्वर का दूत'' कहकर सम्बोधित किया गया है, जिसने मूसा को एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में दर्शन दिया था। यद्यपि स्वर्ग-दूत तो अनेक हैं, परन्तु परमेश्वर का वह दूत उन किसी में से एक नहीं था, क्योंकि चौथी आयत में वहां उसे ''परमेश्वर'' कहकर सम्बोधित किया गया है। वहां छठी आयत में प्रभु ने कहा था, ''मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं।''

और वहां आठवीं आयत में परमेश्वर ने कहा था, ''इसलिये अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें (इस्राएलियों को) मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं, और

उस देश से निकालकर एक अच्छे-स्थान में पहुंचाऊं।''

हमने 1कुरिन्थियों 10:1-4 में से भी पढ़कर देखा था कि परमेश्वर में के जिस व्यक्तित्व ने वास्तव में इस्राएलियों को मुक्त करवाया था वह 'वचन' था, वही जिसने बाद में एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर यीशु मसीह बनकर जन्म लिया था।

निर्गमन 3:13, 14 में हम पढ़ते हैं कि मूसा ने परमेश्वर के दूत से पूछा था, ''....जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहूं, तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझसे पूछें, 'उसका नाम क्या है?' तब मैं उनको क्या बताऊंगा? परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''मैं जो हूं सो हूं।'' फिर उसने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूं, है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।''

यूहन्ना 8 अध्याय में प्रभु यीशु और यहूदियों के बीच वार्तालाप हो रहा था, तब अंत में यीशु ने उन से यूं कहा था :

> ''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं।''

ये ऐसे शब्द हैं जिनका इस्तेमाल केवल परमेश्वर के लिये ही हो सकता था, परन्तु यीशु ने इन्हीं शब्दों को अपने ऊपर उपयोग में लाकर यह दर्शाया था कि वही आदि से वर्तमान है। उसने अपना परिचय उसी तरह से 'मैं हूं' कहकर दिया था जिस प्रकार से परमेश्वर ने मूसा को अपना परिचय दिया था। और उसके सुननेवाले समझ गए थे कि उसके कहने का क्या तात्पर्य है। इसीलिये उन्होंने यह समझकर कि वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है उसे मारने के लिये पत्थर उठा लिये थे।

सो 'परमेश्वर का दूत' जिसने मूसा को उस जलती झाड़ी के बीच दर्शन दिया था, वास्तव में और कोई नहीं था किन्तु स्वयं वही प्रभु था जो यीशु के रूप में बाद में पृथ्वी पर आया था प्रभु का वही दूत पुराने नियम में अन्य स्थानों पर भी प्रकट हुआ था, जैसे कि हम निर्गमन 32:34; निर्गमन 14:19, न्यायियों 13:6; 2 शमूएल 14:17, 20; न्यायियों 2:1; यशायाह

63:9 में भी पढ़ते हैं।

निर्गमन 32:34 से लेकर 33 अध्याय तक हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने कहा था कि, ''मेरा दूत'' इस्राएलियों के आगे-आगे चलेगा। सो जब कि निर्गमन 32 और यूहन्ना 8 से हम देखते हैं कि वह 'दूत' परमेश्वरत्व में का एक व्यक्तित्व अर्थात यीशु मसीह था, और जैसे कि 1कुरिन्थियों 10:1-4 में उसी के विषय में लिखा है कि वही मसीह अर्थात् चट्टान था, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वह भेजनेवाला प्रभु जिसका वर्णन हमें निर्गमन 32 में मिलता है स्वयं पिता परमेश्वर था, और उसका दूत जिसे उसने भेजा था, उसका वही वचन था, जो बाद में यीशु मसीह बनकर प्रकट हुआ था।

न्यायियों 2:1 में प्रभु के उस दूत को यह कहकर वर्णित किया गया है, ''मैंने तुम को मिस्र से ले आकर इस देश में पहुंचाया है।''

न्यायियों 13 अध्याय में हम मानोह के बारे में पढ़ते हैं, कि वह परमेश्वर से प्रार्थना करके कहता है, कि वह अपने दूत को उसकी पत्नी और उसके पास भेजे। 9वीं आयत में लिखा है:

> ''तब परमेश्वर का वही दूत उसके पास आया'' यहां भी हम देखते हैं कि परमेश्वर भेजनेवाला था और जिसे भेजा गया था, वह परमेश्वर का दूत था।

यशायाह 63:7-10 में हम प्रभु के बारे में और उसके सम्मुख रहनेवाले दूत के बारे में, जिसने इस्राएल का उद्धार किया था, और उसके पवित्र आत्मा, अर्थात् परमेश्वरत्व में के तीनों व्यक्तित्वों के बारे में एक साथ पढ़ते हैं।

पुराने नियम की भविष्यवाणियों का मसीह में पूरा होना

बाइबल के पुराने नियम में जिस प्रकार से परमेश्वर के बारे में अनेकों बातों का और भविष्यवाणियों का वर्णन हुआ है। ठीक वैसा ही हम नए नियम में यीशु मसीह के बारे में भी पढ़ते हैं।

पुराना नियम	नया नियम
यशायाह 40:3 : ''किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो। हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो।''	**मत्ती 3:3 :** ''यह वही है, जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा की गई, 'जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो। उसकी सड़कें सीधी करो'' बाद में यूहन्ना 1:29 में यूहन्ना ने स्वयं अपना परिचय यह कहकर देने के बाद कि वह यीशु मसीह के लिये ही मार्ग तैयार करने को भेजा गया है, यीशु को देखकर कहा था, ''देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।''
भजन संहिता 24:9,10: ''...क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।''	**1 कुरिन्थियों 2:8:** में लिखा है कि, ''जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।'' याकूब 2:1 के अनुसार, ''हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह....''
यिर्मयाह 23:5, 6 : ''यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से	**1 कुरिन्थियों 1:30:** ''परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।''

प्रभुता करेगा...और यहोवा उसका नाम, ''यहोवा हमारी धार्मिकता'' रखेगा।''

यशायाह 8:13, 14 : ''सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना.... और वह शरण स्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान....''

भजन संहिता 110:1: यह भविष्यवाणी दाऊद ने की थी, ''मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, ''तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं।'' ''

मलाकी 3:1 : ''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा, हां, वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो,

1 पतरस 2:7, 8: ''तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह (यीशु मसीह) तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये जिस पत्थर को राज-मिस्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया।''

प्रेरितों 2:34-36 : में यूं कहा गया था, ''क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, परन्तु वह आप कहता है, 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं।' सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।''

लूका 1:76: में, भविष्यवक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में यूं लिखा है, ''और तू हे बालक, परम प्रधान का भविष्यवक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे-आगे चलेगा।''

वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।''

यूहन्ना 1:30 : यूहन्ना ने स्वयं यीशु मसीह के बारे में यूं कहा था: ''यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।'''

योएल 2:32: ''उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा।''

1 कुरिन्थियों 1:2: ''....जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सबके नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।''

भजन संहिता 45:1, 6, 7 : में लेखक इस प्रकार कहता है, ''.... जो बात मैंने राजा के विषय में रची है उसको सुनाता हूं....हे परमेश्वर तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा; तेरा राज दण्ड न्याय का है। तूने धर्म से प्रीति की और दुष्टता से बैर रखा। इस कारण परमेश्वर ने, हां, तेरे परमेश्वर ने तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषिक्त किया है।''

इब्रानियों 1:8, 9: में लिखा है, कि परमेश्वर अपने पुत्र, यीशु मसीह, के लिये कहता है, ''हे परमेश्वर तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का राज दण्ड न्याय का राजदण्ड है। तूने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तेरा अभिषेक किया।''

भजन संहिता 102:25-27 : यहां परमेश्वर के विषय में यूं लिखा है, ''आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया

इब्रानियों 1:10 के अनुसार, यह बात वास्तव में परमेश्वर ने यीशु मसीह के बारे में कही थी, ''हे प्रभु आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली

हुआ है। वह तो नष्ट होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह बदल जाएगा, परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का।''

और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। वे तो नष्ट हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे; और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएंगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।''

पुराने नियम के समय में, परमेश्वर ने कुछ विशेष लोगों को प्रेरणा देकर भविष्य में घटनेवाली अनेकों बातों को उनके द्वारा बाइबल की पुस्तकों में लिखाया था। उन में से कुछ भविष्यवक्ताओं ने यीशु मसीह के जन्म, जीवन और कामों के बारे में अनेकों बातों को पहले ही से लिखा था। परन्तु वे स्वयं उन बातों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। केवल परमेश्वर ही जानता था। जैसा कि यशायाह 52:4 में लिखा है, ''प्रभु यहोवा यों भी कहता है।''

परमेश्वर की प्रेरणा से पहले ही से भविष्य में होनेवाली घटनाओं के बारे में लिखे जाने का वर्णन करके 1 पतरस 1:10, 11 में लेखक कहता है, ''इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यवक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था और पहले ही से मसीह के दु:खों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।''

पुराने नियम से और नए नियम से इन सब बातों को पढ़कर हम किस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं?

सारांश

(1) इन सब बातों से हम यह सीखते हैं कि पुराने नियम में वचन को यहोवा परमेश्वर और प्रभु कहकर प्रस्तुत किया गया है, अर्थात उस प्रभु में (जो वचन था और भविष्य में यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी पर आनेवाला था) और वह प्रभु जिसे पिता कहकर सम्बोधित किया गया है, दोनों के प्रभुत्व और अधिकार में कोई भी अन्तर नहीं दिखाया गया है।

(2) जिन भविष्यवाणियों को प्रभु के बारे में किया गया था (और बाद में वे सब ''वचन'' अर्थात प्रभु यीशु मसीह में पूरी हुई थीं) उनमें उसे यहोवा, महिमा का प्रभु, तथा पिता कहकर सम्बोधित किया गया है।

(3) यहां यह भी दर्शाया गया है, कि किस प्रकार से परमेश्वरत्व में का एक व्यक्तित्व यीशु मसीह के रूप में, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में पृथ्वी पर आनेवाला था। इसी कारण से वही मनुष्यों पर अकसर प्रकट होकर उनकी अगुवाई करता था। मूसा से जिस ने कहा था, ''मैं हूं'' नए नियम में इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल यीशु मसीह के लिये हुआ है। और यीशु मसीह ही उस समय इस्राएलियों की अगुवाई कर रहा था जब वे प्रतिज्ञा किए देश के लिये जा रहे थे तथा उस समय भविष्यवक्ता उसी के आत्मा की प्रेरणा से बोलते थे। (1 पतरस 1:10, 11)। कई बार हमारे लिये यह अनुमान लगाना कठिन हो जाता है कि परमेश्वरत्व में का कौन सा व्यक्ति किसी स्थान पर बोल रहा है या किसी कार्य को कर रहा है, पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि वचन जो आदि से परमेश्वर के साथ था वह मनुष्यों के उद्धार को सम्भव बनाने में परमेश्वरत्व में आरम्भ से ही कार्यशील था। क्योंकि वास्तव में परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार वही वह मेम्ना था:

> ''जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है'' (प्रकाशितवाक्य 13:8)।

(4) पुराने नियम में हमें इस बात की एक झलक दिखाई देती है, कि वह प्रभु जो इस जगत में आनेवाला था, उसे न केवल एक मध्यस्थ के रूप

में ही दर्शाया गया है, परन्तु इस प्रकार भी प्रस्तुत किया गया है जैसे कि वह अधीन हो। ''इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने तुझको..... अभिषिक्त किया है।'' (भजन संहिता 45:7)।

(5) फिर, हम यह भी देखते हैं कि, परमेश्वर के दूत को भेजा गया था। किन्तु, फिर भी, उसी को प्रभु और परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया था, और उसने उसी अधिकार से बातें भी की थीं जो केवल परमेश्वर का ही हो सकता है। जैसे कि, परमेश्वर के दूत के विषय में निर्गमन 3:4-6 में इस प्रकार लिखा है:

> ''जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, ''हे मूसा, हे मूसा!'' . ...मैं तेरे पिता का परमेश्वर और अब्राहम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं।''

परन्तु बाद में, नए नियम में, जब यीशु ने बोला था, तो उसने कहा था,

> ''मैं अपने पिता के नाम से आया हूं'' (यूहन्ना 5:43)।

उसने अपने आप को ऐसे प्रस्तुत किया था जैसे कि वह परमेश्वर के अधीन है, और उसे परमेश्वर ने भेजा है।

सो इस प्रकार हम यह देखते हैं, कि सम्पूर्ण परमेश्वरत्व आदि से ही मानवता की भलाई करने में एक जुट है। वचन जो आदि में परमेश्वर के साथ था, और परमेश्वर था, पृथ्वी पर आने से पहले, स्वर्ग में परमेश्वर के साथ पुत्र के समान विद्यमान नहीं था, परन्तु वह परमेश्वरत्व में परमेश्वर के समान था तथा स्वयं परमेश्वर था।

तो फिर, जिसे पुराने नियम में परमेश्वर के समान तथा परमेश्वर के तुल्य दर्शाया गया है, नए नियम में उसी को ऐसे क्यों दर्शाया गया है कि वह परमेश्वर के अधीन है? इस बदलाव का क्या कारण है?

शून्य कर दिया

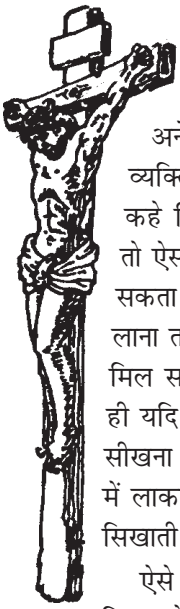

जब परमेश्वरत्व की बात आती है, तो पुस्तकों और लेखों में उसका वर्णन इस प्रकार नहीं किया जाता कि उससे यह समझ में आए कि परमेश्वर एक होते हुए भी अनेक है, अर्थात् परमेश्वरत्व में एक से अधिक आत्मिक व्यक्तित्व हैं। जैसे कि उद्धार पाने के सम्बंध में यदि कोई यह कहे कि मनुष्य का उद्धार केवल विश्वास से ही हो सकता है तो ऐसा मानना अनुचित होगा, विपरीत इसके कि कोई यह मान सकता है कि बाइबल ऐसा सिखाती है। क्योंकि जबकि विश्वास लाना तो ज़रुरी है, किन्तु केवल विश्वास करने से ही उद्धार नहीं मिल सकता प्रभु की आज्ञाओं को मानना भी आवश्यक है। ऐसे ही यदि हम परमेश्वर के राज्य और उसकी कलीसिया के बारे में सीखना चाहते हैं तो परमेश्वर के लिखे वचन को ठीक से काम में लाकर ही हम जान सकते हैं, कि इस विषय पर बाइबल क्या सिखाती है।

ऐसे ही परमेश्वरत्व को जानने के लिये भी ज़रूरी है। इस विषय में यदि हम इस बात पर विशेष ध्यान न दें कि जब पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र का जन्म हुआ था, तो परमेश्वरत्व के सम्बंध में एक विशेष अंतर उत्पन्न हो गया था, और इसी के साथ परमेश्वर और मनुष्य के सम्बंध में भी एक खास मोड़ आ गया था। तो हम परमेश्वरत्व को ठीक से नहीं समझ सकते। इसलिये इस विषय पर इसी दृष्टिकोण से देखना आवश्यक हो जाता है, कि जो बात बाइबल में हम पढ़ रहे हैं उसे कब लिखा गया था? अर्थात् क्या वहां संयुक्त परमेश्वरत्व की बात हो रही है, वचन के देहधारी होकर पृथ्वी पर आने से पहले की या उसके बाद की? यदि इस खास बात को ध्यान में रखकर बाइबल अध्ययन किया जाए, तो अनेकों बातें जो अक्सर समझने में कठिनाई लाती हैं समझ में आ जाएंगी।

इसी प्रकार, इस बात को भी समझने के लिये कि परमेश्वर और मनुष्य का सम्बंध आरम्भ से किस प्रकार रहा है, परमेश्वर के वचन को ठीक से काम में लाना ज़रूरी है। इस बारे में अक्सर कुछ लोग ऐसा समझ लेते हैं कि परमेश्वर आरंभ में तो लोगों के साथ उनके परिवारों के मुखियों के द्वारा सम्बंध रखता था, पर जब यह उपाय कारगर सिद्ध नहीं हुआ तो परमेश्वर ने लोगों को मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था दे दी थी, जिसके द्वारा वह अपनी चुनी हुई प्रजा इस्राएलियों के साथ सम्बंध रखता था। और जब इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलना छोड़ दिया था, तो परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा था। उसी के द्वारा मसीहीयत ने जगत में प्रवेश किया था और अब, यदि लोग परमेश्वर की इच्छानुसार चलना चाहते हैं तो वे मसीह की व्यवस्था को मानकर ही ऐसा कर सकते हैं।

विशेष बिन्दु

जब कि ऊपर लिखी बातें परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बंधों पर एक प्रकार से प्रकाश तो अवश्य डालती हैं, परन्तु ऐसा समझ लेना कि परमेश्वर ने कुछ करना चाहा और वह उपाय कारगर सिद्ध नहीं हुआ, गलत सुझाव है। परमेश्वर ने ऐसा कदापि नहीं किया, कि उसने एक उपाय किया और जब वह असफल रहा तो उसने उसके स्थान पर दूसरा उपाय किया। इसके विपरीत, परमेश्वर को आरंभ से ही ज्ञात था कि मनुष्य पाप करके उससे अलग हो जाएगा। उसे यह भी मालूम था कि मनुष्य को उसके पाप से उद्धार पाने के लिये क्या आवश्यक होगा। इसलिये, जो कुछ भी परमेश्वर ने किया या होने दिया, उस सबका केवल एक ही उद्देश्य था:

अर्थात्, मनुष्य का पाप से उद्धार।

प्रकाशितवाक्य 13:8 में लिखा है, मेम्ना ''जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।''

2 तीमुथियुस 1:9 में लिखा है, कि मसीही लोग बुलाए गए हैं,

''...उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।''

परमेश्वर की योजना में, मनुष्य का पाप से उद्धार करना, एक विशेष बिन्दु के समान रहा है: जिसे पूरा करने के लिये वचन का यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी पर जन्म लेकर आना और जगत के पापों का प्रायश्चित करने को उसका बलिदान देना आवश्यक था। इसी एक विशाल तथा आवश्यक काम को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने प्रत्येक अन्य कार्य को किया था या होने दिया था।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर, अब हम उस विषय पर ध्यान देंगे जिस पर हमने पिछले अध्याय में चर्चा की थी, और विशेषकर इस प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित करेंगे कि,

वचन को जिस तरह से पुराने नियम में प्रस्तुत किया गया है, नए नियम में उसी वचन को एक दूसरे रूप में क्यों दर्शाया गया है? जबकि पुराने नियम में उसे परमेश्वर के समान और परमेश्वर के तुल्य दिखाया गया है तो फिर नए नियम में उसे ऐसे क्यों दिखाया गया है कि वह परमेश्वर के अधीन है? इस विशाल बदलाव का क्या कारण है?

फिलिप्पियों 2:5-8

फिलिप्पियों 2:5-8 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।''

इन बातों को ध्यान में रखकर, जब हम यूहन्ना 1:1 को पढ़ते हैं, तो

हम इस प्रकार देखते हैं:

> ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' किन्तु जब 'समय पूरा हुआ' था, अर्थात् जब परमेश्वर की दृष्टि में उचित समय आया था (गलतियों 4:4), तो वचन ने अपने आपको उस सब महिमा और सर्वोच अधिकार से जो उसे स्वर्ग में परमेश्वरत्व में स्वयं प्राप्त था, अर्थात् वह सब कुछ जो उसी का था, उस सबको उसने अपने आप छोड़ दिया था, त्याग दिया था; अर्थात् उसने पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में जन्म लेकर अपने आपको शून्य बना दिया था।

शून्य कर देने का अभिप्राय

अब इस बात पर भी विचार करें कि शून्य कर देने का अभिप्राय क्या है? सबसे पहले तो हमें यह समझना चाहिये कि इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उसने अपना अस्तित्व, अर्थात् जिस आत्मिक अस्तित्व में वह था, उसे खो दिया था, या उसे त्याग दिया था। जिस प्रकार से मनुष्य का आत्मिक अस्तित्व हमेशा के लिये है, उसी प्रकार से परमेश्वरत्व का आत्मिक अस्तित्व भी सदाकाल के लिये है। इसलिये उसका अस्तित्व अभी भी वही था जो स्वर्ग में था। ऐसे ही, इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि उसने अपनी उन विशेषताओं को त्याग दिया था जो उसमें थीं। अर्थात् उसने अपनी पवित्रता को नहीं खोया था, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह अपवित्र बन जाता। वह प्रेम था, इसलिये उसने अपने प्रेम की विशेषता को भी नहीं खोया था, क्योंकि यदि ऐसा होता तो वह प्रेम-रहित बन जाता। ऐसे ही वह सच्चा न्यायी था इसलिये उसने अपनी इस विशेषता को भी नहीं खोया था, क्योंकि ऐसा करके वह अन्यायी बन जाता। दया के बिना वह दयाहीन् बन जाता। और यदि वह अपनी सच्चाई की विशेषता को खो देता तो वह असत्य बन जाता। अर्थात् यहां कहने का अभिप्राय यह है, कि ईश्वरत्व की सिद्धता की इन सभी विशेषताओं में से किसी एक को भी उसने अपने से नहीं त्यागा या खोया था, वे सारी की सारी विशेषताएं उसमें तब भी

विद्यमान थी जब वह, वचन, देहधारी होकर पृथ्वी पर आ गया था। तो फिर उसने उस समय क्या त्यागा था जब उसने अपने आप को शून्य कर दिया था? उसने अपनी विशेषताओं से अपने आप को शून्य नहीं बना लिया था, परन्तु उसने अपने उन स्वयं के अधिकारों को त्याग दिया था जो परमेश्वरत्व में उसके थे। अर्थात् परमेश्वरत्व में एक समानता के स्तर से उसने अपने आपको नीचे कर लिया था। परिणाम स्वरूप उसने अपने आपको परमेश्वर के अधीन करके आज्ञाकारी बना लिया था, जिस प्रकार से मनुष्य परमेश्वर के अधीन है। अर्थात् जिस प्रकार से परमेश्वर सब कुछ जानता है, सर्वशक्तिमान है, सर्व-विद्यमान है, इन सब अधिकारों से उसने अपने आपको वंचित कर लिया था। परिणाम स्वरूप उसने स्वयं को परमेश्वर पर आश्रित बना लिया था। अब वह, वचन, स्वयं को शून्य बनाकर एक मनुष्य की तरह बन गया था।

दूसरा आदम

इस प्रकार, जब वचन ने मनुष्य बनकर पृथ्वी पर जन्म लिया था तो वास्तव में वह 'दूसरा आदम' था: देहधारी मनुष्य अर्थात् ईश्वर-मनुष्य। (1 कुरिन्थियों 15:21, 22, 45-49)। मनुष्य शरीर है अर्थात् वह भौतिक देह है और वह आत्मा भी है अर्थात् परमेश्वर के अत्मिक स्वभाव पर रचा हुआ एक प्राणी है। यीशु मसीह, अर्थात् वचन, एक मनुष्य की देह में प्रकट हुआ था, परन्तु वह, वचन, वही था जो स्वर्ग में परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था। मनुष्य के भीतर स्वयं अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी मनुष्य के भीतर है वह उसे परमेश्वर की ओर से ही मिला है। इसलिये मनुष्य पूर्णरूप से परमेश्वर के अनुग्रह पर ही आश्रित है। दूसरी ओर, वचन ने, जैसे कि हम आगे देखेंगे, उस सब अधिकार को, जो स्वयं उसका और उसमें था, त्याग दिया था, और वह अपनी ही इच्छा से परमेश्वर के अधीन हो गया था, उसी प्रकार से जिस प्रकार से मनुष्य है। शून्य कर देने का अर्थ वास्तव में यही है। पृथ्वी पर एक मनुष्य की देह में जन्म लेकर उसने अपने आप को छोटा बनाकर अपने आपको सीमित कर लिया था।

100% परमेश्वर तथा 100% मनुष्य?

मसीह पर विचार करते हुए यदि हम इस बात को ध्यान में नहीं रखते कि पृथ्वी पर आकर उसने अपने आप को किस प्रकार शून्य बना लिया था, तो हम पृथ्वी पर के उसके अस्तित्व को सही तरह से कदापि नहीं समझ सकते। वास्तव में, इस विशेष बात को ध्यान में न रखने के कारण ही कुछ लोगों का ऐसा मत है कि जब मसीह पृथ्वी पर था तो वह 100% परमेश्वर था और 100% मनुष्य भी था, जैसे कि मानो उसकी एक ही देह में अलग-अलग प्रकार के दो व्यक्तित्व थे। सो जब उसने कोई अद्‌भुत काम किया था तो समझा जाता है कि वह उसने इसलिये किया था क्योंकि वह परमेश्वर था। ऐसे ही जब उसकी परीक्षा हुई थी और जब उसे मृत्यु का सामना करना पड़ा था, तो समझा जाता है कि वह सब उसके साथ इसलिये हुआ था क्योंकि वह एक मनुष्य था; क्योंकि परमेश्वर की परीक्षा तो हो नहीं सकती और न ही परमेश्वर मर सकता है।

पर क्या यह दृष्टिकोण सही है? क्या यीशु मसीह समय के हिसाब से पृथ्वी पर अपने आप को बदल लेता था? यानि परिस्थिति अनुसार क्या वह अपने आपको कभी परमेश्वर और कभी मनुष्य के रूप में ढाल लेता था? क्या वह 100% परमेश्वर और 100% मनुष्य था?

वास्तव में सच्चाई यह है कि ऐसा कदापि नहीं था। उसका व्यक्तित्व 200 प्रतिशत का नहीं था। परन्तु, वह मनुष्य की एक ऐसी देह थी जिसके भीतर ईश्वरत्व का वह रूप था जिसने अपने आप को शून्य कर दिया था, वह वचन था- एक ईश्वरीय व्यक्तित्व, परन्तु ईश्वरीय अधिकारों से वंचित था।

परन्तु, यीशु मसीह ने पृथ्वी पर बहुत बड़े-बड़े आश्चर्यपूर्ण काम भी किये थे। यह कैसे सम्भव हुआ था? वे सब काम उसने स्वयं अपने अधिकार से या अपनी शक्ति से नहीं किये थे, क्योंकि उन सब से तो उसने अपने आप को शून्य बना लिया था। परन्तु फिर भी यदि वह उन सब

अद्‌भुत कामों को करने के योग्य अपने आप को बना भी सकता था तो फिर वह 'अपने भाईयों के समान' कैसे बनता? (इब्रानियों 2:117)।

पवित्र आत्मा का काम

तो फिर किसकी सामर्थ से वे सब अद्‌भुत काम यीशु मसीह ने पृथ्वी पर किये थे? उन सब कामों को उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ पाकर किया था। पवित्र आत्मा, जो परमेश्वरत्व में वचन के साथ था, उसी की सामर्थ उसे उस समय प्राप्त हुई थी जब वह बपतिस्मा लेकर जल में से ऊपर आया था (यूहन्ना 3:34) बपतिस्मा लेने के उपरान्त उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ था (लूका 3:21, 22)। किन्तु यदि यीशु पृथ्वी पर 100 प्रतिशत परमेश्वर और 100 प्रतिशत मनुष्य के रूप में आया होता, तो फिर उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ की क्या आवश्यकता होती? परन्तु जैसे कि हमने पहले देखा है, कि वचन ने अपने आप को उस सब सामर्थ और अधिकार से खाली यानि शून्य कर दिया था, और अपने आपको मनुष्य के रूप में बनाकर वह मनुष्यों की ही तरह सामर्थ-रहित और परमेश्वर पर आश्रित बन गया था। किन्तु, फिर भी संसार में सब लोगों को यह बताने के लिये और उन पर यह प्रमाणित करने के लिये कि वास्तव में वह कोई मनुष्य मात्र नहीं है पर वह यथार्थ में परमेश्वर का पुत्र है, और वह स्वर्ग से पृथ्वी पर मनुष्यों का उद्धार करने के लिये आया है, यह आवश्यक था कि उसके अद्‌भुत और सामर्थपूर्ण कामों के द्वारा यह बात सब पर प्रमाणित हो जाए। इसलिये उसने अनेकों आश्चर्यपूर्ण सामर्थ के काम किए थे। और उन सब कामों को करने की सामर्थ उसे पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त हुई थी। इसलिये हम पढ़ते हैं:

''...यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ.....'' (लूका 4:1)

''फिर यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील को लोटा.....'' (लूका 4:14)।

यीशु ने कहा था, ''मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं'' (मत्ती 12:28)।

नासरत के एक मन्दिर में यीशु ने यशायाह 61:1 में लिखी एक भविष्यवाणी को पढ़ा था, जिस में स्वयं उसी के बारे में यूं लिखा हुआ था:

''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है....'' (लूका 4:18)।

सो, अब, इन बातों से हम क्या समझते हैं? क्या अपने आप को वचन ने इसलिये शून्य कर दिया था कि वह फिर आत्मा से परिपूर्ण हो जाए? क्या इस प्रकार उसे उन सब कठिनाईयों से बचने का एक साधन मिल गया था जिनसे अकसर सब मनुष्यों को होकर गुज़रना पड़ता है? नहीं। पर वास्तव में आत्मा की भरपूरी जो उसे प्राप्त हुई थी वह इसलिये हुई थी ताकि वह उस काम को पूरा कर सके जिसे करने के लिये वह इस जगत में आया था। जो भी बड़े-बड़े अद्‌भुत काम उसने किये थे, शिक्षाएं दी थीं, वे सब पवित्र आत्मा की सामर्थ से पूरा हुआ था। परन्तु अपने प्रतिदिन के जीवन में वह एक मनुष्य ही था। यीशु मसीह वही वचन था जो आदि में परमेश्वर के साथ था, परन्तु अब वह शून्य था, और मनुष्य का भाई था। जब उसे परीक्षाओं और दु:खों और नाना प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा था तो इन सब का सामना उसे वैसे ही करना पड़ा था जैसे सभी अन्य लोगों को करना होता है। और उसने कहा था, जैसे कि हम सबको भी परमेश्वर के वचन के आधार पर कहना चाहिए कि, ''लिखा है'' (मत्ती 4:4), और वह परमेश्वर से प्रार्थना करने में लौलीन रहा। (लूका 6:12)। दो स्थानों पर हम ऐसा भी पढ़ते हैं, कि जब वह अपनी समस्याओं से होकर निकल चुका था, तो स्वर्गदूतों ने प्रकट होकर उसे सामर्थ्य दी थी। (मत्ती 4:11; लूका 22:43)। क्या कोई स्वर्ग दूत परमेश्वर को सामर्थ्य दे सकता है? नहीं। स्वर्ग दूत ने, यीशु मसीह को, वचन को, जिसने अपने आप को शून्य बना लिया था, मनुष्यों के भाई को, सामर्थ्य दी थी। (इब्रानियों 1:13)।

क्या उसने अपने आपको ईश्वरत्व से शून्य कर लिया था?

पर क्या इन सब बातों का अर्थ यह है, कि यीशु पृथ्वी पर आने के बाद केवल एक मनुष्य ही था, ईश्वर नहीं था? कुछ लोग उसे परमेश्वर का पुत्र तो अवश्य मान लेते हैं, पर यह मानने से कतराते हैं कि वह वास्तव में परमेश्वर था, और परमेश्वर है।

बाइबल इस विषय में क्या कहती है?

मसीह को परमेश्वर कहकर स्वीकार किया गया था

जैसा कि हम ने इससे पूर्व भी देखा है, कि यीशु ने अपने आपको उसी प्रकार से ''मैं हूं'' कहकर सम्बोधित किया था जिस प्रकार से परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी के बीच से मूसा को अपना परिचय दिया था। (यूहन्ना 8:58)। यह कहकर यीशु ने इस बात का प्रमाण दिया था, कि यद्यपि वह एक मनुष्य बनकर मनुष्य के रूप में होकर जगत में आया था परन्तु तौभी वह परमेश्वर ही था।

यूहन्ना 10:30 में इसी बात की पुष्टि यीशु ने यह कहकर की थी कि, ''मैं और पिता एक हैं।''

प्रेरितों: 20:28 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> ''परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।''

लहू मसीह ने बहाया था, और उसी को यहां परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है।

मसीह को परमेश्वर मानकर उसकी आराधना की गई थी

परमेश्वर ने सदा से ही इस बारे में मनुष्यों को चेतावनी दी है, कि उसे छोड़ किसी और की आराधना वे कभी न करें।

''तेरा परमेश्वर यहोवा....मैं हूं.....मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना। तू अपने लिये कोई मूर्ती खोदकर न बनाना.....तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं, तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला ईश्वर हूं।'' (व्यवस्थाविवरण 5:6-9; 4:15-39)।

प्रकाशितवाक्य 19:9, 10 में एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना से कहा था, और यूहन्ना ने इस विषय में इस प्रकार लिखा था:

''तब मैं उसको दण्डवत करने के लिये उसके पांवों पर गिर पड़ा। उसने मुझसे कहा, देख ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाईयों का संगी दास हूं.....परमेश्वर ही को दण्डवत कर।''

बाइबल में कहीं पर भी हम ऐसा नहीं पढ़ते कि किसी स्वर्गदूत इत्यादि की उपासना कभी किसी ने की थी। केवल परमेश्वर अर्थात् ईश्वरत्व की ही उपासना के बारे में हम पढ़ते हैं।

इसलिये यदि यीशु ने यह स्वीकार किया था कि उसकी उपासना करना कोई गलत काम नहीं था, तो यह बात भी यही प्रमाणित करती है, कि देहधारी होते हुए भी वह ईश्वर था।

जब यीशु ने आश्चर्यजनक रूप से झील में उठे तूफ़ान को थामा था, तो लिखा है, ''इस पर उन्होंने जो नाव पर थे, उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।'' (मत्ती 14:33)।

यूहन्ना 9:35-38 में हम यीशु के बारे में एक और रोचक घटना के बारे में पढ़ते हैं। इस अध्याय के आरंभ में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को नई आंखें दी थीं जो जन्म से ही अन्धा था। जब यहूदियों के धार्मिक अगुओं ने इस बात को सुना था तो उन्होंने उस आदमी को और उसके माता-पिता को बुलवाया था और उनसे इस बात की पुष्टि करनी चाहिए थी कि क्या वह वास्तव में एक अन्धा जन्मा था, और उसे कैसे और किसने चंगाई दी है। उस व्यक्ति के माता-पिता ने उन्हें उत्तर देकर इस प्रकार कहा था:

''हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अंधा जन्मा था; परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है, और न यह जानते हैं कि किसने उसकी आंखें खोली हैं। यह सयाना है, उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा। यह बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यहूदी एकमत हो चुके थे कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए।'' (यूहन्ना 9:20-22)।

उस समय के हिसाब से, यदि किसी को आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाता था तो इसका अर्थ यह होता था कि परमेश्वर से उसका सम्बंध टूट जाता था। क्योंकि उस समय आराधना परमेश्वर के मन्दिर में केवल याजकों के द्वारा ही करना सम्भव था।

बाद में उन अगुओं ने उस व्यक्ति को, जिसकी आंखें यीशु ने खोली थीं, यह समझाने का भरपूर प्रयत्न किया था कि वह जिसने उसकी आंखें खोली हैं परमेश्वर का जन हो ही नहीं सकता। परन्तु उसने उनसे कहा था,

''यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता। उन्होंने उसको उत्तर दिया, तू तो बिल्कुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है? और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।'' (यूहन्ना 9:33, 34)।

यीशु जानता था, कि उस मनुष्य ने जो कुछ भी उसके बारे में कहा था उसी के कारण यहूदियों ने उसे मन्दिर से बाहर निकाल दिया था। यीशु ने उस पर दया दिखाई, और उस से एक ऐसी बात कही जिस पर उस समय बहुत ही थोड़े लोग विश्वास कर सकते थे: यीशु ने उससे अपने बारे में कहा था कि, वह परमेश्वर का पुत्र है। यह बात सुनकर उस व्यक्ति ने यीशु से कहा था,

''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं। और उसे दण्डवत किया।'' (यहून्ना 9:38)।

फिर हम यह भी पढ़ते हैं, कि मरे हुओं में से जी उठने के बाद, जब वह अपने चेलों को दिखाई दिया था, और उसने उन्हें अपने घाव दिखाए थे, तो उनमें से थोमा नाम के एक चेले ने देखकर उससे कहा था,

''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर'' (यूहन्ना 20:28)।

प्रकाशितवाक्य 5 अध्याय में यीशु को परमेश्वर के मेम्ने के समान दर्शाया गया है, जिसके सामने सारे स्वर्गदूत और प्राचीन उसकी प्रशंसा में एक नया गीत गाकर कह रहे थे:

''वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है।'' (प्रकाशितवाक्य 5:12)।

यीशु ने ईश्वर समान पाप क्षमा किये थे

एक और प्रमाण यीशु के परमेश्वर होने का हमें इस बात में मिलता है कि यीशु ने लोगों के पाप क्षमा किये थे। यदि कोई मेरे विरूद्ध कोई गलत काम करता है, तो यह मेरे ऊपर निर्भर करता है कि मैं उसे क्षमा करूं या न करूं। मनुष्य परमेश्वर के विरूद्ध पाप करता है। इसलिये यह परमेश्वर का ही अधिकार है कि वह मनुष्य के पाप क्षमा करे। यहूदी लोग इस बात से परिचित थे। इसलिये मत्ती 9:2 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि जब यीशु ने लकवे से पीड़ित एक व्यक्ति से कहा था, ''हे पुत्र ढांढ़स बांध; तेरे पाप क्षमा हुए,'' तो यहूदियों ने यह सुनकर कहा था, ''यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।'' तब लिखा है:

''यीशु ने उनके मन की बातें जानकर कहा, तुम लोग अपने-अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है? यह कहना कि ''तेरे पाप क्षमा हुए,'' या यह कहना, ''उठ और चल फिर।'' परन्तु इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है। तब उसने लकवे के रोगी से कहा, ''उठ, अपनी खाट

उठा और अपने घर चला जा'' तब वह उठकर अपने घर चला गया।'' (मत्ती 9:4-7)।

फिर, हम लूका 7:48, 49 में उस स्त्री के बारे में पढ़ते हैं, जिसने अपने आंसुओं से यीशु के पांव भिगोकर पोंछे थे। यीशु ने उस से कहा था:

''तेरे पाप क्षमा हुए। तब जो लोग उसके साथ भोजन पर बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?''

सो जिस प्रकार से एक मनुष्य सदा मनुष्य ही रहेगा, ऐसे ही परमेश्वर भी परमेश्वर ही बना रहेगा। वचन, देहधारी बनकर पृथ्वी पर आने के पश्चात् भी, परमेश्वर ही था।

इसलिये, जब बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि वचन देहधारी होकर मनुष्यों के बीच में आया था (यूहन्ना 1:14), और उसने अपने आपको शून्य कर दिया था और वह एक दास बन गया था (फिलिप्पियों 2:7) तो इसका अर्थ क्या है? परमेश्वरत्व में इस परिवर्तन के फलस्वरूप वास्तव में क्या घटा था? क्या यह बदलाव केवल ऐसा ही था जेसे कोई कपड़े बदलता है, अर्थात् भीतर से वह वही था जो वह आदि से था, परन्तु उसने अपने ऊपर ''मानवता का पहरावा'' पहन लिया था? फिर, यदि वह परमेश्वर का पुत्र होने के कारण परमेश्वर था और वह उपासना के योग्य था, तो फिर इस कथन का अर्थ क्या है:

''इस कारण उसको चाहिए था कि सब बातों में अपने भाईयों के समान बने''? (इब्रानियों 2:17)।

मनुष्य का भाई

कुछ समय पूर्व हमने इस बात पर ध्यान करके देखा था कि परमेश्वर के वचन को ठीक प्रकार से काम में न लाने के कारण अनेकों लोग परमेश्वर को वास्तव में ठीक से नहीं समझ पाते। यदि हम यीशु मसीह को वास्तव में सही रूप में समझना चाहते हैं, तो उसके विषय में इस कथन का सही अर्थ भी समझना बड़ा ही आवश्यक है कि उसके बारे में लिखा है कि वह,

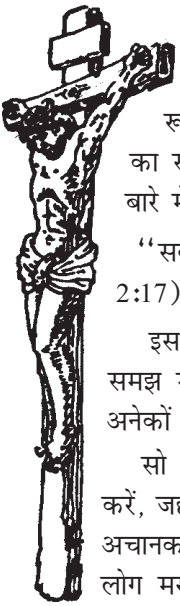

''सब बातों में अपने भाईयों के समान बने।'' (इब्रानियों 2:17)।

इस बात का अर्थ क्या है? यदि इस कथन का सही अर्थ हमें समझ में आ जाता है, तो बाइबल में लिखी यीशु के बारे में अनेकों बातें भी हमारी समझ में आ जाएंगी।

सो कल्पना करके आप एक ऐसे विशाल राज्य पर विचार करें, जहां एक बड़ा ही शक्तिशाली राजा राज्य करता है। परन्तु अचानक उस राज्य में एक महामारी फैल जाती है, जिससे हज़ारों लोग मरने लगते हैं। वह राजा अपनी प्रजा के लोगों से बहुत अधिक प्रेम करता है। इसलिये वह अपने ताज और राज-पोशाक उतारकर साधारण वस्त्र पहन लेता है। फिर वह अपने राज-महल को छोड़कर उन लोगों की सहायता करने के लिये निकल पड़ता है जो बीमार हैं और तड़प-तड़पकर मर रहे हैं।

ठीक ऐसा ही परमेश्वर ने इस संसार के लिये किया था, जब उसने देखा था कि संसार में सभी लोग पाप के कारण नाश हो रहे हैं।

''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था....और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।'' (यूहन्ना 1:1, 14)।

इब्रानियों 10:5 में लिखा है, कि परमेश्वर ने वचन के लिये एक देह तैयार की थी ताकि वह एक मनुष्य बनकर मनुष्यों के बीच में रहे। और इब्रानियों 2:14-17 के अनुसार:

> ''इसलिये जबकि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनका सहभागी हो गया.....क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् अब्राहम के वंश को सम्भालता है। इस कारण उसको चाहिए था कि सब बातों में अपने भाईयों के समान बने।''

जैसे कि हमने उस राजा की कल्पना करके देखा था कि अपना सब कुछ छोड़कर लोगों के पास जाने के बावजूद भी वह एक राजा ही था, ऐसे ही वचन भी जब देहधारी होकर एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया था, तो वह ईश्वर ही था। परन्तु जिस प्रकार से उस राजा ने उन सब वस्तुओं को त्याग दिया था जो उसके राजा होने की प्रमाणक थीं, उसी प्रकार वचन भी शून्य बनकर एक मनुष्य बन गया था।

पुत्र बन गया

परमेश्वर के सम्बंध में इस परिवर्तन का उल्लेख भजन संहिता 89:24-29 में हुआ था। और इसी भविष्यवाणी को समझाकर इब्रानियों 1:5 में लेखक कहता है, कि परमेश्वर ने मसीह के बारे में कहा था:

> ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ'' और फिर यह, कि ''मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।''

इन बातों का अभिप्राय एक निश्चित समय से था, अर्थात् वह समय जो आनेवाला था जब मसीह परमेश्वर का पुत्र बनकर पृथ्वी पर आ गया था। ''मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा,'' इस बात का प्रतीक है, कि जिस समय यह बात कही गई थी उस समय वचन ''परमेश्वर का पुत्र'' बनकर प्रकट नहीं हुआ था। उस समय तक वचन ने अपने आपको शून्य बनाकर मनुष्य का रूप धारण नहीं किया था; उस समय तक वह परमेश्वरत्व में परमेश्वर के समान था। वह परमेश्वर था।

परन्तु परमेश्वर ने भविष्य को देखकर कहा था, ''कि जब समय पूरा होगा'' तो उस समय वचन परमेश्वर की इच्छा से मनुष्य बनकर एक मनुष्य के रूप में प्रकट होगा और तब ''वह मेरा पुत्र होगा।'' उसने यह नहीं कहा था, कि वह ''किसी मनुष्य का पुत्र होगा'' परन्तु यह कहा था, कि ''वह मेरा पुत्र होगा।''

इन शब्दों का चुनाव बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि यीशु ने कहा था अपने बारे में, कि मैं, ''मनुष्य का पुत्र'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' हूं, ये दोनों ही बातें यीशु ने स्वयं अपने ही बारे में कही थीं।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा कब पूरी हुई थी?

''.....परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत .....एक कुंवारी के पास भेजा गया.....स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, 'हे मरियम भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान् होगा और परम प्रधान का पुत्र कहलाएगा।'' (लूका 1:26-32)।

मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, ''यह कैसे होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्ग दूत ने उसको उत्तर दिया, पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'' (लूका 1:34, 35)।

यहां हम दो खास बातों को देखते हैं। एक तो यह कि उसके पुत्र होने की बात को भविष्य में होने के लिये बताया गया है, जैसे कि इब्रानियों 1:5 में हमने पढ़ा था। यहां इस प्रकार नहीं कहा गया है, कि ''वह उत्पन्न होने वाला परमेश्वर का पुत्र है,'' परन्तु यह कि वह ''परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।''

दूसरे, हमें बताया गया है, 35 आयत में कि वह, अर्थात् यीशु मरियम के गर्भ में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से प्रवेश करेगा। और मत्ती 1:18-20 में इसी विषय में यूं लिखा है कि:

''वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई....क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।''

आत्मा की सामर्थ्य से

तो, फिर यीशु को ''परमेश्वर का पुत्र'' क्यों कहा गया है? ''आत्मा का पुत्र'' क्यों नहीं? इस सच्चाई को इस प्रकार क्यों व्यक्त किया गया है?

सर्वप्रथम, तो इसलिये क्योंकि परमेश्वर ने इस प्रकार अपने एक ही होने को व्यक्त किया है, अर्थात् वह और पवित्र आत्मा एक हैं। और दूसरे इसलिये क्योंकि परमेश्वर यह दर्शाना चाहता है कि आत्मा का कार्य, परमेश्वरत्व में, जीवन प्रदान करना है। इसी विषय में आगे चलकर हम देखेगें कि यीशु मसीह के जगत में आने के पश्चात आत्मा के ही द्वारा संसार में सभी लोगों को परमेश्वर के संतान बनने का अवसर प्रदान हुआ था। किन्तु, यहां भी हम देखते हैं, कि जिस प्रकार, आत्मा के कार्य के द्वारा वचन मसीह के रूप में आया था, उसी प्रकार अन्य लोग भी आत्मा के कार्य के द्वारा ही उसके भाई बनते हैं।

प्रभु यीशु के कथन अनुसार, ''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' (यूहन्ना 3:5)।

''क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह कि क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये, कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'' (रोमियों 8:13, 14)।

सो एक बार फिर से हम उसी प्रश्न पर लौटकर आते हैं कि, भजन संहिता 89:24-29 में की गई भविष्यवाणी कब पूरी हुई थी? इसका उत्तर यह है, कि जब वचन मनुष्य बन गया था, तो उसी समय वह परमेश्वर का पुत्र बन गया था। अर्थात्, जब उसने अपने आपको शून्य बनाकर परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये स्वयं को परमेश्वर के वश में कर दिया था, और

मनुष्य बनकर पृथ्वी पर जन्म के लिया था। उसी समय का वर्णन करके लेखक इब्रानियों 1:6 में इस प्रकार कहता है:

''और जब पहलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें।''

इसी बात के पूरा होने पर लूका 2:7-14 में लेखक इस प्रकार कहता है:

''और वह अपना पहलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा....और उस देश में कितने गड़रिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। और प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका....तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'मत डरो, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिये होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है' ....तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।''

पहलौठा

यीशु मसीह को इब्रानियों 1:6 में परमेश्वर का पहलौठा कहकर सम्बोधित किया गया है। किसी परिवार में जब पहले बच्चे का जन्म होता है तो उसे पहलौठा कहा जाता है। इसके बाद उस परिवार में और भी भाई-बहन उत्पन्न हो सकते हैं, परन्तु पहलौठे का स्थान उसी संतान का होता है जो सबसे पहले जन्मा था।

परमेश्वर के परिवार में उसके जितने भी संतान हैं उन सब में यीशु मसीह का स्थान पहलौठे पुत्र का है। यूं तो अब्राहम भी परमेश्वर की संतान है, और दाऊद भी परमेश्वर की संतान है पर क्योंकि यीशु ने परमेश्वर के पहलौठे के रूप में पृथ्वी पर आकर उन सब के लिये परमेश्वर के संतान

होने का मार्ग बना दिया था जो परमेश्वर के लेखे में उसके संतान बनने के योग्य हैं, न केवल वे जो मसीह के बाद परमेश्वर के पास आए हैं परन्तु उन सब के लिये भी जो मसीह के पृथ्वी पर आने से पहले थे, इस कारण से यीशु मसीह परमेश्वर का पहलौठा है।

इस बात को सही रूप से समझने के लिये हमें इस प्रश्न का उत्तर जानना आवश्यक है: कि मसीह के पृथ्वी पर आकर जन्म लेने से पहले क्या कोई ऐसा मनुष्य कभी हुआ था कि वह अपने ही बल-बूते पर परमेश्वर के पास जाने के योग्य था? क्या कोई मनुष्य पाप के बिना था? एक भी नहीं था। इसलिये, निसंदेह, यदि मसीह सबसे पहले एक मनुष्य के रूप में होकर परमेश्वर का पुत्र न बनता, तो पृथ्वी पर किसी को भी परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार कभी प्राप्त नहीं होता।

इसी विचार की पुष्टि करके इब्रानियों की पत्री का लेखक इब्रानियों 9:15 में कहता है, कि मसीह की मृत्यु के कारण न केवल हमें ही अपने पापों से छुटकारा पाने की आशा मिलती है, परन्तु ''उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है'' उन्हें भी उद्धार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

रोमियों 8:29 में लिखा है, कि परमेश्वर ने यह पहले ही से ठहराया था, कि उसके सभी संतान उसके पुत्र की समानता पर ही हों,

> ''क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है, कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाईयों में पहलौठा ठहरे।''

गलतियों 4:4-7 को पढ़कर हम यह सीखते हैं, कि यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के रूप में इसलिये जन्म लिया था ताकि जिनका छुटकारा हुआ है उन्हें,

> ''लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है', हमारे हृदयों में भेजा है।''

सो इस प्रकार हम यह देखते हैं कि केवल यीशु मसीह के द्वारा ही हमें परमेश्वर के संतान बनने का अवसर मिलता है। जैसे कि कुलुस्सियों 1:15-18 में भी हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> ''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों, अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है, वही आदि है, और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।''

इन सब बातों से हम यह सीखते हैं कि यीशु का स्थान सारी वस्तुओं में प्रमुख है, क्योंकि सब वस्तुओं की रचना उसी के द्वारा और उसी के लिये की गई थी। परन्तु पहलौठे शब्द का तात्पर्य केवल यहीं तक नहीं है कि यीशु का स्थान सब वस्तुओं में पहला है। पर इसका अभिप्राय इससे भी बड़ा है, इसका अर्थ वास्तव में इस बात से है कि यीशु परमेश्वर की सामर्थ्य से जन्मा उसका पहला पुत्र है, और वह उसके समान और उसके प्रतिरूप में है, और उसका वारिस है। (इब्रानियों 1:2; गलतियों 4:7)।

यहां से हमें जो सीखने को मिलता है वह यह है:

1. वचन ने अपने आपको शून्य बनाकर मनुष्य की देह को अपने ऊपर धारण कर लिया था।

2. वह परमेश्वर के द्वारा जन्मा उसका पहला पुत्र बन गया था, और इस प्रकार उसने सभी अन्य लोगों के लिये परमेश्वर के संतान बनने का रास्ता खोल दिया था।

3. वह अपने पिता का आज्ञाकारी बन गया था।

यीशु मसीह की मानवता

अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि जबकि यीशु मसीह एक मनुष्य बन गया था, तो फिर उसे एक सिद्ध जीवन व्यतीत करने की शक्ति कहां से प्राप्त हुई थी। इस विषय में हम बाइबल में से कुछ ऐसी आयतों को या ऐसे पदों को देखेंगे जिन्हें पढ़कर हमें पता चलता है कि इस संबन्ध में परमेश्वर ने यीशु की सहायता किस प्रकार की थी ताकि वह अपने उस काम को पूरा कर सके जिसे करने के लिये वह पृथ्वी पर आया था।

वह एक मनुष्य की तरह ही बड़ा हुआ था

क्योंकि मसीह सब बातों में अपने भाईयों के समान बनाया गया था, इसलिये वह एक इंसान की तरह ही बड़ा हुआ था। भजन-संहिता 22:9-11 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> ''परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला; जब मैं, दूध पीता बच्चा था, तब ही से तूने मुझे भरोसा रखना सिखाया। मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ से ही तू मेरा ईश्वर है।''

लूका 2:52 में उसके बारे में यूं लिखा है,

> ''और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।''

इब्रानियों 5:8 में लिखा है:

> ''पुत्र होने पर भी उसने दु:ख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी।''

ये बातें केवल इसीलिये लिखी जा सकती थीं उसके बारे में क्योंकि उसने अपने आप को उन सब अधिकारों से वंचित कर लिया था जो परमेश्वरत्व में होते हुए आदि से स्वयं उसी के थे, पर अब एक मनुष्य बनकर उसने स्वयं अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर के ऊपर आश्रित बना दिया था।

उसकी परीक्षा हुई थी

क्योंकि उसने अपने आपको शून्य कर दिया था इस कारण एक मनुष्य की ही तरह उसकी परीक्षा भी हुई थी। याकूब 1:13 में लिखा है,

''.....बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा नहीं की जा सकती।''

किन्तु यीशु के बारे में इब्रानियों 4:15 में लिखा है:

''वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।'' और फिर इस प्रकार लिखा है,

''क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है।'' (इब्रानियों 2:18)।

किन्तु, उसने किस प्रकार एक ऐसा जीवन निर्वाह किया था कि परीक्षाओं में पड़ने के बाद भी उसने कभी कोई पाप नहीं किया था?

प्रभु यीशु मसीह, पृथ्वी पर हमारी ही तरह एक मनुष्य बनकर आया था। जैसे हमारे सामने प्रति-दिन नाना प्रकार की परीक्षाएं आती हैं, उसी तरह से उसके सामने भी परीक्षाएं आती थीं। परन्तु हम अकसर परीक्षाओं में फंसकर पाप कर बैठते हैं, क्योंकि परमेश्वर का भय हमारे भीतर पूर्ण रूप से नहीं होता। परन्तु यीशु के भीतर पिता-परमेश्वर का भय पूर्ण रुप से था। वह पृथ्वी पर अपने जीवन के उद्देश्य को जानता था। वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिये ही पृथ्वी पर आया था।

इसीलिये, एक मनुष्य की समानता में होकर भी उसने मनुष्यों के समान पाप नहीं किया था। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह पाप कर ही नहीं सकता था, या उसके भीतर पाप करने की क्षमता नहीं थी। पर सब प्रकार की परीक्षाओं में पड़ने के बाद भी उसने पाप इसलिये नहीं किया था, क्योंकि वह अपनी इच्छा नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये पृथ्वी पर आया था। बाइबल में यीशु को, ''दूसरा आदम'' भी कहा गया है। अर्थात् पहला आदम वह था जिसके द्वारा पाप जगत में आया था। परन्तु

दूसरा आदम, यीशु, पाप के ऊपर विजय प्राप्त करके पाप से छुटकारा देने के लिए आया था।

उसे आनेवाली बातों का ज्ञान होता था

अकसर कुछ बातों के बारे में यीशु को पहले ही से पता होता था। कई बार, हम पढ़ते हैं, कि जो लोगों के मनों में होता था यीशु उन्हें पहले ही से जानता था। ऐसा होना न केवल इस कारण से ही ज़रूरी था कि जिस आवश्यक काम को करने के लिये वह जगत में आया था उसे पूरा करने के लिये उसे सहायता मिले, परन्तु ऐसा इसलिये भी आवश्यक था ताकि लोग उसमें यह विश्वास ला सकें कि वह केवल मात्र एक मनुष्य ही नहीं था।

''.....क्योंकि यीशु पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं; और कौन मुझे पकड़वाएगा।'' (यूहन्ना 6:64)।

''परन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सबको जानता था; और उसे आवश्यक्ता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है।'' (यूहन्ना 2:24, 25)।

''नतनएल ने उससे कहा, 'तू मुझे कैसे जानता है?' यीशु ने उसको उत्तर दिया, इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था तब मैंने तुझे देखा था।'' (यूहन्ना 1:48)।

''परन्तु वह उनके विचार जानता था'' (लूका 6:8) मरकुस 9:33-37; लूका 19:1-10 भी देखें।

उसने जानकारी के लिये पूछा था

ऐसे उदाहरण भी हमें मिलते हैं, जिनमें हम यह देखते हैं कि यीशु ने जानकारी प्राप्त करने के लिये कुछ पूछा था, या फिर जानकारी प्राप्त करके किसी काम को किया था।

''जब यीशु ने यह सुना, तो वह नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह को, एकान्त में चला गया.....'' (मत्ती 14:13)।

''उसने उनसे कहा, ''जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटियां है?'' उन्होंने मालूम करके कहा, 'पांच और दो मछली भी।' तब उसने उन्हें आज्ञा दी....'' (मरकुस 6:38, 39)।

''वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया कि क्या जाने उसमें कुछ पाए.....'' (मरकुस 11:13)।

''जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था और चेले उसके साथ थे, तो उसने उनसे पूछा, लोग मुझे क्या कहते हैं?'' (लूका 9:18)।

जब लाज़र बीमार था:

''उसकी बहनों ने उसे कहला भेजा, हे प्रभु, देख, जिससे तू प्रीति रखता है वह बीमार है। यह सुनकर यीशु ने कहा.....'' (यूहन्ना 11:3, 4)।

कुछ समय पश्चात उसने उनसे पूछा था:

''तुम ने उसे कहां रखा है? उन्होंने उससे कहा, हे प्रभु चलकर देख ले।'' (यूहन्ना 11:34)।

क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, यीशु ने प्रार्थना करके कहा था,

''हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझसे टल जाए....'' (मत्ती 26:39; लूका 22:42)।

जगत के अन्त में अपने आने के विषय में बताकर यीशु ने कहा था,

''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।'' (मरकुस 13:32)।

जबकि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता, कि यीशु द्वारा पूछे गए अधिकतर प्रश्न सुननेवालों के लाभ के लिये ही पूछे गए थे, पर मरकुस

13:32 से हमने देखा है, कि वहां यीशु ने कहा था, कि वह स्वयं नहीं जानता कि वह कब दोबारा वापस आएगा। फिर, जैसा कि हमने यह भी देखा था कि यीशु के बारे में लिखा है, कि वह बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा था और उसने आज्ञा मानना सीखी थी। सो इन बातों से हम यह सीखते हैं, यीशु के बारे में, कि वह हर बात में मनुष्यों की ही तरह बड़ा हुआ था और उसने मनुष्यों की ही तरह नाना प्रकार की परिस्थितियों का सामना भी किया था। यद्यपि यह भी सच है, कि परमेश्वर ने समय-समय पर पवित्र आत्मा के द्वारा उसकी सहायता भी की थी, जैसे कि हम ने पढ़ा था कि उसने लोगों के मनों की बातें जान ली थीं।

वह मनुष्यों की ही तरह भावुक हो जाता था

यीशु का अन्य मनुष्यों की ही तरह होना इस बात से भी प्रमाणित होता है कि वह कभी-कभी अनुभव करके भावुक भी हो जाता था। जैसे कि एक जगह हम पढ़ते हैं कि जब वह एक धनी युवक से बात कर रहा था, तो लिखा है, उस युवक के बारे में, कि

> ''उसने उससे कहा, ''हे गुरु इन सबको मैं लड़कपन से मानता आया हूं।'' यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया।'' (मरकुस 10:20, 21)। ऐसे ही, एक अन्य स्थान पर लिखा है, कि,
>
> ''उसने निकलकर एक बहुत बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया।'' (मत्ती 14:14)।

लाज़र की मृत्यु के समय यीशु के अनुभव का वर्णन इन शब्दों में किया गया है:

> ''जब यीशु ने उसको और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ, और कहा, ''तुमने उसे कहां रखा है?'' उन्होंने उससे कहा, ''हे प्रभु चलकर देख ले।'' और फिर लिखा है कि, 'यीशु रोया' (यूहन्ना 11:33-35)।

कुछ समय पश्चात् जब वह अपने चेलों को अपने उन दुखों के बारे में

बता रहा था, जिनका सामना उसे शीघ्र ही करना आवश्यक था, तो यूहन्ना 13:21 में लिखा है,

''ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ....''

यरुशलेम के बारे में लिखा है, कि उस पर आनेवाले विनाश के कारण, (क्योंकि वहां के लोगों ने उसको मानने से इन्कार कर दिया था) लूका 19:41 के अनुसार,

''जब वह निकट आया तो नगर को देखकर उस पर रोया।'' (लूका 19:41)।

''यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर योंही बैठ गया।'' (यहून्ना 4:6)।

उसे भूख (मत्ती 4:2) और प्यास (यूहन्ना 19:28) का अनुभव होता था। जब वह बाग में बैठकर उन कष्टों पर विचार कर रहा था जो मानवता के पापों के कारण उस पर आनेवाले थे, तो अपने चेलों से यीशु ने इस प्रकार कहा था,

''मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।'' (मत्ती 26:38)।

इसी विषय में लूका 22:44 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं,

''वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बूंदों के समान भूमि पर गिर रहा था।''

इब्रानियों 5:7 में यीशु के बारे में यूं लिखा है,

''यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आंसू बहा-बहाकर उससे जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और विनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई।''

जब उसे सहायता की सख्त आवश्यकता थी, तो लूका 22:43 में लिखा है,

''तब स्वर्ग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ्य देता था।''

सो इस प्रकार, इन सब बातों से हम यह सीखते हैं कि शून्य कर देने का तात्पर्य इस बात से नहीं है कि उसने ईश्वरत्व को त्याग दिया था, पर इस बात से है, कि उसने उन सब अधिकारों और विशेषताओं से अपने आपको वंचित कर लिया था जो विशेष रूप से परमेश्वरत्व में स्वयं उसमें विद्यमान थे। एक और बात इसी सम्बंध में हमने यह देखी है कि, क्योंकि वह अपने अन्य भाईयों की तरह बनाया गया था, इसलिये यीशु पृथ्वी पर अन्य मनुष्यों की ही तरह अपनी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिये परमेश्वर के ऊपर निर्भर रहता था। सो यद्यपि उसने सब कुछ त्याग तो दिया था, परन्तु जब भी उसे किसी वस्तु की आवश्यकता होती थी, तो उस काम को अंजाम देने के लिये, जिसे करने के लिये वह विशेष रुप से पृथ्वी पर आया था, परमेश्वर का पवित्र आत्मा उसे वह वस्तु तथा शक्ति प्रदान करता था। क्या बाइबल में और भी ऐसे हवाले हैं जिनसे हमें यह सीखने को मिलता है कि यीशु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये परमेश्वर पर ही निर्भर रहता था? यूहन्ना द्वारा लिखी सुसमाचार की पुस्तक में इसी विषय में हमें और भी बहुत कुछ मिलता है।

उसे पिता ने भेजा था

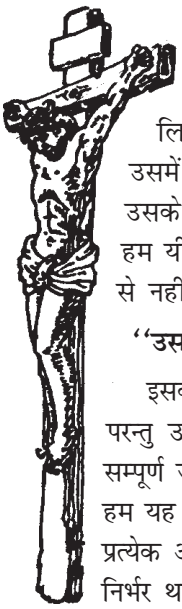

जब तक हम इस बात को ठीक से नहीं समझ लेते, कि जब **वचन** ने एक मनुष्य के रूप में परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के पुत्र की समानता में पृथ्वी पर जन्म लिया था, तो उसके सम्बंध परमेश्वरत्व में जो पहले थे, उसमें और **वचन** के मनुष्य बनने के बाद, परमेश्वरत्व के साथ उसके सम्बंधों में एक विशेष अन्तर पैदा हो गया था, तब तक हम यीशु के बारे में बाइबल में लिखी बहुत सी बातों को ठीक से नहीं समझ पाएंगे। जैसे कि, यूहन्ना 1:4 में हम पढ़ते हैं,

''उस में जीवन था....''

इसका तात्पर्य न केवल उस जीवन से था जो उसमें स्वयं था, परन्तु उस जीवन से भी था जो परमेश्वरत्व में है, अर्थात् वह सम्पूर्ण जीवन का मुख्य स्रोत था। परन्तु यूहन्ना 5:26 को पढ़कर हम यह देखते हैं, कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में अब वह अपनी प्रत्येक अतिरिक्त आवश्यकता के लिये पूर्ण रूप से पिता पर ही निर्भर था:

''क्योंकि जिस रीति से पिता अपने में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है, कि अपने आप में जीवन रखे।''

स्वयं उसका अपना जीवन जो आरंभ से उसमें था उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया था, (जिस प्रकार से एक मनुष्य की आत्मा अस्तित्व में आने के बाद हमेशा विद्यमान रहती है), परन्तु जब वह एक मनुष्य के रूप में उत्पन्न हुआ था, तो परमेश्वर ने उसे उसके उस शारीरिक जीवन पर भी अधिकार दिया था जो उसकी देह में था; ताकि वह उसे जब चाहे अपनी इच्छा से त्याग दे और अपनी इच्छा से उसे फिर प्राप्त कर ले; और इसी के साथ

उसे अन्य सब लोगों के जीवनों पर भी परमेश्वर की ओर से अधिकार दिया गया था। अर्थात् जो स्वयं उसका अपना जीवन था– जो आरंभ में उसी का था वह तो ज्यों का त्यों था; अन्तर अब इस बात का था कि स्वयं को शून्य बना देने के बाद, जो जीवन शारीरिक रूप में अब उसने धारण किया था, उसके ऊपर अब अधिकार उसे पिता ने दिया था।

इस सम्बंध में, आगे और दखने से पहले, हम उसके विषय में कुछ अन्य आवश्यक बातों को इस प्रकार देखते हैं:

मनुष्य के रूप में आने से पहले

1. **वचन** परमेश्वर के साथ था, और **वचन** परमेश्वर था (यूहन्ना 1:1)।
2. उसी के द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ था (यूहन्ना 1:3)।
3. जिसने मूसा से कहा था, 'मैं हूं' वह वही था (निर्गमन 3:14–15)।
4. वह इस्राएलियों की चट्टान था (1 कुरिन्थियों 10:4)।
5. वह वही **वचन** था जिसकी गवाही भविष्यवक्ताओं ने दी थी (1 पतरस 1:11)।
6. वह सदा से ही परमेश्वरत्व मे परमेश्वर था (फिलिप्पियों 2:6)।
7. वह परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप, परमेश्वर, था (इब्रानियों 1:3)।
8. पिता ने स्वयं उसे परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया था (इब्रानियों 1:8)।
9. उसे इमानुएल (परमेश्वर हमारे साथ) अद्‌भुत, युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार कहा गया है (यशायाह 9:6)।
10. परमेश्वरत्व में विद्यमान वह वचन था; बाइबल में परमेश्वरत्व (एलोहीम) शब्द लगभग 3000 बार आया है।

किन्तु मनुष्य के रूप में उसके जन्म ले लेने के बाद, उसके व्यक्तित्व में एक विशेष परिवर्तन आ गया था। वह जिसके पास सम्पूर्ण अधिकार था, अब पुत्र बन जाने के बाद वह पिता के अधीन हो गया था, और उसका आज्ञाकारी बन गया था।

यीशु के बारे में यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक से

यूहन्ना 3:35 ''पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं।'' (आरंभ में सब कुछ स्वयं उसी ने बनाया था, पर अब उसी को उसी की वस्तुएं दी गई हैं।)

यूहन्ना 5:19, 20 – ''पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो-जो काम वह आप करता है वह सब उसे दिखाता है।''

यूहन्ना 5:22- ''पिता किसी का न्याय नहीं करता परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।''

यूहन्ना 5:26- ''क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।''

यूहन्ना 5:27- ''वरन् उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है।''

यूहन्ना 5:30- ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं; और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं।''

यूहन्ना 5:36- ''....क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।''

यूहन्ना 5:37- ''और पिता जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है।''

यूहन्ना 5:43- ''मैं अपने पिता के नाम से आया हूं....''

यूहन्ना 6:29- ''परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर जिसे उसने भेजा है विश्वास करो।''

यूहन्ना 6:37- ''जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा....।''

यूहन्ना 6:38- ''क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।''

यूहन्ना 6:57- ''जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूं.....''

यूहन्ना 7:16- ''मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।''।

यूहन्ना 7:28- ''.....मेरा भेजनेवाला सच्चा है.....''

यूहन्ना 7:29- ''मैं उसे जानता हूं, क्योंकि मैं उसकी ओर से हूं और उसी ने मुझे भेजा है।''

यूहन्ना 7:33- ''मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं, तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा।''

यूहन्ना 8:16- ''....क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूं, और पिता है जिसने मुझे भेजा।''

यूहन्ना 8:18- ''....पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा।''

यूहन्ना 8:26- ''....मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना है वही जगत से कहता हूं।''

यूहन्ना 8:28- ''.....मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वेसे ही ये बातें कहता हूं।''

यूहन्ना 8:29- ''मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता है।''

यूहन्ना 8:38- ''मैं वही कहता हूं, जो अपने पिता के यहां देखा है...''

यूहन्ना 8:42- ''.....क्योंकि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूं। मैं अपने आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।''

यूहन्ना 8:55- ''....परन्तु मैं उसे जानता हूं और उसके वचन पर चलता हूं।''

यूहन्ना 9:4- ''जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है।''

यूहन्ना 10:18- ''....यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।''

यूहन्ना 10:25-''.....जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह हैं।''

यूहन्ना 10:29- ''मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझको दिया है सबसे बड़ा है...''

यूहन्ना 10:32- ''मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं.....''

यूहन्ना 10:36- ''तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो, 'तू निन्दा करता है'; इसलिये कि मैंने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं?' ''

यूहन्ना 10:37- ''यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो।''

यूहन्ना 11:41- ''हे पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तूने मेरी सुन ली है।''

यूहन्ना 11:42- ''मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है....''

यूहन्ना 12:44- ''जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।''

यूहन्ना 12:45- ''और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है।''

यूहन्ना 12:49- ''....पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या-क्या कहूं और क्या-क्या बोलूं।''

यूहन्ना 12:50- ''इसलिये मैं जो कुछ बोलता हूं वह जैसा पिता ने मुझसे कहा है, वैसा ही बोलता हूं।''

यूहन्ना 13:3- ''यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ कर दिया है.....''

यूहन्ना 13:20- ''....जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।''

यूहन्ना 14:10- ''.....अपनी ओर से नहीं बोलता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।''

यूहन्ना 14:16- ''मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा.....''

यूहन्ना 14:24- ''.....और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है।''

यूहन्ना 14:31- ''...जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूं..।''

यूहन्ना 15:10- ''.....जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञा को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।''

यूहन्ना 15:15- ''.....क्योंकि मैंने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।''

यूहन्ना 15:21- ''.....क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।''

यूहन्ना 16:5- ''परन्तु अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं।''

यूहन्ना 16:28- ''मैं पिता की ओर से जगत में आया हूं....''

यूहन्ना 17:1- ''हे पिता .... अपने पुत्र की महिमा कर....''

यूहन्ना 17:2- ''तू ने उसको सब प्राणियों पर अधिकार दिया....''

यूहन्ना 17:4- ''जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।''

यूहन्ना 17:6- ''मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने जगत में से मुझे दिया। वे तेरे थे और तूने उन्हें मुझे दिया।''

यूहन्ना 17:7- ''.....जो कुछ तूने मुझे दिया है वह सब तेरी ओर से है।''

यूहन्ना 17:8- ''क्योंकि जो वचन तूने मुझे दिये, मैंने उन्हें उनको पहुंचा दिये....और विश्वास कर लिया है कि तू ही ने मुझे भेजा।''

यूहन्ना 17:9- ''मैं उनके लिये विनती करता हूं .....जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।''

यूहन्ना 17:11- ''....अपने उस नाम से जिन्हें तूने मुझे दिया है, उनकी रक्षा कर कि वे हमारे समान एक हों।''

यूहन्ना 17:12- ''....जो तूने मुझे दिया है उनकी रक्षा की.....''

यूहन्ना 17:21- ''....जैसे तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।''

यूहन्ना 17:23- ''मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा।''

यूहन्ना 17:24- ''हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है....''

यूहन्ना 17:25- ''....मैंने तुझे जाना; और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा है।''

यूहन्ना 18:9- ''....जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से मैने एक को भी न खोया।''

यूहन्ना 18:11- ''....जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊं?''

इतना सब कुछ जो अभी हमने बाइबल में से पढ़ा है, ये सब हमें यह दिखाने के लिये पर्याप्त है कि यीशु का परमेश्वर के अधीन होकर रहना और उस पर पूर्णरूप से निर्भर रहना इस बात का प्रमाण है कि जब वह अपने भाईयों के समान बन गया था तो परमेश्वरत्व में रहते हुए जो उसकी भूमिका थी उसमें पूर्ण परिवर्तन हो गया था। अब वह स्वामी नहीं था, परन्तु एक दास बन गया था।

सो इस प्रकार हम यह देखते हैं कि यीशु ने अपने आप को शून्य बनाकर अपने उन सब अधिकारों को त्याग दिया था जो उस समय उसके थे जब वह परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था। परन्तु जब वह एक मनुष्य के रूप में अपने भाईयों के समान बनकर पृथ्वी पर आ गया था, तो जो कुछ भी उसने किया था और कहा था, वह सब कुछ उसने पिता परमेश्वर के अधिकार से ही किया और कहा था। किन्तु, इसके अतिरिक्त, मनुष्यों के उद्धार के लिये अपने बलिदान के द्वारा उसने और क्या त्यागा था? इस विषय में आगे चलकर हम और देखेंगे।

सम्पूर्ण समर्पण

बाइबल में से यीशु मसीह के जीवन के चारों विवरण पढ़कर एक खास बात हमें यह देखने को मिलती है कि प्रत्येक परिस्थिति में उसकी भूमिका बड़ी ही प्रमुख थी।

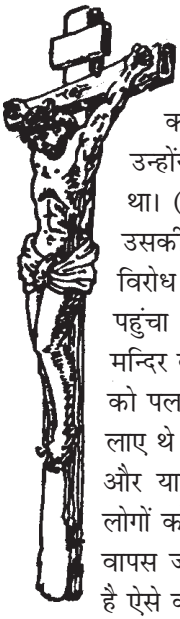

बारह वर्ष की आयु में जब वह यूसुफ़ और मरियम को छोड़कर यरुशलेम में रह गया था, तो वापस आकर उन्होंने पाया था कि वह मन्दिर में उपदेशकों से प्रश्न कर रहा था। (लूका 2:46, 47)। बपतिस्मा लेने के बाद जब शैतान ने उसकी परीक्षा करनी चाही थी, तो यीशु ने शैतान का कड़ा विरोध किया था। (मत्ती 4)। जब वह परमेश्वर के मन्दिर में पहुंचा था और उसने देखा था कि लोगों ने वहां परमेश्वर के मन्दिर को व्योपार का केन्द्र बना दिया था, तो उसने उनके तख़्तों को पलट दिया था, और पशुओं को जिन्हें बेचने के लिये वे वहां लाए थे बाहर खदेड़ दिया था। (यूहन्ना 2:14-17)। जब फ़रीसियों और याजकों ने यीशु को पकड़कर लाने के लिये अपने कुछ लोगों को उसके पास भेजा था, तो उन्होंने खाली हाथ उनके पास वापस जाकर कहा था, कि जिस प्रकार अधिकार से वह बोलता है ऐसे कोई और नहीं बोल सकता। जो लोग यीशु से प्रश्न पूछकर उसे अन्य लोगों के सामने नीचा दिखाने का प्रयत्न करते थे, जवाब में यीशु उनसे ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछता था कि वे स्वयं ही चुप होकर आश्चर्य-चकित रह जाते थे। एक जगह लिखा है:

> ''इसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका। उस दिन से किसी को फिर से कुछ पूछने का साहस न हुआ।'' (मत्ती 22:46)।

बाग़ में संघर्ष

परन्तु फिर वह समय भी आया था जब यीशु ने, लिखा है,

''ऊंचे शब्द से पुकार-पुकार कर और आंसू बहा-बहाकर उससे जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और विनती की।'' (इब्रानियों 5:7)।

और जब उसने अपने चेलों से कहा था,

''मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है .....फिर वह थोड़ा आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना की .....'' (मत्ती 26:38, 39)। ''तब स्वर्ग से एक दूत उसको दिखाई दिया जो उसे सामर्थ्य देता था। वह अत्यंत संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बूंदो के समान भूमि पर गिर रहा था।'' (लूका 22:43, 44)।

जिस प्रकार के दु:ख और वेदना के बीच यहां हम यीशु को देखते हैं ऐसा समय उसके जीवन में और कभी नहीं आया था। जब उसे क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया था, तो उस समय भी उसे इतनी अधिक यातना और पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ था। पर यहां हम एक ऐसे यीशु को देख रहे हैं जो दु:खों से भरे एक कटोरे को, जिसे वह पीने पर था, अपने सामने देखकर अत्यंत आत्मिक पीड़ा का अनुभव कर रहा था।

पीड़ा के प्रति उसकी देह की प्रतिक्रिया

कभी-कभी जब इन्सान को बहुत अधिक भय और पीड़ा का अनुभव होता है तो उसे आक्समात् ठन्डे पसीने आने लगते हैं। परन्तु लूका ने लिखकर यीशु के बारे में कहा था, कि उसका पसीना मानो लहू की बूंदों के समान टपक रहा था। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य की हालत बड़ी ही संकटमय हो जाती है और कभी-कभी मनुष्य की आकस्मात् मृत्यु तक हो जाती है। इसलिये जब यीशु ने यह कहा था कि ''मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है'' (मत्ती 26:38) तो यह सचमुच में उसकी वास्तविक स्थिति थी।

उसे कैसा अनुभव हो रहा था? क्या उसे उस मृत्यु से डर लग रहा था जो उसे क्रूस पर मिलनेवाली थी? क्या उसे उस भयानक पीड़ा का डर लग रहा था जिसका सामना वह करने जा रहा था?

उसके अनुयायीयों का विश्वास

इससे पहले कि इस विषय में हम अपना कोई निष्कर्ष निकालें, हमें उन लोगों पर अवश्य विचार कर लेना चाहिए जो पहली शताब्दि में मसीह में अपने पक्के विश्वास के कारण शहीद हो गए थे। इतिहास हमें बताता है, कि यीशु मसीह में अपने विश्वास के कारण उन लोगों ने बड़े-बड़े अत्याचारों और कष्टों का और मृत्यु तक का सामना किया था। उन्हें क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था, उबलते हुए तेल के कड़ाहों में डाला गया था, जंगली और खूंखार पशुओं के सामने ढकेल दिया गया था, ज़िन्दा जला दिया गया था। परन्तु तौभी वे सब परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए और अपने आप को धन्य समझते हुए शहीद हो गए थे। और इतना ही नहीं, पर उनके विशाल विश्वास को देखकर अनेकों अन्य लोग स्वयं भी मसीह यीशु के अनुयायी बन गए थे।

गतसमनी के बाग़ में जो उस दिन यीशु के साथ घटा था उसे दृष्टिकोण में रखकर यदि हम उन मसीही लोगों की शहादत पर विचार करके देखें, तो क्या हम यह मानना चाहंगे कि स्वयं यीशु से भी अधिक साहसी उसके अनुयायी थे? क्या ऐसा संभव हो सकता था कि यीशु को मृत्यु से इतना अधिक भय लग रहा था कि उसका पसीना लहू की बूंदों के समान टपक रहा था, जबकि उसके अनुयायी उसके लिये खुशी से कुर्बान हो गए थे? यदि नहीं, तो फिर इसका अभिप्राय वास्तव में कुछ और था।

पहली शताब्दी के उन मसीही लोगों के विश्वास को देखकर हमें यह मानना ही पड़ता है कि मसीह में उनका विश्वास एक विशाल चट्टान के समान था। वे यीशु की प्रतिज्ञाओं में वास्तव में विश्वास करते थे। यीशु ने कहा था,

''जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा।'' (यूहन्ना 11:25)।

''तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।'' (यूहन्ना 14:1-3)।

उनका विश्वास था कि जो कुछ भी यीशु ने कहा था वह सब सच था। उन्हें अपने ऊपर नहीं, परन्तु उस पर विश्वास था। उन्होंने स्वयं पिता के घर को नहीं देखा था। पर उन्होंने यीशु की बात पर विश्वास किया था।

परन्तु क्या यीशु स्वयं जानता था? हाँ, वह जानता था, क्योंकि वह पृथ्वी पर आने से पहले पिता के साथ स्वर्ग में था। वह जानता था उस स्थान के बारे में, और वह यह भी जानता था कि वह वहीं वापस भी चला जाएगा। उसे मालूम था कि मृत्यु उसकी आत्मा को कोई हानि नहीं पहुंचा सकती। वह यह भी जानता था कि मृत्यु के तीन दिन के बाद उसकी देह फिर से ज़िन्दा हो जाएगी। वह परमेश्वर को जानता था, और यह भी जानता था, कि वही जीवन दाता है।

सो यह सब जान लेने के बाद, क्या अब भी हम ऐसा सोच सकते हैं कि यीशु को अपनी मृत्यु से भय लग रहा था? क्या हम ऐसा मान सकते हैं, कि उसके अनुयायी शारीरिक मृत्यु से भयभीत नहीं थे, पर यीशु को शारीरिक मृत्यु से भय लग रहा था? कदापि नहीं। बिल्कुल नहीं।

पीड़ा का कारण

इसलिये, यदि वह पीड़ा जिसका अनुभव यीशु को बाग़ में हुआ था इस कारण से नहीं थी कि उसे शारीरिक दु:ख और मृत्यु का भय लग रहा था, तो फिर वह अपनी आत्मा में इतना अधिक व्याकुल क्यों हुआ था? कौन

सी ऐसी भयावाह बात थी जो उसे एक विशाल चुनौती सी प्रतीत हो रही थी? वह जो बाद में क्रूस के ऊपर चढ़कर भी भयभीत नहीं हुआ था, और अपने निश्चय में मज़बूत था, क्यों वहां उस बाग़ में ऐसा दु:खी था कि उसने कहा था कि, ''मेरा जी बड़ा उदास है, और मेरा प्राण निकला जा रहा है?''

क्रूस के परिणाम

क्रूस के कारण यीशु को मुख्यता दो परिणामों का सामना करना पड़ा था: एक तो शारीरिक मृत्यु का, और दूसरे अत्मिक रूप में इसलिये क्योंकि लिखा है कि वह मानवता के लिये 'पाप ठहराया' गया था। (2 कुरिन्थियों 5:21)। सो जबकि उसका घबराना और भयभीत होना शारीरिक मृत्यु के कारण नहीं था, तो फिर निश्चय ही उसका कारण वे आत्मिक परिणाम थे जो उसके बलिदान के फलस्वरूप आनेवाले थे। क्या थे वे आत्मिक परिणाम जो उसके पाप ठहराए जाने के कारण उत्पन्न हुए थे?

पाप

मनुष्य होते हुए और मनुष्यों के बीच में रहने के कारण हम प्रत्येक प्रकार के पाप से ऐसे घिरे रहते हैं कि हमें उसका एहसास तक नहीं रहता। इसलिये मसीह, जो स्वर्ग से पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में आया था, उसके समान हम पाप के विषय में अनुभव तक नहीं कर सकते। पाप एक ऐसी वस्तु है जो परमेश्वर के स्वभाव को छू तक नहीं सकती। इसी कारण से, मनुष्य जो पाप से परिपूर्ण है, परमेश्वर से दूर और अलग है।

पाप के नाशक प्रभाव और घिनौनेपन को शायद हम इस बात से थोड़ा सा समझ पाएं, कि एक पाप भी मनुष्य की आत्मा को परमेश्वर से हमेशा के लिये अलग करने की क्षमता रखता है। आत्मा को मनुष्य ने परम-आत्मा से प्राप्त किया है। इसलिये एक आत्मा का मूल्य परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा ही विशाल है। परन्तु पाप के कारण मनुष्य की आत्मा हमेशा के लिये नरक में जाएगी। और परमेश्वर इस हानि के महत्व से भली-भांति परिचित है।

हम कदाचित् कभी किसी ऐसे स्थान से होकर अकसर गुज़रे होंगे जहां

कूड़े और गन्दगी का एक बहुत बड़ा पहाड़ बना हो, जहां से सड़ी-गंदी बदबू आ रही हो, उस गन्दे कूड़े के पहाड़ में सारे शहर की गन्दगी के भीतर कीड़े बिलबिला रहे होंगे, और जहां आप एक पल भी न ठहरना चाहते हों, पर उसी क्षण यदि आप के मन में ऐसा विचार आ जाए कि यदि वह गन्दगी का पहाड़ आप के ऊपर गिर पड़े और आप उसके नीचे दब जाएं तो क्या होगा? ऐसी कल्पना तक आपको झकझोर के रख देगी और वास्तव में आप कभी ऐसी कल्पना करना भी नहीं चाहेंगे।

फिर भी इस प्रकार की किसी कल्पना तक से हम यीशु के उस अनुभव की तुलना नहीं कर सकते जो उसे उस समय हुआ होगा जब उसके मन में यह विचार आया होगा कि वह जो परमेश्वर का पवित्र जन है, वही जगत के सारे पापों के कारण पाप ठहराया जाएगा!

मनुष्य के ऊपर पाप का विशाल प्रभाव, परमेश्वर के पवित्र स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है। जब हम यीशु के ऊपर विचार करके उसे उस बाग़ में बैठे प्रार्थना करते देखते हैं, तो हमारा ध्यान उस पवित्र जन के ऊपर जाता है, जो स्वर्ग से आया था, जो पाप से अज्ञात था, जिसमें पाप की कल्पना तक भी नहीं थी, पर अब उसका सामना पाप से इस प्रकार होने जा रहा था कि जगत के सारे लोगों के पापों के लिये स्वयं उसे ही पाप ठहराया जा रहा था, मानो जैसे हर एक पाप जो पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य ने कभी भी किया हो वह वास्तव में स्वयं उसी ने किया था। क्योंकि क्रूस के ऊपर वह हर एक इन्सान के पापों के लिये पाप ठहराया गया था।

स्वयं हम भी, जो शायद 'सफ़ेद' झूठ और 'छोटे' पाप को नज़र अन्दाज़ कर देते हों, यदि हम में से किसी को दुनिया भर के सारे अपराधियों के लिये अपराधी ठहराकर दण्ड उठाने को कहा जाए, तो हमारे लिये भी ऐसा सोचना तक असहनीय हो जाएगा।

पाप ठहराया जाना

और वास्तव में, यही वह कष्टदायी विचार था, जो बाग़ में यीशु के विचाराधिन था, अर्थात् उसे सब के स्थान पर 'पाप ठहराया जाएगा।' यह

वह ज़हरीला कटोरा था जिसे उसे स्वयं पीना था। और इसका तात्पर्य इस बात से था कि उसे पीने के बाद उसे कुछ ऐसे परिणाम भुगतने पड़ेंगे जो उसके लिये हमेशा तक के लिये होंगे।

आदि से उस समय तक वह **वचन** जो तेंतिस वर्षों तक मनुष्य की देह में होकर पृथ्वी पर रहा था पाप-रहित और पवित्र था। उसे पाप ने छुआ तक भी नहीं था। वह चाहता तो वह उसी पवित्रता के भेष में वापस स्वर्ग में प्रवेश करके परमेश्वरत्व में उसके साथ फिर से एक हो जाता। और यदि वह ऐसा वास्तव में करता तो किसी भी मनुष्य को अपने पापों से छूटकारा पाने की आशा कभी भी नहीं मिल पाती। वह ऐसा कर सकता था। पर उसने ऐसा नहीं किया। अपने एक चेले से उसने वास्तव में यह कहा था,

> ''क्या तू नहीं जानता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?'' (मत्ती 26:53)।

छुटकारा पाने का रास्ता उसके पास था; उसे केवल चुनाव करना था।

सो इस प्रकार हम देखते हैं कि, उस समय गतसमनी के बाग़ में यीशु के मन में एक बहुत बड़ा संघर्ष चल रहा था, शैतान से नहीं, पर स्वयं अपने आप से। उसके सामने एक विशाल चुनौती थी, अर्थात यह, कि क्या मैं अपने उसी स्थान पर और उसी दशा में उसी पवित्रता की महिमा में वापस लौट जाऊं जिसमें मैं सदा से था? या इस काम को पूरा करुं जिसे करने के लिये मैं स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया हूं। अर्थात् संसार के सारे पापियों के लिये मैं पाप ठहराया जाऊं और परिणाम स्वरूप उन सब परिणामों का सामना करूं जो इस चुनाव को करने के कारण मेरे सामने आएंगे?

और परमेश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद हो कि उसका प्रेम ही प्रबल हुआ, और यीशु ने यह कहा था,

> ''हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।'' (मत्ती 26:42)।

मृत्यु

जब आदम ने पहली बार पाप किया था और उसके बाद जब कभी भी पाप की क्षमा पाने के उद्देश्य से बलिदान देकर लहु बहाया गया था तो वह यह दर्शाता था कि एक दिन पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये अवश्य ही लहू बहाया जाएगा। और वह समय तब वास्तव में आ गया था जब यीशु ने गतसमनी में बैठकर अपने आप को बलिदान देने के लिये परमेश्वर को सौंप दिया था। अब उसके संघर्ष का समय समाप्त हो गया था, और पापों से छुटकारा दिलाने का समय समीप आ गया था।

यीशु को पकड़कर उस पर मुकदमा चलाया गया

''तब उसने चेलों के पास आकर उनसे कहा, अब सोते रहो, और विश्राम करो: देखो, घड़ी आ पहुंची है.....'' (मत्ती 26:45)।

''वह यह कह ही रहा था, कि एक भीड़ आई, और उन बारहों में से एक जिसका नाम यहूदा था उनके आगे-आगे आ रहा था। वह यीशु के पास आया कि उसका चूमा ले। यीशु ने उससे कहा, हे यहूदा क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?'' (लूका 22:47, 48)।

तब यीशु, उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं जानकर, निकला और उनसे कहा, किसे ढूंढ़ते हो?

उन्होंने उसको उत्तर दिया, ''यीशु नासरी को।'' यीशु ने उनसे कहा, ''मैं हूं।'' उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था। उसके यह कहते ही, ''मैं हूँ'' वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। तब उसने फिर उनसे पूछा,

''तुम किसे ढूंढ़ते हो?'' वे बोले, ''यीशु नासरी को।'' यीशु ने उत्तर

दिया, मैं तो तुमसे कह चुका हूं, कि मैं ही हूं, यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो।'' (यूहन्ना 18:4-8)।

''फिर वे उसे पकड़कर ले चले, और महायाजक के घर लाए.....'' (लूका 22:54)।

''जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसे ठट्ठों में उड़ाकर पीटने लगे, और उसकी आंखें ढांककर उससे पूछा, भविष्यवाणी करके बता कि तुझे किसने मारा? और उन्होंने बहुत सी ओर भी निन्दा की बातें उसके विरोध में कहीं।'' (लूका 22:63-65)।

''प्रधान याजक और सारी महा-सभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे, परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई। अन्त में दो जन आए, और कहा, ''इसने कहा है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं।''

तब महायाजक ने खड़े होकर यीशु से कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? परन्तु यीशु चुप रहा। तब महायाजक ने उससे कहा, मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हमसे कह दे।

यीशु ने उससे कहा, तू ने आप ही कह दिया, वरन् मैं तुम से यह भी कहता हूं कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।

इस पर महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, इसने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुमने अभी यह निन्दा सुनी है। तुम क्या सोचते हो?

उन्होंने उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य है।

तब उन्होंने उसके मुंह पर थूका और उसे घूंसे मारे, दूसरों ने थप्पड़ मारके कहा, हे मसीह, हमसे भविष्यवाणी करके कह कि किसने तुझे मारा?'' (मत्ती 26:59-68)।

इस घटना के लगभग सात सौ साल पहले भविष्यवक्ता यशायाह ने इसी घटना का वर्णन करके कहा था, कि किस प्रकार हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता और मुक्तिदाता का निरादर किया जाएगा। यशायाह ने इस प्रकार लिखा था:

''मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए, अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुंह न छिपाया।'' (यशायाह 50:6)।

निर्णायक प्रश्न

उसकी शारीरिक यातनाओं का आरंभ अब हो चुका था। उसे पकड़कर वे लोग पूरी रात उसे अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग लोगों के पास अपराधी घोषित करने के उद्देश्य से ले गए। पहले हन्ना और फिर कैफ़ा नाम के यहूदियों के महायाजकों के सम्मुख उसे पेश किया गया। झूठे दोष उस पर वे लोग लगाते रहे, और कैफ़ा उससे कहता रहा कि तू अपने बचाव में कुछ क्यों नहीं कहता। परन्तु उसने अपना मुंह न खोला, किन्तु उस सारी रात में उसने जो कुछ भी सहा था, वह जानता था कि वह वास्तव में क्या कर रहा है।

अन्त में, हैरान और परेशान होकर जब उन्होंने जान लिया कि उसमें उन्होंने कोई ऐसा दोष नहीं पाया है जिसके कारण उसे मृत्यु दण्ड दिया जाए, तो कैफ़ा ने यीशु से कहा, ''हमें बता दे यदि तू वास्तव में परमेश्वर का पुत्र मसीह है।''

और यही वास्तव में, सबसे बड़ा और विशेष प्रश्न था। यह नहीं कि ''क्या तू मसीह होने का दावा करता है?'' पर यह, कि ''क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?'' झूठे दोष उस पर लगाए जा रहे थे, पर उनके उत्तर में यीशु ने उनसे कुछ भी नहीं कहा था। पर अब वह निर्णायक प्रश्न पूछा गया था जिसका उत्तर देना आवश्यक था। अर्थात् एक ऐसा प्रश्न जिसके उत्तर से सभी लोग हमेशा के लिये जान लेंगे कि क्यों यीशु को क्रूस पर लटकाकर मार डालने की सज़ा दी गई थी। और वह प्रश्न था, ''क्या तू मसीह है?'' और जवाब में यीशु ने कहा था, ''मैं हूं।'' (मरकुस 14:62)।

वास्तव में, ये वे सब लोग थे जो पवित्रशास्त्र में लिखी बातों से परिचित थे, और वे जानते थे कि मसीह के आने के विषय में अनेकों भविष्यवाणियों का वर्णन पवित्र वचन में मिलता है। पर उन्होंने एक बार भी ऐसा नहीं सोचा था, कि रूककर ज़रा विचार करें कि कहीं वास्तव में हम कोई गलती तो नहीं कर रहे हैं? हो सकता है यही मसीह और मुक्तिदाता है। उन के मनों में यह विचार तक नहीं आया था कि कहीं वे परमेश्वर के विरूद्ध कोई पाप तो नहीं कर रहे हैं। उनके मन ऐसे कठोर हो गए थे कि यीशु को उन्होंने एक अपराधी और धोखेबाज़ मान लिया था। और यहां तक, कि यीशु का जवाब सुन लेने के बाद भी उन्होंने उसकी बात का उल्टा ही मतलब निकाला था, और कहा था, कि वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है। सो उन्होंने उसे मृत्यु दण्ड पाने के योग्य ठहरा दिया था।

पिलातुस को सौंप दिया

''उन्होंने उसे बांधा और ले जाकर पिलातुस हकिम के हाथ में सौंप दिया।'' (मत्ती 27:2)।

''तब पिलातुस उनके पास बाहर निकल आया, और कहा, तुम इस मनुष्य पर किस बात का आरोप लगाते हो?

उन्होंने उसको उत्तर दिया, यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।

पिलातुस ने उनसे कहा, तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।

यहूदियों ने उससे कहा, हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।'' (यूहन्ना 18:29-32)।

''वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे, हमने इसे लोगों को बहकाते, और कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आपको मसीह और राजा कहते हुए सुना है।

सो पिलातुस ने उससे पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है?'' (लूका 23:2, 3)।

''यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है, या दूसरों ने मेरे विषय में तुझ से यह कहा है?

पिलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूं? तेरी ही जाति और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा है। तूने क्या किया है?

यीशु ने उत्तर दिया, मेरा राज्य इस संसार का नहीं,यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता, परन्तु मेरा राज्य यहां का नहीं।

पिलातुस ने उससे कहा, कि क्या तू राजा है?

यीशु ने उत्तर दिया, तू कहता है कि मैं राजा हूं। मैंने इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूं कि सत्य की गवाही दूं। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।

पिलातुस ने उससे कहा, ''सत्य क्या है?'' '' (यूहन्ना 18:34-38)।

हेरोदेस के सामने

''पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, कि यह गलील से लेकर यहां तक, सारे यहूदिया में उपदेश दे-देकर लोगों को भड़काता है।''

यह सुनकर पिलातुस ने पूछा, कया यह मनुष्य गलीली है? और यह जानकर कि वह हेरोदेस की रियासत का है, उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनों में वह भी यरुशलेम में था।

हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उसको देखना चाहता था; इसलिये कि उसके विषय में सुना था, और उससे कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था। वह उससे बहुत सी बातें पूछता रहा, पर उसने उसको कुछ भी उत्तर न दिया। प्रधान याजक और शास्त्री खड़े हुए तन-मन से उस पर दोष लगाते रहे। तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान करके ठट्ठों में उड़ाया, और भड़किला वस्त्र पहनाकर उसे पिलातुस के पास लौटा दिया।'' (लूका 23:5-11)।

भीड़ का चुनाव

''हाकिम की यह रीति थी कि उस पर्व में लोगों के लिये किसी एक बन्दी को, जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। उस समय उनके यहां बरअब्बा नामक एक माना हुआ बन्दी था। अत: जब वे इकट्ठा हुए, तो पिलातुस ने उनसे कहा, तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है? क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है.....

प्रधान याजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा कि वे बरअब्बा को मांग लें, और यीशु को नाश कराएं। हाकिम ने उनसे पूछा, इन दोनों में से किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं?

उन्होंने कहा, ''बरअब्बा को।'' पिलातुस ने उनसे पूछा, फिर यीशु को, जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?

सबने उससे कहा, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।'' '' (मत्ती 27:15-22)।

''पर पिलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया। परन्तु उन्होंने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, ''उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर।''

उसने तीसरी बार कहा, क्यों? उसने कौन सी बुराई की है? मैंने उसमें मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई। इसलिये मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं। परन्तु वे चिल्ला-चिल्लाकर पीछे पड़ गए कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उनका चिल्लाना प्रबल हुआ।'' (लूका 23:20-23)।

सिपाहियों द्वारा यीशु का अपमान

''तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चारों ओर इक्ट्ठी की, और उसके कपड़े उतारकर उसे लाल रंग का बागा पहनाया, और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसके दाहिने हाथ में सरकन्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे, और कहा, ''हे यहूदियों के

राजा, नमस्कार!'' और उस पर थूका; और वही सरकंडा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।'' (मत्ती 27:27-30)।

फिर से पिलातुस के सामने

''इस पर पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए.....'' (यूहन्ना 19:1)। ''तब पिलातुस ने बाहर निकलकर लोगों से कहा, ''देखो मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं, ताकि तुम जानो कि मैं उसमें कुछ भी दोष नहीं पाता।''

तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहने हुए बाहर निकला; और पिलातुस ने उनसे कहा, ''देखो, यह पुरुष!''

जब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, ''उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर।''

पिलातुस ने उनसे कहा, ''तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।''

यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, ''हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।''

जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया। और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, ''तू कहां का है?'' परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।

इस पर पिलातुस ने उससे कहा, ''मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है, और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।''

यीशु ने उत्तर दिया, ''यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो मुझ पर तेरा कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है उसका पाप अधिक है।''

इस पर पिलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदियों ने

चिल्ला-चिल्लाकर कहा, ''यदि तू इसको छोड़ देगा, तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं। जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।''

ये बातें सुनकर पिलातुस यीशु को बाहर लाया, और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में 'गब्बता' कहलाता है, और वहां न्याय-आसन पर बैठा, यह फ़सह की तैयारी का दिन था, और छठे घंटे के लगभग था। तब उसने यहूदियों से कहा, ''देखो, तुम्हारा राजा।''

परन्तु वे चिल्लाए, ''ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा।''

पिलातुस ने उनसे कहा, ''क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं?''

प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, ''कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।'' (यूहन्ना 19:4-15)।

''जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता, परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ बढ़ता जाता है, तो उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए और कहा, ''मैं इस धर्मी के लहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो।''

सब लोगों ने उत्तर दिया, ''इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो।'' (मत्ती 27:24-25)।

सात-सौ-साल पहले की गई भविष्यवाणी का पूरा होना

भविष्यवक्ता यशायाह ने परमेश्वर की प्रेरणा पाकर इन्हीं सब बातों के बारे अपनी पुस्तक में इस प्रकार लिखा था:

''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्याग हुआ था; वह दु:खी पुरुष था, रोग से उसकी जान-पहचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और हमने उसका मूल्य न जाना।

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये

उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सबके सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

वह सताया गया तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी।'' (यशायाह 53:3-8)।

जांच पर पुनर्विचार

सारी रात यीशु से पूछ-ताछ चलती रही और उसे मारा-पीटा भी गया था, इसलिये दिन में वह अत्यन्त ही थका-मांदा था। उसकी इस दुर्दशा का वर्णन करके यशायाह ने इस प्रकार यशायाह 52:14 में कहा था: ''क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था....''

जब उसे पहली बार पिलातुस के सामने लाया गया था, तो उस समय उन्होंने उस पर इधर-उधर के दोष लगाकर उसे दोषी ठहराने का प्रयत्न किया था। और पिलातुस ने यह जानकर कि उन्होंने ईर्ष्या के कारण यीशु को पकड़ा है उसे छोड़ना चाहा था। परन्तु यहूदी धार्मिक अगुवे हर सूरत पर यीशु को मरवाने पर तुले हुए थे। सो वे अपने सच्चे इरादे को प्रकट करके बोले: कि यीशु का मरना ज़रूरी है, क्योंकि इसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र बनाया है।

यीशु की इस बात को यहूदीयों के धार्मिक नेताओं ने एक अपराध की संज्ञा दी थी, और रोमी हाकिम ने इस बात को बड़ी ही गम्भीरता से लिया था। इसलिये उसने यीशु से फिर से पूछा था कि, ''तू कहां का है?''

सो, फिर से हम इस बात को देखते हैं, कि यीशु को इस बात के लिये

दोषी ठहराया गया था कि वह परमेश्वर का पुत्र था। क्योंकि इसके अतिरिक्त उन्हें कोई और बात मिली ही नहीं थी जिसके लिये उसे दोषी ठहराया जाता।

पिलातुस यीशु को छोड़ना चाहता था, पर वह यहूदी नेताओं के सामने असमर्थ था। इसलिये उसने अपने हाथ धोए, और यीशु को सिपाहियों को सौंप दिया ताकि उसे कोड़े मारे जाएं, और उन लोगों की इच्छा के अनुसार उसे क्रूस पर लटकाया जाए।

अब तक लगभग तीस घंटे हो चुके थे और यीशु को एक पल के लिये भी सोने को नहीं मिला था। रात को उसे मन्दिर के दरबानों ने पीटा था, और अब उसे रोमी सिपाहियों के हाथों में दे दिया गया था। उसके कपड़े उतारकर उसे निरादर किया गया था, और कोड़ों से पीटा गया था।

जिन कोड़ों से रोमी सिपाही दोषियों को पीटते थे उन पर लोहे की पत्तियां और नुकीली कीलें लगी होती थीं, जिससे कोड़े खानेवाला व्यक्ति न केवल लहू-लुहान हो जाता था, पर उसका मांस तक बाहर निकल आता था, और वह अधमरा सा हो जाता था।

यीशु की हालत अब तक बड़ी ही नाज़ुक हो गई थी, अब वह मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था और लगभग बेहोशी की स्थिति में था। और वे सिपाही उसे ''यहूदियों का राजा'' कह-कहकर अपमानित कर रहे थे। उन्होंने उसे बैंजनी वस्त्र पहना रखा था और कांटों का मुकुट बनाकर उसके सिर के ऊपर रख दिया था, और उसके हाथ में एक सरकंडा थमा दिया था। अर्थात् उसे एक राजा सा बनाकर उसका मज़ाक उड़ाया जा रहा था। वे उसके सामने झुक रहे थे और बार-बार कह रहे थे, ''हे यहूदियों के राजा, प्रणाम।'' उन्होंने उसे थप्पड़ मारे, उसके मुंह पर थूका। फिर सरकंडा उसके हाथ से लेकर उसी को उसके सिर पर मारा।

अब तक सैंकड़ों ज़ख़्म यीशु के सारे शरीर पर दिखाई दे रहे थे, खून पूरे बदन से बह रहा था। सिर पर रखे कांटे उसके माथे को लहु-लुहान कर रहे थे। और इतना अधिक खून बह जाने के बाद अब उसके शरीर में शक्ति

नहीं बची थी। इसके अतिरिक्त उसने कई घंटों से न कुछ खाया था और न उसे कोई आराम मिला था।

परन्तु तौभी अभी उसकी शारीरिक यात्नाओं का अन्त नहीं हुआ था। सिपाहियों ने उसके कांधे पर उसका क्रूस रखकर उसे यरुशलेम नगर के बाहर चलने को कहा, परन्तु वे यह भी जानते थे कि अब वह इस स्थिति में कदापि नहीं था कि वह उस भारी क्रूस को उस पहाड़ी तक चलकर ले जा सके जहां पर दोषियों को क्रूस पर चढ़ाकर मारा जाता था।

गुलगुता

''बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला। उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठाकर ले चले। उस स्थान पर जो गुलगुता अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है, पहुंचकर उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उसने चखकर पीना न चाहा। तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिये, और वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे।'' (मत्ती 27:32-36)।

''तब यीशु ने कहा, हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।'' (लूका 23:34)।

''और उसका दोष-पत्र उसके सिर के ऊपर लगाया कि **''यह यहूदियों का राजा यीशु है''।** तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएं, क्रूसों पर चढ़ाए गए।

आने-जानेवाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे, और यह कहते थे, ''हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आपको तो बचा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ।''

इसी रीति से प्रधान याजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, ''इसने औरों को बचाया, और अपने आप को नहीं बचा सकता। यह तो इस्राएल का राजा है, अब क्रूस पर से उतर आए

तो हम उस पर विश्वास करें। उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है; यदि, वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।' '' (मत्ती 27:37-43)।

विश्वास करनेवाला कुकर्मी

''जो कुकर्मी वहां लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उसकी निन्दा करके कहा, ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आपको और हमें बचा।''

इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी तो वही दण्ड पा रहा है। और हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई अनुचित काम नहीं किया। तब उसने कहा, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।'' यीशु ने उससे कहा, मैं तुझ से सच-सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'' (लूका 23:39-43)।

मरियम से अंतिम शब्द

''....यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और उसकी माता की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखा, तो अपनी माता से कहा, ''हे नारी, देख यह तेरा पुत्र है।'' तब उस ने उस चेले से कहा, ''यह तेरी माता है।'' और उसी समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया।'' (यूहन्ना 19:25-27)।

''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर''

''दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, ''एली, एली, लमा शबक्तनी?'' अर्थात् ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू

ने मुझे क्यों छोड़ दिया?''

जो वहां खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, ''वह तो एलिय्याह को पुकारता है।''

उनमें से एक तुरन्त दौड़ा और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकंडे पर रखकर उसे चुसाया। औरों ने कहा, ''रह जाओ, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।'' (मत्ती 27:45-49)।

जब यीशु ने सिरका लिया, तो कहा, ''पूरा हुआ।'' और फिर यीशु ने कहा,

''...हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं।'' और यह कहकर प्राण छोड़ दिए।'' (यूहन्ना 19:30; लूका 23:46; भजन संहिता 31:5)।

''और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया; और धरती डोल गई, और चट्टानें तड़क गईं, और कब्रें खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों के बहुत से शव जी उठे, और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिए।

तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भूकम्प और जो कुछ हुआ था उसे देखकर अत्यन्त डर गए और कहा, ''सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।'' (मत्ती 27:51-54)।

''इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगे तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं, ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था।

अत: सैनिकों ने आकर उन मनुष्यों में से पहले की टांगे तोड़ीं, तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगे न तोड़ीं। परन्तु सैनिकों में से एक ने बरछे से उसका पंजर भेदा, और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।

जिसने यह देखा, उसने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है कि वह सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।

ये बातें इसलिये हुईं कि पवित्र शास्त्र में जो कहा गया था वह पूरा हो, ''उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।'' फिर एक स्थान पर यह लिखा है, ''जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर वे दृष्टि करेंगे।''

इन बातों के बाद अरिमतिया के यूसुफ़ ने, जो यीशु का एक चेला था, परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था, पिलातुस से विनती की, कि क्या वह यीशु का शव ले जा सकता है। पिलातुस ने उसकी विनती सुनी, और वह आकर उसका शव ले गया। नीकुदेमुस भी, जो पहले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया।

तब उन्होंने यीशु का शव लिया, और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफ़न में लपेटा।

उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी, और उस बारी में एक नई कब्र थी जिसमें कभी कोई न रखा गया था। इसलिये यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।'' (यूहन्ना 19:31-42)।

क्रूस पर पुनर्विचार

आज लगभग दो हज़ार वर्षों के बाद जब हम उन बातों पर विचार करके सोचते हैं जो यीशु के साथ उस समय क्रूस पर घटी थीं, तो हमारे लिये यह अनुमान लगाना भी अत्यंत कठिन हो जाता है, कि जिस समय पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये यहूदियों के हाथों में उसे सौंप दिया था, उस समय से लेकर तब तक जब उस कब्र पर से पत्थर हट गया था, वास्तव में यीशु के साथ क्या-क्या घटा था। क्रूस की कथा में न तो कोई सुन्दरता थी और न ही कोई आकर्षण था।

लोगों की उस भीड़ का दृश्य जो यीशु के पीछे गुलगुता तक जाने के

लिये चल रही थी वास्तव में बड़ा ही भयानक था। यीशु भूखा-प्यासा मुश्किल से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। क्योंकि रात भर पहले तो यहूदियों ने और फिर रोमी सिपाहियों ने यीशु को बुरी तरह से पीटा था। अब वह लगभग अधमरा सा लग रहा था। उसका मुंह और शरीर ज़ख़्मों से लहू-लुहान था। अब उसे पहचानना भी मुश्किल था। खून के चकत्ते सारे शरीर पर जमने लगे थे। मक्खियां उसके चारों तरफ भिनभिना रही थीं। पर अब उसके हाथों में इतनी शक्ति भी बाकी नहीं बची थी कि वह अपना हाथ हिलाकर मक्खियों को हटा सके।

''खोपड़ी'' की जगह पर पहुंचकर, यीशु को उन्होंने लकड़ी के एक बड़े तने के ऊपर, जिससे क्रूस बना हुआ था, लिटा दिया था और उसके हाथ उस पर सीधे करके वे उसके हाथों में कीलें ठोकने लगे। जब उन्होंने उसे कीलों से क्रूस के ऊपर ठोक दिया तो उसके दोनों पैरों को एक-दूसरे के ऊपर रखकर उनके बीच में एक बड़ी कील ठोक दी। फिर सिपाहियों ने उस क्रूस को घसीट कर खड़ा किया, और उसे एक गड्ढे के पास ले गए जो पहले से खुदा हुआ था और उस क्रूस के निचले भाग को उन्होंने उस गड्ढे में डालकर उसे मिट्टी और पत्थरों से अच्छी तरह से दबा दिया। अब यीशु क्रूस पर लटका था, और वज़न से उसका शरीर सामने की ओर झुक रहा था जिसके कारण अब पीड़ा उसके शरीर में एक भयानक रूप ले चुकी थी।

अकसर तस्वीरों में जब क्रूस को चित्रित करके दिखाया जाता है तो उस पर लटके हुए व्यक्ति को ऐसे दिखाया जाता है जैसे वह सीधा लटका हुआ है, और शान्त है। पर क्रूस पर लटके व्यक्ति की वास्तविकता पर तनिक ध्यान देकर यदि हम सोचें, तो ऐसी तस्वीर धूमिल पड़ जाएगी।

वास्तव में, जब क्रूस को खड़ा किया जाता था तो उस पर लटकी हुई देह सामने की ओर आ जाती थी, और दोनों हाथ जो कीलों से ठुके होते थे ऊपर की तरफ से कंधों तक खिंचकर सामने आ जाते थे। शरीर का सारा बोझ दोनों बाजुओं पर पड़ जाता था और मांस-पेशियां फूल जाती थीं,

और कंधे उखड़ जाते थे। खिंचाव से हाथों में ठुकी कीलों के घाव और बड़े हो जाते थे और मांस लटकने लगता था। सीना क्योंकि खिंचाव से सामने की ओर निकल आता था इसलिये फेफड़ों को पूरी हवा न मिलने के कारण सांस लेना भी कठिन हो जाता था। अर्थात् मनुष्य का शरीर क्रूस पर सामने की ओर लटका हुआ ऐसा प्रतीत होता था कि अब उसका दम निकलने पर है!

इसी स्थिति में दम निकलने से पहले जितनी देर तक यीशु उस क्रूस पर लटका रहा था प्रत्येक पल उसे मृत्यु का सा अनुभव हो रहा था। भयानक पीड़ा और यातना से होकर वह उस समय गुज़र रहा था। क्रूस पर चढ़े यीशु में न तो कोई सुन्दरता थी और न ही किसी प्रकार का कोई आकर्षण था। क्रूस का दृश्य वास्तव में बड़ा ही दर्दनाक तथा भयानक था।

जिस प्रकार से परमेश्वर ने दाऊद के द्वारा, सैंकड़ों वर्ष पूर्व, भविष्वाणी करके कहा था, रोमी सिपाही यीशु के वस्त्र प्राप्त करने के लिये जुआ खेल रहे थे। फिर वे बैठकर इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब क्रूस पर चढ़े लोगों की मृत्यु हो जाए और उन्हें उनके काम से छुट्टी मिले।

याजकों के साथ, क्रूस के साए के तले लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ भी थी जो तमाशा देखनेवालों की तरह सारा दृश्य देख रही थी। उन में से कुछ यीशु का उपहास कर रहे थे; और कह रहे थे कि इसने अन्य लोगों को तो बड़ी-बड़ी मुसीबतों से बचाया था, पर अब यदि यह स्वयं अपने आपको बचा ले तब हम इस पर विश्वास करेंगे कि यह वास्तव में वही है जो यह अपने विषय में कहता है। वे कह रहे थे कि यदि यह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आए, तब हम इसमें विश्वास करेंगे। वे उसे ताने मार रहे थे; उसका मज़ाक उड़ा रहे थे। वे उसे चुनौती देकर कह रहे थे, कि अब तू अपने आपको क्यों नहीं बचाता। हां, वे उस पर विश्वास लाने को तैयार थे, पर यदि वह क्रूस पर न मरता। यदि वह क्रूस पर से उतरकर नीचे आ जाता!

वे कुकर्मी जो उसके साथ क्रूसों पर उसके दाएं और बाएं लटकाए गए

थे वे भी उस भीड़ के लोगों की तरह ही यीशु के विषय में सोच रहे थे। पर तभी उनमें से एक ने अपना मन फिराया था और अपनी सोच में बदलाव लाकर उसने यह स्वीकार किया था कि वे दोनों तो अपने बुरे कामों की सज़ा पा रहे थे, पर यीशु निर्दोष था।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जब यीशु को पकड़कर वे लोग ले गए थे, तो इसके बाद उसके वे चेले जो उसके साथ-साथ रहते थे, जो उसके प्रेरित कहलाए थे, वे उन सब बातों को कदाचित् भूल बैठे थे जिन्हें वे यीशु के विषय में तब सच मानते थे। उसके अद्‌भुत काम जो उन्होंने देखे थे; उसे वे प्रभु मानते थे; उन्होंने विश्वास किया था कि यीशु अपने राज्य में आएगा। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है, कि वे सब बातें उनके लिये केवल तभी तक सच थीं जब तक यीशु उनके साथ था, उन सब बातों का अन्त उनके लिये उसकी मृत्यु के साथ ही हो गया था। क्रूस के पास, उस समय केवल यूहन्ना को छोड़कर अब उन में से कोई भी नहीं था। वे सब उसे छोड़कर चले गए थे।

परन्तु उसी समय यीशु में विश्वास लाने की एक किरण एक ऐसे स्थान से निकलकर बाहर आती है जहां से आने की कल्पना तक भी नहीं की जा सकती थी। एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं अपने ही अपराधों के कारण क्रूस पर मौत का सामना कर रहा था, यीशु के लहु-लुहान, मृत समान शरीर की तरफ देखकर कहता है, ''प्रभु, हे यीशु.....''

यह बात वास्तव में बड़ी ही विचित्र प्रतीत होती है, कि जबकि अन्य सभी लोग यीशु में अपने अविश्वास का परिचय दे रहे थे, या उसका इन्कार कर रहे थे तभी दूसरी ओर उस कुकर्मी ने यीशु को अपना प्रभु मान लिया था। पर वह यीशु के बारे में क्या और कैसे जानता था? क्यों उसने यीशु में विश्वास किया था? उस ने कहा था, ''हे यीशु जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुधि लेना।''

यह उसने कैसे जाना था कि मृत्यु के बाद भी यीशु अपने राज्य में वापस आएगा? उसकी ऐसी समझ और ऐसे दृढ़ विश्वास का क्या कारण

था? उस कुकर्मी द्वारा कही गईं ये बातें, और वास्तव में उस समय जबकि यीशु और वह दोनों ही मरने पर थे, बड़ी ही महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती हैं।

और उसके विश्वासपूर्ण निवेदन का उत्तर देकर यीशु ने उस से कहा था, ''मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''

दोपहर से तीन बजे तक सारे देश में अंधेरा छाया रहा। और उस समय यीशु निरन्तर यह प्रार्थना परमेश्वर से कर रहा था, ''हे पिता, इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।''

और जब उसका प्राण निकलने पर था तो भयानक पीड़ा के बीच में यीशु ने चिल्लाकर कहा था, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?''

भजन संहिता की पुस्तक में 22वें भजन का आरंभ भी भविष्यवक्ता ने ठीक इन्हीं शब्दों के साथ किया था। उसका कहने का क्या अर्थ था? कैसे उसने अपने आप को त्यागा हुआ अनुभव किया था? जो कुछ भी अब तक यीशु के साथ घटा था, वह सब परमेश्वर की योजनानुसार और उसकी इच्छा से था। वह सब कुछ मानवता को पापों से छुटकारा पाने के लिये परमेश्वर की दृष्टि में आवश्यक था, जिसकी योजना पृथ्वी की नींव रखी जाने से भी पहले बनाई जा चुकी थी। (प्रकाशितवाक्य 13:4-8)। तो फिर वह अपने आपको छोड़ा हुआ अनुभव क्यों कर रहा था?

शायद निम्नलिखित बातों से इस तथ्य को समझने में हमें सहायता मिले: जब किसी का जन्म परमेश्वर के परिवार में होता है, तो उस व्यक्ति की देह पवित्र आत्मा के रहने का स्थान बन जाती है (1 कुरिन्थियों 6:19)। परन्तु इस के साथ हमें यह चेतावनी भी दी गई है कि अनुचित व्यवहार के द्वारा हम परमेश्वर के आत्मा को शोकित कर सकते हैं (इफिसियों 4:30), और आत्मा को बुझा सकते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:19), और यहां तक भी पाप कर सकते हैं कि आत्मा हमें छोड़कर हमारे पास से चला जाए। (इब्रानियों 10:25-29; 6:4-8; 2 कुरिन्थियों 13:5)।

यीशु मसीह के बारे में लिखा है, कि ''वह हर एक बात में अपने भाईयों के समान बनाया गया था।'' पृथ्वी पर उसने प्रत्येक प्रकार की परीक्षाओं का सामना करने पर भी कभी कोई पाप नहीं किया था। क्योंकि परमेश्वर के उस परिवार में, जो पृथ्वी पर है, वह पहलौठा है, इस कारण उसे पवित्र आत्मा बिना नाप-तोल के दिया गया था। उसने सभी आश्चर्यपूर्ण काम परमेश्वर के अधिकार से और पवित्रात्मा की सामर्थ्य द्वारा किये थे। वह अपने धर्मी स्वभाव द्वारा परमेश्वरत्व में सम्पूर्ण सहभागिता का हकदार था।

परन्तु पापियों के एवज में मृत्यु प्राप्त करने के कारण वह ''पाप ठहराया'' गया था। वह समय स्थानान्तरण का था, जब परमेश्वर की दृष्टि में हम सब के पाप उसके बन गए थे, और इसलिये पाप के कारण पवित्र आत्मा उसे छोड़कर उसके पास से चला गया था। इसी कारण से, अपने आप को अकेला पाकर यीशु ने यह कहा था, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' यहां, हम **'वचन'** को देख रहे हैं, कि उसने अपने आपको सर्व-प्रथम तो प्रत्येक उस सामर्थ्य और अधिकार से जो उसे परमेश्वरत्व में आरंभ से प्राप्त थे शून्य कर दिया था, और अब पवित्र आत्मा, जिसे उसने परमेश्वर से प्राप्त किया था, वह भी उसे छोड़कर उसके पास से चला गया था। अब वह 'मनुष्य का पुत्र' अकेला जगत के सारे लोगों के पापों के लिये मृत्यु दण्ड पा रहा था।

अन्त में, यीशु ने यह कहने के बाद कि ''मैं प्यासा हूं'', वह किया था जिसे करने का अधिकार उसे पिता ने दिया था (यूहन्ना 10:18), अर्थात् उसने जीवन पर अपने अधिकार का उपयोग किया था। मृत्यु के अन्तिम क्षणों में, उसने बड़े शब्द से पुकार कर कहा था, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'', और फिर मानवता के छुटकारे के काम का अन्त होते देख यीशु ने कहा था, ''पूरा हुआ।'' और तब उसने अपना सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए थे।

क्या शारीरिक मृत्यु ही पर्याप्त थी?

यह बात सुनकर कि यीशु मसीह हमारे लिये, हमारे स्थान पर, मर गया था, हमें बड़ा ही अच्छा लगता है। पर इस बात का महत्त्व वास्तव में बहुत ही विशाल है। जबकि इस बात को सुनना तो हर एक के लिये ज़रूरी है लेकिन इसी के साथ यह भी बड़ा ही आवश्यक है कि हम इस बात के महत्व को समझें कि यीशु का मरना क्यों ज़रूरी था।

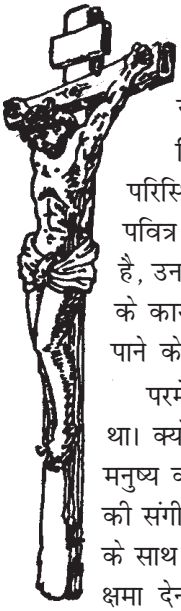

जिस दिन यीशु की मृत्यु हुई थी उस दिन से पहले की परिस्थिति क्या थी? परमेश्वर जो अनन्त और आत्मिक और पवित्र है, वह उन मनुष्यों से जिनसे वह अत्याधिक प्रेम करता है, उनके पाप के कारण उनसे अलग था। मनुष्य अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से दूर था, और वह अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये स्वयं कुछ भी करने में असमर्थ था।

परमेश्वर भी अपने पवित्र स्वभाव के कारण मनुष्य से दूर था। क्योंकि वह वहां नहीं रह सकता जहां पाप है। परन्तु तौभी मनुष्य के प्रति परमेश्वर का प्रेम चाहता था कि मनुष्य परमेश्वर की संगीत में आ जाए। पर कैसे? पवित्र परमेश्वर का पापी मनुष्य के साथ मेल कैसे हो सकता था? परमेश्वर का प्रेम तो मनुष्य को क्षमा देना चाहता था। परन्तु उसका न्यायिक स्वभाव पाप को दण्डित करना चाहता था।

मनुष्य स्वयं अपने पापों के बदले में कुछ देकर या कुछ करके पाप से अपना छुटकारा प्राप्त करने में असमर्थ था। इसलिये स्वयं परमेश्वर को ही एक ऐसा उपाय करना पड़ा था जिसके द्वारा मनुष्य के पापों का प्रायश्चित हो जाए, और मनुष्य को अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के साथ मेल करने का अवसर मिल जाए।

परमेश्वर का उपाय

इसलिये परमेश्वर की योजनानुसार **वचन** के लिये एक देह तैयार की गई थी। वह उस देह में जन्म लेकर लगभग तैंतिस वर्षों तक एक मनुष्य के रूप में मनुष्यों के साथ रहा था। फिर उसकी देह को क्रूस पर लटकाकर मृत्यु दण्ड दिया गया था, और इस प्रकार पाप का दाम हमेशा के लिये चुका दिया गया था। और उन सबके लिये जो क्षमा पाना चाहते थे, द्वार खोल दिया गया था। पाप से मुक्ति पाने का द्वार।

परन्तु, इस बात को ठीक तरह से समझने के लिये, हम कुछ बातों पर विचार करेंगे:

> पाप मनुष्य को न केवल शारीरिक रूप से ही अपवित्र करता है परन्तु आत्मिक रूप से भी अपवित्र बनाता है। पाप के कारण मनुष्य को न केवल शारीरिक दु:खों और मृत्यु का ही सामना करना पड़ता है, परन्तु पाप के कारण ही मनुष्य परमेश्वर से अलग है और इसलिये हमेशा की आत्मिक मृत्यु का सामना करेगा।

परमेश्वर का सच्चा न्याय उसे पाप को दण्डित करने के लिये बाध्य करता है।

इसीलिये **वचन** ने स्वर्गीय महिमा को छोड़कर पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में आकर तैंतिस वर्ष व्यतीत किए थे। और फिर उसने मृत्यु दण्ड अपनी देह पर उठाया था। हमारे पापों के लिये वह मारा गया था।

परन्तु, प्रश्न यह है, कि **वचन** तो सदा से वर्तमान है और उसका न कोई आदि है और न अन्त है, तो फिर उसके निकट तैंतिस वर्षों तक एक देह में होकर रहना क्या कोई बहुत बड़ी बात थी? और यद्यपि क्रूस का कष्ट अत्यन्त ही भयानक था, तौभी वह एक ऐसा साधन तो था जिसके द्वारा उसे फिर से उस देह के बाहर आकर वर्तमान रहने का अवसर मिल गया था। सो यदि बलिदान केवल इतना ही था, अर्थात् कुछ समय के लिये शारीरिक देह को पहनकर उसमें रहना और फिर बलिदान के द्वारा उसे त्यागकर, फिर से उसी महिमा-युक्त स्थान में पहुंचकर हमेशा के लिये वर्तमान रहना, तो फिर क्या

वह बलिदान केवल सांकेतिक था? केवल एक चिन्ह मात्र?

किन्तु, दूसरी ओर, पाप का भयानक परिणाम तो ऐसा विशाल था कि उसने मनुष्य को हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग और दूर कर दिया था। सो इतना भयानक और ऐसा विशाल परिणाम क्या केवल एक सांकेतिक बलिदान के द्वारा ही नाश किया जा सकता था?

इसके अतिरिक्त, परमेश्वर अपने लोगों से यह अपेक्षा करता है:

''...कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ।'' (रोमियों 12:1)।

सो यदि परमेश्वर हमसे ऐसा चाहता है कि हम अपने आप को शारीरिक और आत्मिक दोनों रूप में पूर्णत: उसे समर्पित कर दें, तो फिर एक सांकेतिक तथा शारीरिक बलिदान हमारे पापों की छुड़ौती के लिये किस प्रकार पर्याप्त हो सकता था?

अब कदाचित् कोई यह कहे कि, ''वह बलिदान इसलिये पर्याप्त था क्योंकि वह एक ईश्वरीय बलिदान था।'' पर क्या परमेश्वर वास्तव में मर सकता है? क्या परमेश्वर मरा था? नहीं। सो यदि मसीह का आत्मा नहीं मरा था, केवल वह देह मरी थी जिसे मरने के लिये तैयार किया गया था, तो फिर उस बलिदान का मूल्य क्या था?

जब एक तितली उस आवरण को त्यागकर उसमें से बाहर निकलती है जो उसे तब तक के लिये दिया जाता है जब तक कि वह एक सुन्दर शरीर न धारण कर ले, तो क्या उस आवरण का त्यागना एक बलिदान माना जा सकता है?

इसी प्रकार, यदि हमारे लिये मसीह का बलिदान केवल एक शारीरिक देह को त्यागने समान जैसा था, तो फिर उस बलिदान का क्या मूल्य था?

क्या आत्मा के उद्धार के लिये कोई शारीरिक बलिदान पर्याप्त हो सकता है? क्या कोई शारीरिक वस्तु आत्मिक वस्तु का स्थान ले सकती है? ऐसा सम्भव होना प्रतीत नहीं होता, क्योंकि शारीरिक वस्तुएं तो नाशमान हैं, परन्तु जो आत्मिक हैं वे वस्तुएं हमेशा के लिये हैं।

मृत्यु के बन्धन में

सो हम कहते हैं, और यह सच भी है, कि यीशु मसीह हमारे लिये मर गया था। परन्तु जिस प्रकार से बुखार आता है तो वह इस बात पर इशारा करता है कि शरीर के भीतर कोई रोग है, ऐसे ही मसीह की मृत्यु भी थी, जिसका अभिप्राय उसके भीतर घटनेवाली किसी बड़ी बात की ओर संकेत था। तो क्या थी वह बड़ी बात?

1. मृत्यु पाप की मजदूरी है। (रोमियों 6:23)।
2. 1 पतरस 2:24 में लिखा है, ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया।''
3. 2 कुरिन्थियों 5:21 के अनुसार, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।''

   ''...यहोवा ने हम सभों का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशायाह 53:6)।

जो लोग बाइबल पढ़ते हैं वे बाइबल में लिखी इन बातों से परिचित हैं। परन्तु इन सब बातों का अभिप्राय क्या है? हमारे पाप किस प्रकार मसीह के ऊपर स्थानान्तरित हो गए थे? किस प्रकार वह हमारे लिये पाप ठहराया गया था? किस प्रकार हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाते हैं?

क्या मसीह वास्तव में पापी बन गया था? या क्या इसका तात्पर्य केवल इस बात से है, कि जिस प्रकार से पुराने नियम के समय में पशुओं को पाप के लिये बलिदान किया जाता था, उसी प्रकार यीशु भी हमारे पापों के लिये बलिदान हो गया था?

नहीं, मसीह में कोई पाप नहीं था, उसने स्वयं कभी भी कोई पाप नहीं किया था। परन्तु तौभी, जो बलिदान उसने मानवता के पापों के लिये किया था, वह केवल एक देह का ही बलिदान नहीं था।

परन्तु पापियों के लिये उसके बलिदान के परिणाम-स्वरूप जब हम उसमें हो जाते हैं, तो परमेश्वर के लेखे में, उसके भीतर होकर, हम परमेश्वर की धार्मिक्ता बन जाते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने यह स्वीकार कर लिया था कि वह पाप ठहराया जाएगा और सारी मानवता के पाप उसके ऊपर रखे जाएंगे। क्यों? इसलिये, क्योंकि परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार उसके सामने केवल धार्मिकता ही आ सकती है, और पाप की मजदूरी निश्चय ही मृत्यु है। प्रत्येक मनुष्य के भीतर पाप है, इस कारण कोई भी मनुष्य उसके सामने नहीं आ सकता। तो फिर हम उसके संतान किस प्रकार बन सकते हैं? केवल मसीह में होकर ही, अर्थात् उसकी धार्मिकता के सम्पर्क में आकर ही हम परमेश्वर के निकट धर्मी बनते हैं। यह बात भी ध्यान देने योग्य है, कि यदि मसीह पाप न ठहराया जाता और यदि वह पवित्र परमेश्वर के पुत्र के समान हमारे बदले में न मरता तो फिर पाप दण्डित कैसे होता? और ऐसी स्थिति में परमेश्वर एक सच्चा न्यायी किस प्रकार ठहरता? ''हम सभों के पाप का बोझ उसी पर लाद दिया....'' अर्थात् परमेश्वर ने उसको हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिये दण्डित किया था। हमारे पापों का दाम उसने चुकाया था।

दाम किस प्रकार चुकाया गया था?

परन्तु यदि पाप मनुष्य को परमेश्वर के सम्मुख आने से रोकता है, तो फिर मसीह के ऊपर इसका क्या प्रभाव पड़ा था? आज मसीह परमेश्वर के साथ और उसके सम्मुख है, तौभी क्रूस पर जब वह चढ़ाया गया था तो हमारे सब पाप उसके ऊपर थे। तो यह किस प्रकार संभव था?

इस बात को समझने के लिये हम एक साधारण सा उदाहरण देखते हैं। मान लीजिए एक अति शक्तिशाली रसायन पदार्थ में आप किसी और रसायन की कुछ बूंदे टपका देते हैं, तो इसका परिणाम क्या होता है? रसायन की वे थोड़ी सी बूंदे उस शक्तिशाली रसायन पदार्थ में घुलकर लुप्त हो जाएंगी। पर ऐसा करने से उस रसायन पदार्थ पर भी कुछ प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा, और उसकी अपनी शक्ति जो वास्तव में पहले थी अब थोड़ी सी

अवश्य कमज़ोर पड़ जाएगी, अर्थात् वह शक्तिशाली पदार्थ अब उतना अधिक शक्तिशाली नहीं होगा, जितना वह पहले था।

इसी बात को ध्यान में रखकर अब हम इस प्रश्न पर विचार करेगें, कि मसीह ने किस प्रकार अपनी धार्मिकता से हमें धर्मी बनने का अवसर दिया है। जैसा कि हमने पहले देखा था, कि आरंभ में वह परमेश्वरत्व में परमेश्वर था। परन्तु मनुष्य बनने के लिये उसे अपने आप को शून्य बनाना पड़ा था। जैसे कि नीचे बने चार्ट में हम देखते हैं:

धार्मिकता ने पाप को निगल लिया

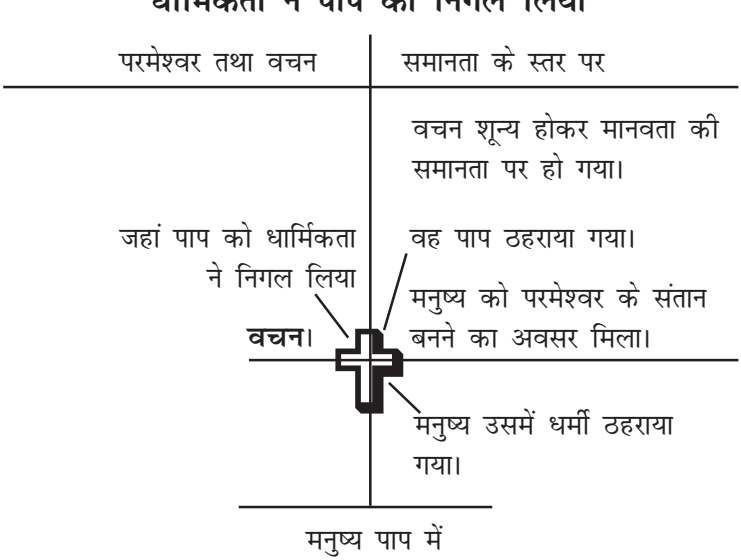

रहस्य का अर्थ

1 तीमुथियुस 3:16 में हम भक्ति के गम्भीर भेद के विषय में पढ़ते हैं:

''...वह जो शरीर में प्रकट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा....''

वह आत्मा में धर्मी ठहरा, इसका क्या अर्थ है? क्रूस पर जो बलिदान हुआ

था वह मनुष्य का भाई था, जिसने सारी मानवता के पापों को स्वयं अपने ऊपर ले लिया था। यद्यपि आत्मिक प्रायश्चित शारीरिक वस्तुओं से नहीं किया जा सकता। आत्मा की शुद्धि के लिये आत्मिक प्रायश्चित की आवश्यकता थी। वचन में जो विशेष ईश्वरीय गुण थे और जिनसे अपने आपको शून्य बनाकर वह मनुष्य के स्तर पर नीचे उतर आया था। अपने उन्हीं विशेष गुणों की विशाल पवित्रता के कारण वह इस योग्य बन गया था कि जब सारी मानवता के पाप उसके ऊपर रखे गए थे तो स्वयं उसकी अपनी पवित्रता ने मानवता के उन पापों को ढक दिया था जो मनुष्यों के विरोध में थे।

मसीह की धार्मिकता ऐसी विशाल थी कि उसके भीतर सारी मानवता के पाप समा गए थे, किन्तु फिर भी वह स्वयं परमेश्वर के लेखे में धर्मी ही था।

> ''क्योंकि....उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उनके उद्धार के कर्त्ता को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।'' (इब्रानियों 2:10)।

परन्तु क्योंकि वह हमारे लिये और हमारे स्थान पर पाप ठहराया गया था, और उसकी अपनी धार्मिकता ने हमारे पापों को निगल लिया था, जिससे कि हम परमेश्वर के निकट धर्मी ठहरें, इस कारण अब वह ईश्वरत्व में उस समानता के स्तर पर नहीं पहुंच सकता था जिस पर वह आरंभ में था। पर अब वह उसी स्तर पर बना रहेगा जिस पर वह मनुष्यों को पहुंचाने के उद्देश्य से स्वयं उतर आया था।

और यही वास्तव में उसका बलिदान था। और इस प्रकार से हमारे उद्धार के काम को पूरा किया गया था। यीशु मसीह ने सारी मानवता के पापों को अपने ऊपर लेकर, पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपना लहू बहाया था। अब वह प्रत्येक मनुष्य के लिये पाप से मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग बन गया था। परमेश्वर ने स्वयं मनुष्यों के पापों का दाम चुकाकर सारी मानवता के लिये पापों से मुक्ति पाने का उपाय अब सुनिश्चित कर दिया था।

मृत्यु के बाद

प्रभु यीशु ने कहा था, ''अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन जी उठे।'' (लूका 24:7)।

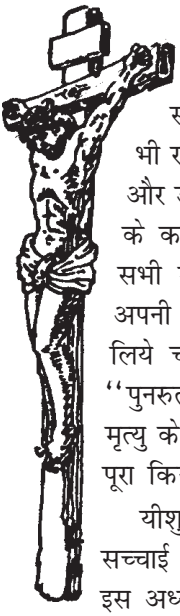

मनुष्यों ने समय-समय पर नाना प्रकार के धर्मों की स्थापना पृथ्वी पर की है। और अनेकों लोग उनमें आस्था भी रखते हैं। उन धर्मों के संस्थापक अच्छे मनुष्य हो सकते हैं, और उनमें से कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिन्होंने अपने विश्वास के कारण अपने आप को बलिदान कर दिया था। परन्तु उन सभी में और यीशु मसीह में एक विशेष अंतर यह है, कि अपनी मृत्यु के बाद वे अन्य सभी मनुष्यों के समान हमेशा के लिये चले गये थे। परन्तु यीशु मसीह ने अपने कहे अनुसार ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं...'' (यूहन्ना 11:25), अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन कब्र में से जी उठकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया था।

यीशु मसीह का मृत्यु के बाद जी उठना एक ऐसी ऐतिहासिक सच्चाई है जिसे किसी भी प्रकार नकारा नहीं जा सकता। किन्तु इस अध्ययन में हम मसीह के पुनरुत्थान पर नहीं परन्तु विशेष रूप से इस बात पर विचार कर रहे हैं कि यीशु मसीह जो हमेशा से परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था, किन्तु अब मृत्यु पर विजय प्राप्त करके जी उठने के बाद वह किस प्रकार वर्तमान है।

पुनरुत्थान में मसीह का स्वभाव

जिस प्रकार हमने इस विषय में देखा है, कि आदि से, जब तक कि उसने मनुष्य के पुत्र के रूप में जन्म नहीं लिया था, वचन स्वर्ग में परमेश्वर के साथ परमेश्वर था।

''परमेश्वर आत्मा है....'' (यूहन्ना 4:24)।

इसलिये वचन आत्मा था। क्योंकि वचन परमेश्वर था। परन्तु जब उसने अपने आप को शून्य बना दिया था, और देहधारी होकर वह एक मनुष्य बन गया था, तो वह एक मनुष्य के रूप में हो गया था। (इब्रानियों 2:14)। उसकी मृत्यु भी एक मनुष्य के समान हुई थी।

जब वह जी उठकर कब्र में से बाहर आया था, तो वह किस प्रकार आया था? एक वचन की तरह या आत्मा के सदृश्य? या एक मनुष्य के रूप में?

हमारे इस प्रश्न का उत्तर हमें लूका 24:36-43 में इस प्रकार मिलता है:

''वे ये बातें कह ही रहे थे कि वह आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ, और उनसे कहा, ''तुम्हें शांति मिले।'' परन्तु वे घबरा गए और डर गए, और समझे कि हम किसी भूत को देख रहे हैं। उसने उनसे कहा, ''क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मन में क्यों संदेह उठते हैं? मेरे हाथों और मेरे पांवों को देखो कि मैं वही हूं। मुझे छूकर देखो, क्योंकि आत्मा के हड्डी मांस नहीं होता, जैसा मुझ में देखते हो।''

यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ-पांव दिखाए। जब आनन्द के मारे उनको प्रतीति न हुई, और वे आश्चर्य करते थे, तो उसने उनसे पूछा, ''क्या यहां तुम्हारे पास, कुछ भोजन है?'' उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का टुकड़ा दिया। उसने लेकर उनके सामने खाया।''

सो वचन इस पृथ्वी पर एक मनुष्य की ही तरह रहा था, और एक मनुष्य की ही तरह मरा था, और एक मनुष्य की तरह ही फिर से ज़िन्दा हो गया था।

1यूहन्ना 3:2 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

''हे प्रियो अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। पर इतना जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।''

यहां हम दो बातें विशेष रूप से देखते हैं :

1. मसीह के दोबारा आने पर, उसमें और मनुष्य में जो एकता है वह बनी रहेगी।
2. जिस भी रूप में वह अब विद्यमान है, वैसे ही हम भी बन जाएंगे, अर्थात् भविष्य में हम उसी की समानता में होकर विद्यमान रहेंगे।

यहां से हमें एक और बात सीखने को मिलती है, और वह यह, कि हम उसी के समान हो जाएंगे: पर ऐसा कहीं लिखा नहीं मिलता कि तब हम परमेश्वर के समान होंगे।

मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा

इस बात का प्रमाण कि एक दिन हम सब जी उठेंगे हमें स्वयं यीशु मसीह के जी उठने में ही मिलता है:

> ''परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ।'' (1 कुरिन्थियों 15:20)।

जैसे कि कुलुस्सियों 1:18 में भी हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि वह ''मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा है।'' यीशु को ''परमेश्वर का पहलौठा'' अर्थात् पहला जन्मा पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है, अर्थात् जिसके द्वारा अन्य वे सभी लोग भी परमेश्वर के संतान बन सकते हैं जो यीशु की ही तरह परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, इसलिये यीशु सब जी उठनेवालों में पहलौठा है। क्योंकि उसके वापस आने पर सब जी उठेंगे, और वे जो उसके द्वारा परमेश्वर के संतान है, वे हमेशा उसके साथ रहेंगे। यह सच है, कि यीशु के पुनरुत्थान से पहले भी परमेश्वर की सामर्थ्य से कुछ अन्य लोग जी उठे थे, परन्तु कुछ समय पश्चात् वे सभी फिर से मर गए थे। किन्तु, यीशु क्योंकि हमेशा के लिये जी उठा था, जैसे कि हम सब भी उसके आने पर जी उठेंगे, इसी कारण से वह सब जी उठनेवालों में पहलौठा है।

1 कुरिन्थियों 15:51, 52 के अनुसार:

''...हम सब नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे, और यह क्षण भर में, पलक मारते ही, अन्तिम तुरही फूंकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।''

''यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा, जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।'' (रोमियों 8:11)।

''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है: और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल कर देगा।'' (फिलिप्पियों 3:20, 21)।

हमारे इस विश्वास का कारण, कि एक दिन हमारा भी पुनरुत्थान होगा और हमारी देह अविनाशी दशा में जी उठेंगी और बदल जाएंगी, स्वयं यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। जैसा वह है, वैसे ही हम भी हो जाएंगे। इसका अभिप्राय यह है कि उसकी मृत्यु के बाद भी मनुष्य के साथ उसका सम्बंध विच्छेद नहीं हुआ है।

वह किसकी सामर्थ्य से जी उठा था?

मसीह के पुनरुत्थान के सम्बंध में बाइबल से हमें और क्या सीखने को मिलता है?

रोमियों 8:11 से हमें यह सीखने को मिलता है कि पुनरुत्थान परमेश्वर की सामर्थ्य से हुआ था:

''यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिलाया....''

इसी बात पर यूहन्ना 10:17, 18 में और प्रकाश डाला गया है:

''पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझसे छीनता नहीं वरन् मैं उसे आप ही देता हूं। मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर से ले लेने का भी अधिकार है, यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।''

आदि में वचन का अधिकार सम्पूर्ण जीवन पर था, क्योंकि वही परमेश्वर, परमेश्वरत्व में, परमेश्वर के साथ था। पर अब वह यीशु मसीह था, परमेश्वर का पुत्र था, मनुष्य के रूप में था, किन्तु अब भी जीवन पर उसका अधिकार था, क्योंकि यह अधिकार उसे पिता से मिला था। (यूहन्ना 5:26)। रोमियों 8:11 तथा यूहन्ना 10:17 में इस बात पर कि किसने यीशु को जिलाया था कोई विरोधाभास नहीं है; क्योंकि यीशु ने स्वयं ही कहा था कि स्वयं अपने पुनरुत्थान पर अधिकार उसे सौंपा गया था।

''यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।''

पुनरुत्थान के पश्चात् यीशु की स्थिति

परमेश्वर द्वारा यीशु की महिमा

यूहन्ना 17:5 में हम पढ़ते हैं कि वहां यीशु ने प्रार्थना करके कहा था:

''अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी।''

यह प्रार्थना यीशु ने उस रात की थी जब वह पकड़वाया गया था। क्या यीशु द्वारा यह कहने का तात्पर्य इस बात से था कि जब वह परमेश्वर के पास वापस जाएगा तो परमेश्वरत्व में उसकी वही स्थिति होगी जिस में वह अपने आपको शून्य बनाकर पृथ्वी पर आने से पहले था? क्या परमेश्वरत्व में उसे वही समानता का स्तर प्राप्त हो जाएगा?

यह तो सही है, कि यीशु ने कहा था, कि, ''तू मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले मेरी तेरे साथ थी।'' हाँ, महिमा तो वही होगी, पर अन्तर इस बात का होगा कि अब जो महिमा उसकी होगी वह

उसे पिता की ओर से दी जाएगी, अर्थात् वह नहीं होगी जो स्वयं उसकी और उसमें थी।

उसे राजाओं का राजा बनाया गया है

बाइबल में यीशु को 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु' कहकर सम्बोधित किया गया है। यीशु ने मानवता के पापों के लिये अपना बलिदान दिया था। और मृत्यु को हराकर वह फिर जी उठा था। फिर वह स्वर्ग में वापस चला गया था। पर क्या स्वर्ग में अब वह उसी अवस्था में वर्तमान रहेगा जिसमें वह उस समय था जब उसने अपने आप को शून्य नहीं बनाया था? मत्ती 28:18 में हम पढ़ते हैं, कि यीशु ने अपने चेलों से इस प्रकार कहा था,

''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।''

इससे हम यह देखते हैं कि अब यीशु के पास जो सारा अधिकार है, वह उसे दिया गया है। निश्चय ही, वह स्वर्ग में और पृथ्वी पर राज्य करता है। पर किस प्रकार? उस अधिकार से जो उसे परमेश्वर ने दिया है।

परमेश्वर द्वारा महिमा

फिलिप्पियों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में हमें यीशु के बारे में इस प्रकार मिलता है, कि उसने अपने आप को शून्य कर दिया था, और वह मनुष्य की समानता में हो गया था, फिर उसने अपने आपको दीन बनाकर, तथा परमेश्वर की आज्ञा मानकर क्रूस की मृत्यु को स्वीकार कर लिया था। और फिर, 9-11 पदों में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> ''इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।''

सो यीशु को सब नामों से श्रेष्ठ नाम दिया गया है, उसके आगे सब

घुटना टेकेंगे। और वह सबसे बड़ा और सबसे श्रेष्ठ है। पर क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने उसे अति महान किया था, और उसको वह ओहदा और वह नाम दिया था जो सबसे आला और श्रेष्ठ है।

उसे एक राज्य दिया गया है

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के पहले अध्याय में हमें उस समय का वर्णन मिलता है जब यीशु मसीह का स्वर्गारोहण हुआ था। यीशु के चेलों ने उसे अंतिम बार जब देखा था तो उसका वर्णन हमें इन शब्दों में, प्रेरितों. 1:9 में मिलता है:

> ''यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया।''

दानिय्येल 7:13-14 में इसी स्वर्गीय दृश्य का वर्णन हमें इन शब्दों में मिलता है:

> ''मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरे।''

मत्ती 28:18, फिलिप्पियों 2:9-11 तथा दानिय्येल 7:13-14 में एक ही सी बात कही गई है। इन सभी स्थानों पर यीशु मसीह के विषय में हम यह पढ़ते हैं, कि उसे उसके राज्य का राजा, और महान और सबसे श्रेष्ठ बताया गया है, और उसे स्वर्ग में और पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया गया है। पर यह सब कुछ उसे परमेश्वर की ओर से मिला है।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि जो निश्चय वचन ने अपने विषय में उस समय किया था जब उसने अपने आपको शून्य बनाकर स्वयं अपने उस सब अधिकार और सामर्थ्य से अपने आपको वंचित कर लिया था जो

वास्तव में उसी के थे, और वह मनुष्य के रूप में होकर, परमेश्वर के पुत्र के समान, मनुष्य का भाई बनकर, तथा सब बातों में परमेश्वर पर निर्भर होकर, पृथ्वी पर आ गया था, तो उस निश्चय और त्याग की सीमा केवल वहीं तक नहीं थी जब उसने मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मृत्यु दण्ड प्राप्त किया था। परन्तु आज भी वही प्रभु जो मृत्यु को हराकर फिर से जी उठा था, और जो अपने राज्य का राजा है, वह अपनी सारी सामर्थ्य और अपने सब अधिकारों के लिये परमेश्वर पर ही आश्रित है, जिससे उसे सब कुछ मिलता है। आज भी परमेश्वर पिता है और यीशु पुत्र है। इसलिये लिखा है:

> ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् यीशु मसीह जो मनुष्य है।'' (1 तीमुथियुस 2:5)।

उसका शारीरिक बलिदान तो यद्यपि उसकी मृत्यु के पश्चात् सम्पूर्ण हो गया था, पर जिस प्रकार हमारे पापों का दण्ड वास्तव में आत्मिक और अनन्त (अर्थात् परमेश्वर से दूर होकर नरक में) होना चाहिए था, उसी प्रकार यीशु का बलिदान भी आत्मिक और अनन्त था। इसलिये, अपने पुनरुत्थान के बाद, उसने परमेश्वरत्व में प्रवेश करके फिर से अपने लिये उस स्थान और अधिकार को प्राप्त नहीं कर लिया था जो आदि से स्वयं उसका था। और यदि ऐसा वास्तव में होता, तो यह इस प्रकार की बात होती जैसे कोई व्यक्ति किसी दुकान में जाकर कोई वस्तु मोल लेता है और काउंटर पर उसका दाम चुकाने के लिये पैसे रख देता है, पर फिर वह उस वस्तु को लेकर जाते हुए अपने पैसे भी काउंटर से उठा लेता है! परन्तु मसीह ने ऐसा नहीं किया था, पर उसने वास्तव में अपने प्राणों को देकर पाप से मनुष्य की मुक्ति का दाम चुकाया था, और वह दाम केवल उसकी मृत्यु तक ही सीमित नहीं था, पर उसने अपने आपको उन सब अधिकारों से भी वंचित कर लिया था जो परमेश्वरत्व में होते हुए आरंभ में स्वयं उसी के थे, क्योंकि उसने स्वेच्छा से, अपनी मर्जी से पृथ्वी पर आने से पहले अपने आपको शून्य कर दिया था।

हमारी प्रतिक्रिया

अभी तक अपने अध्ययन में हमने यह देखा है, कि परमेश्वर ने पाप से

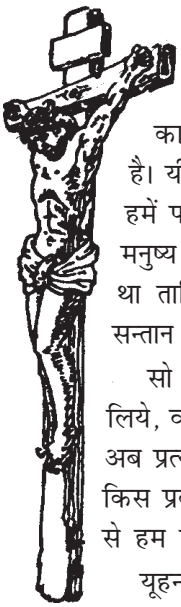

मनुष्य को मुक्ति दिलाने के लिये क्या कुछ किया है। पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से दूर था, और दूर है, परन्तु परमेश्वर ने वह कार्य किया है जिसके कारण अब मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है। यीशु मसीह ने हमारे पापों के लिये स्वयं ही दण्ड उठाकर हमें पाप के दण्ड से मुक्त कराने का उपाय कर दिया है। वह मनुष्य के रूप में परमेश्वर का पुत्र होकर हमारे बीच में आया था ताकि हम भी उसके द्वारा, उसी की तरह, परमेश्वर की सन्तान बन जाएं।

सो परमेश्वर ने जो करना था, हमें पाप से मुक्त कराने के लिये, वह उसने कर दिया है। परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि अब प्रत्येक मनुष्य को पाप से मुक्ति मिल गई है? यदि नहीं, तो किस प्रकार मनुष्य को पाप से मुक्ति मिलती है? व्यक्तिगत रूप से हम में से प्रत्येक को क्या करने की आवश्यकता है?

यूहन्ना 6:45 में लिखा है,

''...जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है।''

परन्तु संसार में बहुतेरे लोग परमेश्वर पिता के संदेश से अपरिचित हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 2:14 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं।

''उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया....''

सो, पिता आज अपने संदेश अर्थात् सुसमाचार के द्वारा लोगों को अपने पास बुलाता है। सुसमाचार क्या है? 1 कुरिन्थियों 15:3, 4 में सुसमाचार के बारे में हमें इस प्रकार मिलता है:

''पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।''

समर्पण

कुछ लोग परमेश्वर के संदेश को सुनकर उस पर ध्यान नहीं देते।

परन्तु कुछ अन्य ऐसे भी होते हैं जिनके हृदय में वह समा जाता है। वे परमेश्वर के सुसमाचार को सुनकर प्रसन्न होते हैं और अपने आपको परमेश्वर को दे देने का निश्चय करते हैं।

इस प्रकार अपने मन को बदलकर वे ऐसा विश्वास करने लगते हैं, कि क्योंकि अब उन्होंने मसीह में विश्वास कर लिया है, तो इसलिये अब परमेश्वर ने उनके सारे पाप क्षमा कर दिये हैं और उनका परमेश्वर के आत्मिक परिवार में नया जन्म हो गया है।

वास्तव में, मन में और विचारों में बदलाव आना बड़ा ही ज़रूरी और बड़ा ही अच्छा है। किसी काम को करने से पहले निश्चय कर लेना बड़ा ही आवश्यक होता है। हमने प्रभु यीशु के बारे में भी देखा था कि गतसमनी के बाग़ में यीशु के सामने एक गम्भीर चुनाव था। और यीशु ने यह निश्चय किया था कि चाहे जो भी हो मैं केवल वही करूंगा जो पिता की इच्छा के अनुसार होगा।

ऐसे ही परमेश्वर की इच्छा को चुनने के लिये हम सबके सामने भी एक चुनाव होता है। यीशु को चुनना था, कि क्या परमेश्वर की इच्छा को मानकर हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये वह क्रूस की मृत्यु स्वीकार करे या उससे इन्कार कर दे? ठीक ऐसी ही बात हममें से हर एक के सामने भी होती है। क्या हम परमेश्वर की बात मानें या न मानें। हमें अपनी इच्छा को परमेश्वर के सामने समर्पित करने की आवश्यकता होती है। और जिस प्रकार यीशु ने हमारे पापों को लेकर क्रूस पर चढ़ जाना अपने लिये चुन लिया था, ऐसे ही हमारे लिये भी आवश्यक होता है कि हम पाप से मुंह मोड़कर अपने आप को उसे सौंप दें और उसकी इच्छा को मानें।

मसीह ने गतसमनी के बाग़ में बैठकर केवल अपने मन में एक निश्चय ही नहीं बनाया था, पर उसने यह संकल्प भी किया था कि वह परमेश्वर की बात मानेगा, और ऐसा ही वास्तव में उसने किया भी था। ठीक ऐसे ही प्रत्येक मनुष्य को भी करने की आवश्यकता है। केवल मन में विश्वास करके यह मान लेना कि परमेश्वर ने मुझसे ऐसा महान प्रेम रखा कि उसने अपने पुत्र यीशु को मेरे पापों के बदले में बलिदान कर दिया था, इसलिये अब मेरे सब पाप क्षमा हो गए हैं, उद्धार पाने के लिये पर्याप्त नहीं है।

जिस प्रकार मसीह केवल विश्वास और निश्चय पर ही नहीं रुक गया था, पर उसने अपने निश्चय को परमेश्वर की आज्ञा मानकर व्यक्त भी किया था, ऐसे ही हमें भी अपने व्यक्तिगत निर्णय के आधार पर ही ऐसा नहीं मान लेना चाहिए कि परमेश्वर ने मसीह के कारण मेरे सब पाप क्षमा कर दिए हैं। किन्तु मसीह के साथ पाप के लिये मरना एक मरे हुए व्यक्ति के समान और गाड़े जाना और नए जीवन में प्रवेश करने के लिये उसके साथ जी उठना भी अति आवश्यक है। क्योंकि बाइबल हमें ऐसा ही सिखाती है।

मसीह के साथ मरना

मसीह के साथ मरने का अर्थ क्या है? रोमियों 6:17,18 में प्रेरित ने लिखकर कहा था:

> ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे अब मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।''

इसलिये जब कोई परमेश्वर के इस सुसमाचार को सुनता है कि उसका पुत्र मसीह हमारे लिये मर गया था और गाड़ा गया था और फिर जी उठा था, तो उसे चाहिए कि वह मसीह में विश्वास लाकर अपने मन को सभी अनुचित कामों से फिराए। और फिर उस उपदेश के सांचे में ढाला जाए जो मनुष्य के उद्धार के सुसमाचार का उपदेश है। उस उपदेश के सांचे में अर्थात् मारे जाने और गोड़े जाने और जी उठने की समानता में- हम किस

प्रकार ढाले जाते हैं? रोमियों 6:3-11 में इसी बात को इन शब्दों में दर्शाया गया है:

''क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व मे न रहें। क्योंकि जो मर गया वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा। इसलिये यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएंगे भी। क्योंकि यह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं; उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं हाने की। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिये जीवित है।

ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।''

इसलिये, यदि हम अपने लिये, यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं, तो अवश्य है कि हम बपतिस्मा लेकर अपने पापों के लिये मसीह के साथ मर जाएं, और उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से उसके साथ गाड़े जाएं और फिर बपतिस्मा लेकर जल में से बाहर निकलकर एक नए जीवन की चाल चलने के लिए जी उठें। यह बड़ी ही महत्त्वपूर्ण और आवश्यक बात है कि हम व्यक्तिगत रूप से इस बात के महत्त्व को समझें कि यदि कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेकर मसीह के साथ उसकी मृत्यु और उसके गाड़े जाने की समानता में उसके

साथ एक नहीं होता है तो वह नए जीवन की चाल चलने के योग्य नहीं बन सकता।

नए जन्म के द्वारा ''नया मनुष्य''

सो इन सब बातों से हम क्या सीखते हैं? यह, कि ''पुराने मनुष्य'' की मृत्यु के पश्चात् ही एक नया जन्म होता है। जिस प्रकार यीशु मसीह ने कहा था,

> ''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' (यूहन्ना 3:3-5)।

जिस व्यक्ति का नया जन्म होता है, उसके बारे में बाइबल कहती है:

> ''इसलिये यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।'' (2 कुरिन्थियों 5:17)।

बपतिस्मा लेना इतना अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

बपतिस्मा लेने के विषय में कदाचित् कोई पूछे, कि, ''बपतिस्मा लेना ज़रूरी क्यों है? क्योंकि यह तो केवल एक धर्म-विधि ही है, और यदि ऐसा वास्तव में है, तो फिर इसे इतना अधिक आवश्यक क्यों बताया गया है कि बपतिस्मा लिये बिना कोई जन परमेश्वर की संतान बन ही नहीं सकता?''

इस प्रकार के प्रश्नों पर विचार करना और इनके सही जवाब जानना बड़ा ही ज़रूरी है, क्योंकि केवल तभी हम इस महत्त्वपूर्ण शिक्षा के अर्थ को वास्तव में ठीक से समझ पाएंगे।

यह सच है, कि पुराने नियम के समय में उन लोगों को अनेकों विधियों को मानने की आज्ञा दी गई थी, क्योंकि विधियों को मानने के द्वारा उन लोगों को सिखाया गया था कि वे परमेश्वर की आज्ञा मानना सीखें। और यह भी सच है, कि नया नियम हमें यह शिक्षा देता है कि हम नाना प्रकार की विधियों को मानना छोड़कर आत्मा और सच्चाई के साथ परमेश्वर की उपासना करें। तो फिर मरकुस 16:16 में हम यूं क्यों पढ़ते हैं, कि,

''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा....''

यदि बपतिस्मा लेना केवल एक धर्म-विधि मात्र ही है, तो उसे उद्धार पाने के साथ क्यों जोड़ा गया है?

वास्तव में, बपतिस्मा लेने का तात्पर्य समर्पण से है। जिस प्रकार यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा इस बात को वास्तव में प्रमाणित कर दिया था कि वह सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित है, और प्रत्येक मनुष्य का मुक्तिदाता है। उसी तरह से उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ एक होकर हम अपने आपको उसे समर्पित करके उसे अपना उद्धारकर्त्ता बना लेते हैं। जैसे कि अभी हमने पढ़ा था, कि जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं। अर्थात् बपतिस्मा लेकर हम संसार के लिये मर जाते हैं। जब तक मसीह क्रूस पर मरा नहीं था तब तक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित नहीं हुआ था। और ऐसे ही जब तक मनुष्य उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेकर उसके साथ मर नहीं जाता तब तक वह अपने पुराने मनुष्यत्व में ही बना रहता है।

मसीह मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर वास्तव में मर गया था। परन्तु हमें अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये शारीरिक रूप से मरने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है, वह हमारा छुटकारा है। परन्तु कब व्यक्तिगत रूप से वह हमारे लिये हमारे पापों का प्रायश्चित, हमारा छुटकारा और हमारा मुक्तिदाता बनता है? परमेश्वर ने यह ठहराया है, कि जब हम विश्वास लाकर बपतिस्मा लेते हैं तो हम उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं, और उस मृत्यु का बपतिस्मा लेकर हम उसके साथ गाड़े जाते हैं, और जैसे वह पिता की महिमा के लिये मरे हुओं में से जिलाया गया था, उसी प्रकार हम भी बपतिस्मे के जल में से बाहर आकर एक नए जीवन की चाल चलने का निश्चय करते हैं। अर्थात् यहां से मसीही जीवन का आरंभ हो जाता है।

बपतिस्मा लेना इसलिये किसी विधि मात्र को मानने के समान नहीं है। गतसमनी में बैठकर जिस प्रकार यीशु ने यह निश्चय किया था कि

वह परमेश्वर की आज्ञा मानकर क्रूस के ऊपर अपनी मृत्यु के द्वारा सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित करेगा, उसी प्रकार से प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराकर हम मसीह के पीछे चलने का निश्चय करते हैं। और जिस प्रकार मसीह ने वास्तव में क्रूस पर चढ़कर मानवता के पापों का प्रायश्चित मृत्यु दण्ड प्राप्त करके किया था, उसी तरह से जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो हम अपने पुराने मनुष्यत्व को मरा हुआ जानकर बपतिस्मे के जल के भीतर गाड़ देते हैं, और जल की उस कब्र में से बाहर निकलकर एक 'नए जन्मे' मनुष्य का सा जीवन व्यतीत करना आरंभ कर देते हैं।

बाइबल में इस सच्चाई को बड़ी ही स्पष्टता से दर्शाया गया है। तौभी अनेकों लोगों के लिये आज यह एक बहस का मुद्दा बनकर रह गया है। अधिकतर लोग, और बहुतेरे प्रचारक भी बपतिस्मा लेना आवश्यक ही नहीं समझते। वे कहते हैं, कि उद्धार या मुक्ति पाने के लिये बपतिस्मा लेना ज़रूरी नहीं है। पर क्यों लोग ऐसा मानते और सिखाते हैं, जबकि बाइबल में बड़ी ही स्पष्टता से दर्शाया गया है कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक है?

परमेश्वर तथा शैतान दोनों ही मनुष्य की आत्मा प्राप्त करना चाहते हैं

वास्तव में दो आत्मिक शक्तियां हैं जो प्रत्येक मनुष्य के हृदय पर राज्य करना चाहती हैं, एक है परमेश्वर और दूसरा है शैतान। परमेश्वर हम सबको स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है; पर शैतान हम सबको परमेश्वर से हमेशा के लिये दूर रखना चाहता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा यह सम्भव कर दिया है कि उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर हम उसके द्वारा अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। जब हम परमेश्वर के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाते हैं, और अपना मन प्रत्येक बुराई से फिराकर मसीह को सबके सामने मानने का निश्चय करते हैं, तो हम प्रत्यक्ष रूप में यह प्रकट करते हैं कि हम मसीह के पीछे

चलने के लिये तैयार हैं। परन्तु जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो हमारा स्थानांतरण हो जाता है, अर्थात् हम संसार को छोड़कर मसीह के राज्य में शामिल हो जाते हैं।

शैतान यह नहीं देखता है कि हम परमेश्वर में कितना अधिक विश्वास करते हैं, या कितनी अधिक बाइबल पढ़ते हैं। उसे इस बात की भी चिन्ता नहीं रहती कि क्यों हम परमेश्वर से प्रार्थनाएं कर रहे हैं या धर्म के अन्य अनेकों काम कर रहे हैं। पर वह इस बात के लिये बड़ा ही चौकस और चौकन्ना है, कि कहीं कोई व्यक्ति परमेश्वर की उस आज्ञा का पालन न कर ले जिसे मानकर मनुष्य का नया जन्म परमेश्वर के आत्मिक परिवार में हो जाता है। इसीलिये वह लोगों के मनों में इस विषय पर संदेह पैदा करता है। और हर एक तरह के लोग: साधारण, पढ़े-लिखे विद्वान, प्रचारक, विश्वासी, सभी लोग उसके निशाने पर रहते हैं। इसी कारण से, अधिकतर लोग यह मानने से इन्कार कर देते हैं कि बपतिस्मा लेना उद्धार पाने के लिये आवश्यक है। शैतान नहीं चाहता कि लोग यीशु की आज्ञा को मानकर, और जल और आत्मा से नया जन्म प्राप्त करके, परमेश्वर के आत्मिक घराने में शामिल हो जाएं इसी कारण से संसार भर में बपतिस्मा लेने के विषय में इतना अधिक वाद-विवाद और संदेह व्याप्त है।

परिवार का चुनाव

शारीरिक रूप में जब किसी का जन्म होता है तो वह उसी परिवार का एक अंग बन जाता है जिसमें उसका जन्म होता है। इसमें चुनाव नहीं किया जा सकता। अर्थात्, अपने व्यक्तिगत चुनाव के आधार पर कोई किसी परिवार में जन्म नहीं लेता है।

किन्तु आत्मिक रूप से हम सबके पास यह अधिकार होता है कि हम किस परिवार में शामिल होना चाहते हैं, परमेश्वर के परिवार में या फिर शैतान के परिवार में। परन्तु केवल मन में यह निश्चय कर लेने से कि मैं परमेश्वर के परिवार में शामिल होना चाहता हूं, कोई परमेश्वर के आत्मिक परिवार का अंग नहीं बन जाता। पर उसके परिवार में भी हम जन्म लेकर

ही शामिल होते हैं, और इसी को 'नया जन्म' कहते हैं, जो जल और आत्मा से, होता है।

इसी आत्मिक जन्म के बारे में 1 पतरस 1:22, 23 तथा 2:1, 2 में और अच्छी तरह से समझाकर इस प्रकार लिखा गया है:

''अत: जबकि तुमने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है....क्योंकि तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है....इसलिये....नए जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।''

''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।'' (यूहन्ना 1:12, 13)।

''क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है.... और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस हो.... और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है' हमारे हृदयों में भेजा है। इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।'' (गलतियों 3:26, 27, 29; 4:6, 7)।

मसीह मनुष्य का भाई

परमेश्वर और मसीह के मध्य आज भी पिता-पुत्र का सम्बंध वर्तमान है। और हमारा भाईचारा मसीह के साथ होने के कारण मसीह के द्वारा हम भी परमेश्वर के संतान होने का अधिकार रखते हैं।

''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं; और यदि संतान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके संग दुख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं।'' (रोमियों 8:16, 17)।

''क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं सब एक ही मूल से हैं; इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता.... इसलिये जबकि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे उन्हें छुड़ा ले.... इस कारण उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाईयों के समान बने; जिससे वह उन सब बातों में जो परमेश्वर से सम्बंध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित करे।'' (इब्रानियों 2:11, 14, 15, 17)।

''परन्तु मसीह पुत्र के समान परमेश्वर के घर का अधिकारी है; और उसका घर हम हैं... क्योंकि हम मसीह के भागीदार हुए हैं.....'' (इब्रानियों 3:6, 14)।

जिस प्रकार मसीह अपने आपको शून्य बनाकर मनुष्य के स्वभाव में हो गया था, उसी प्रकार उसके भाई भी उसके समान बनकर उसके आत्मिक स्वभाव के भागीदार बन जाते हैं।

''क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ।'' (2 पतरस 1:3, 4)।

''और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।'' (इफिसियों 3:19)।

परमेश्वर चाहता है, कि वे लोग जो उससे प्रेम करते हैं,

''....वे उसके पुत्र के स्वरूप में हों....'' (रोमियों 8:29)।

''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह मसीह के अंग हैं?.... और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।'' (1 कुरिन्थियों 6:15, 17)।

इस प्रकार, इन सब बातों से हमें यह सीखने को मिलता है, कि प्रभु यीशु जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था, अब वह स्वर्ग पर वापस चला गया है। वह परमेश्वर का पुत्र है, और वही मनुष्य का पुत्र भी है। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच में हमारा मध्यस्थ है। उसी के द्वारा परमेश्वर तक हमारी पहुंच होती है। अर्थात परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र साधन केवल वही है।

यादगार

मसीही जीवन में कुछ अन्य आवश्यक बातों के साथ प्रभु-भोज का भी एक बहुत बड़ा महत्व है। यद्यपि अकसर लोग प्रभु-भोज को केवल एक विधि या रीति की ही तरह लेते हैं, परन्तु वास्तव में यह एक यादगार का भोज है, और मसीही आराधना में इसका एक प्रमुख स्थान है।

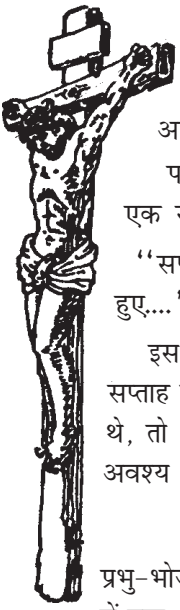

पहली शताब्दी के मसीही लोगों का वर्णन करके बाइबल एक स्थान पर इस प्रकार कहती है:

''सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए....'' (प्रेरितों 20:7)।

इस प्रकार हमारा ध्यान इस बात पर दिलाया गया है, कि जब सप्ताह के पहले दिन मसीही जन आराधना के लिये एकत्रित होते थे, तो प्रभु-भोज में भाग लेकर वे प्रभु यीशु के बलिदान को अवश्य याद करते थे।

पुराने नियम का पर्व

प्रभु-भोज की ही तरह, परमेश्वर के लोग पुराने नियम के समय में एक अन्य यादगार का भोज मानते थे, उसे फसह का पर्व कहा जाता था। प्रत्येक वर्ष फसह का पर्व मनाकर यहूदी लोग मिस्र के दासत्व से छुटकारा पाने के दिन को याद करते थे। इसी पर्व के सम्बंध में परमेश्वर ने मूसा के द्वारा सब इस्राएलियों को आज्ञा देकर इस प्रकार कहा था,

> ''इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने-अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे एक-एक मेम्ना ले रखो... तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और एक वर्ष का नर हो... इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें।

तब वे उसके लहू में से कुछ लेकर जिन घरों में मेम्ने को खाएंगे उनके द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएं। और वे उसके मांस को उसी रात आग में भूंजकर अखमीरी रोटी और कड़वे साग-पात के साथ खाएं.... और उसके खाने की यह विधि है: कमर बांधे, पांव में जूती पहने और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना वह तो यहोवा का पर्व होगा। क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में होकर जाऊंगा और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सबके पहलौठों को मारुंगा और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा, मैं यहोवा हूं।

और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे लिये चिन्ह ठहरेगा, अर्थात् उस लहू को देखकर मैं तुम को छोड़ जाऊंगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नष्ट न होगे। और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा....'' (निर्गमन 12:1-14)।

पर्व की विशेषताएं

फसह के पर्व के बलिदान में तथा पुराने नियम के समय में पाप के लिये किए जानेवाले बलिदानों में कुछ विशेषताएं पाई जाती थीं।

1. पाप के लिये जो बलिदान किया जाता था उसे फाटकों के बाहर, परमेश्वर द्वारा निश्चित किए स्थान पर ही किया जा सकता था। (व्यवस्थाविवरण 16:5, 6)।
2. बलिदान किए जानेवाले पशु की एक भी हड्डी नहीं तोड़ी जाती थी। (गिनती 9:12)।
3. होमबलियों के अतिरिक्त, उन्हें आज्ञा देकर कहा गया था, ''...एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे तुम्हारे लिये प्रायश्चित हो।'' (गिनती 28:22)।
4. उनके बलिदान निर्दोष होने आवश्यक थे। (गिनती 28:19)।

5. अखमीरी रोटी को वैसे ही बनाना आवश्यक था जैसे कहा गया था। (गिनती 28:20)।

परछाईं समान इन बलिदानों का मसीह में पूरा होना

इस्राएलियों द्वारा दिए गए ये सब बलिदान, बाद में मसीह के आने पर उसके द्वारा दिए गए बलिदान के पूर्व किए गए, परछाईं मात्र बलिदान ठहरे थे। 1कुरिन्थियों 5:7 में लिखा है,

''क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है।''

1. जिस प्रकार इस्राएली उस समय मिस्र के दास्तव में थे, उसी प्रकार, सब मनुष्य भी पाप के दास्तव में हैं।
2. फसह के समय बलिदान हुए मेम्ने के लहू का स्थान परमेश्वर के पुत्र के लहू ने ले लिया था।
3. पृथ्वी पर जो कोई भी मनुष्य उस लहू के भीतर है वह परमेश्वर के न्याय के दिन उसी प्रकार बच जाएगा जैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को उस समय बचाया था और मिस्र के लोगों को दण्डित किया था।

   ''....वह हमसे प्रेम रखता है और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।'' (प्रकाशितवाक्य 1:5)।

4. हमारे लिये बलिदान फाटक के बाहर किया गया था।

   ''क्योंकि जिन पशुओं का लहू महायाजक पाप-बलि के लिये पवित्र स्थान में ले जाता है, उनकी देह छावनी के बाहर जलाई जाती है। इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दु:ख उठाया।'' (इब्रानियों 13:11,12)।

5. यीशु की भी कोई हड्डी, बलिदान के मेम्ने ही की तरह, नहीं तोड़ी गई थी:

   ''परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगे न तोड़ीं.... ये बातें इसलिये हुई कि पवित्र शास्त्र में जो

कहा गया था वह पूरा हो, 'उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।''' (यूहन्ना 19:33, 36)।

6. मसीह हमारे पापों के बदले में बलिदान हुआ था, वह हमारे पापों के लिये एक निर्दोष बलिदान था,

''तो मसीह का लहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।'' (इब्रानियों 9:14)।

पर्वों के उद्देश्य

फसह का पर्व मनाने तथा अपने पापों के लिये पशुओं के बलिदान चढ़ाने के द्वारा न केवल उन लोगों को इस बात की याद दिलाई जाती थी कि परमेश्वर किस प्रकार उनको मिस्र के दासत्व में से निकालकर लाया था, पर उनके द्वारा परमेश्वर उन लोगों को यह भी निरन्तर दर्शा रहा था कि निकट भविष्य में यीशु मसीह, परमेश्वर का मेम्ना जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को अपने आपको बलिदान करेगा।

ऐसे ही आज जब हम प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन को प्रभु-भोज में भाग लेकर मसीह के बलिदान को याद करते हैं, तो न केवल इसके द्वारा हमें इस बात की याद दिलाई जाती है कि क्रूस पर उस दिन क्या घटा था जब यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान हुआ था, पर हमें यह भी याद दिलाया जाता है कि एक दिन वह फिर वापस आएगा।

''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए प्रचार करते हो।'' (1 कुरिन्थियों 11:26)।

प्रभु-भोज का आरंभ

प्रभु-भोज का आरंभ किस प्रकार हुआ था? इस विषय में इस प्रकार लिखा है:

''जब घड़ी आ पहुंची, तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा। और उसने उनसे कहा, मुझे बड़ी लालसा थी कि दु:ख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा।

''फिर उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको यह कहते हुए दी, ''यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी जाती है, मेरे स्मरण के लिये यही किया करो'' इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, ''यह कटोरा मेरे, लहू में, जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है, नई वाचा है।'' (लूका 22:14-16; 19, 20)।

इससे पूर्व, इसी यादगार के भोज के आरंभ होने से पहले, यीशु ने कहा था,

''जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।''

''....जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है; और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊंगा'' (यूहन्ना 6:51-54)।

इन बातों को पढ़कर कदाचित हम सोचें कि यहां यीशु ने चिन्हात्मक भाषा में आत्मिक भोजन के विषय में कहा है। और वास्तव में यह बिल्कुल सही है कि यीशु वहां लोगों को जीवन की रोटी के बारे में (यूहन्ना 6:33, 35) सिखा रहे थे। ऐसी ही शिक्षा के विषय में हम यूहन्ना 4:10-14 में भी पढ़ते हैं, जहां यीशु ने जीवन के जल के विषय में शिक्षा दी थी। इन दोनों ही स्थानों पर यीशु ने अपने आपको, चिन्हात्मक भाषा में, जीवन की रोटी और जीवन का जल कहकर संबोधित किया था।

परन्तु यहां से हम देखते हैं, कि न केवल स्वयं को यीशु ने आत्मिक रोटी और आत्मिक जल ही बताया था, किन्तु अपने अनुयायीयों को यीशु

ने यह आदेश भी दिया था कि यदि वे आत्मिक रूप से सदा विद्यमान रहने की आशा रखते हैं, तो अवश्य है कि वे उसका मांस खाएं और उसका लहू पीएं। वे यहूदी जो उस समय यीशु की ये बातें सुन रहे थे, वे इस कथन का सही अर्थ नहीं समझ पाए थे, इसलिये हम पढ़ते हैं,

''इस पर उसके चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।'' (यूहन्ना 6:66)।

ये बातें यीशु ने आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व लोगों से कही थीं। और आज उसके अनुयायी पृथ्वी पर सब स्थानों पर सप्ताह के पहले दिन में जब उसके द्वारा स्थापित उसकी यादगार के भोज में प्रत्येक सप्ताह शामिल होते हैं, तो वे समझते हैं और जानते हैं कि यीशु ने जब ये बातें उस समय कहीं थी तो उनका वास्तव में क्या अभिप्राय था। वह उस समय एक ऐसे आत्मिक भोज की ओर संकेत कर रहा था जो उसकी मृत्यु के बाद उसकी यादगार का भोज बनने जा रहा था। और अपनी मृत्यु के कुछ ही घंटों पहले यीशु ने अपने अनुयायीयों के बीच में इस भोज की यह कहकर स्थापना की थी कि रोटी में से खाकर तुम मेरी देह को स्मरण किया करना और दाखरस में से पीकर तुम मेरे लहू को स्मरण किया करना। पर वे यहूदी जो उस समय यीशु की बातें सुन रहे थे, वे यीशु की बातें सुनकर वास्तव में बड़े ही विचलित हुए थे, क्योंकि पुराने नियम की जिस व्यवस्था के अधीन उस समय वे थे उसके अनुसार लहू खाना-पीना वर्जित था। और यीशु को इस बात का पता था। तौभी यह एक ऐसी वास्तविकता थी जिससे उन लोगों को परिचित करवाना बड़ा ही आवश्यक था।

वाचा की रोटी

अपने क्रूसारोहण से पहले यीशु ने रोटी लेकर अपने चेलों से कहा था,

''लो, खाओ; यह मेरी देह है....'' (मत्ती 26:26)।

इसी विषय में जब हम आगे और देखते हैं, तो एक विशेष धारणा रूप लेती है:

1. ''स्मरण के लिये'' इस भोज में भागी बनकर मेरी देह को याद करना। (लूका 22:19)।
2. ''जब कभी तुम यह रोटी खाओ....'' (1 कुरिन्थियों 11:26)।

जो लोग सबसे पहली बार मसीही बने थे वे यहूदी थे, और वे उन दो उदाहरणों से प्रभु-भोज के महत्व को भली-भांति समझ सकते थे जिनसे वे यहूदी मत में परिचित थे: अर्थात, मन्दिर में रखी जाने वाली रोटी जिसे उन्हें प्रत्येक सप्ताह विश्रामदिन के दिन बदलने की आज्ञा दी गई थी (लैव्यव्यवस्था 24:5-9), और फसह के पर्व की रोटी जिसे वे प्रत्येक वर्ष खाते थे। आज अकसर देखने में आता है कि बहुतेरे वे लोग जो मसीह में विश्वास करते हैं और भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिक मण्डलियों में हैं, वे प्रभु-भोज अपने-अपने नियम अनुसार या तो महीने में केवल एक बार या तीन महीने में एक बार या वर्ष में केवल एक ही बार लेते हैं, और वे यह भी ज़रूरी नहीं समझते कि प्रभु-भोज में केवल अखमीरी रोटी और दाखरस का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए, जैसा कि बाइबल सिखाती है।

परन्तु, वे लोग जो पुराने नियम की व्यवस्था के समय में रहते थे वे प्रभु की आज्ञानुसार उसके द्वारा ठहराए पर्वों को उन्हीं दिनों पर मानते थे जैसी आज्ञा उन्हें दी गई थी, और वे उन्हीं वस्तुओं को उपयोग में लाते थे जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने उन्हें दी थी। इसी तरह से वे मसीही लोग भी जो पहली शताब्दी में रहते थे इस बात से भली-भांति परिचित थे कि उन्हें प्रभु-भोज कब लेना है और प्रभु के भोज में कौन सी वस्तुओं को इस्तेमाल में लाना है।

ऐसे ही आज वे लोग भी जो बाइबल की सच्ची मसीहीयत का पालन करते है, वे केवल बाइबल में दर्शाए गए आदर्श को ही मानते हैं। प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन (एतवार के दिन) वे विशेष रूप से प्रभु-भोज में भाग लेने के लिये एकत्रित होते हैं। (1कुरिन्थियों 11:24-26)।

3. ''इसलिये मनुष्य अपने आपको जांच ले... क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है.....'' (1कुरिन्थियों 11:28-29)।

4. ''जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है।'' (यूहन्ना 6:54)।
5. ''जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूं, वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा।'' (यूहन्ना 6:57)।

इस कारण, स्वयं हमारा आत्मिक जीवन भी, निरन्तर प्रभु-भोज लेने पर ही निर्भर रहता है। हम इसलिये जीवित हैं, क्योंकि वह हमारे लिये मर गया था ताकि हमें जीवन मिले, आत्मिक जीवन ।

सिर और उसकी देह

''क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है.... इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।'' (1 कुरिन्थियों 12:12, 27)।

यहां इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह कहने के विपरीत कि ''...उसी प्रकार मसीह की देह भी है....'' यहां यह कहा गया है, कि ''. ...उसी प्रकार मसीह भी है....'' अर्थात् मसीह उस देह का सिर है जो उसकी कलीसिया है, यहां कहने का तात्पर्य इस बात से है कि जिस प्रकार सिर देह के बिना वर्तमान नहीं रह सकता, उसी प्रकार देह भी सिर के बिना वर्तमान नहीं रह सकती। अर्थात् मसीह ने अपने आपको अपनी कलीसिया के साथ एक कर लिया है।

अब क्या आप इस बात को वास्तव में समझ रहे हैं कि जब मसीह ने अपने आप को शून्य बना दिया था तो इसका अर्थ क्या है? मनुष्यों को पाप के कारण नरक में जाने से बचाने के लिये यीशु ने स्वयं अपने आपको एक मनुष्य बनाने का निश्चय कर लिया था और इसलिये उसने अपने उन सब विशेष अधिकारों और महिमा से, जो स्वर्ग में परमेश्वर होने के कारण

उसके थे, उन सबसे उसने अपने आप को शून्य करने का निश्चय बना लिया था। पर, विशेष बात यह है, कि यीशु का स्वयं को शून्य कर देने का अर्थ केवल यहीं तक सीमित नहीं था। क्योंकि न केवल ईश्वरत्व में अपनी महिमा और विशेष अधिकारों से ही उसने अपने आपको खाली कर दिया था, और न केवल एक मनुष्य बनकर उसने सारी मानवता के पापों को अपने ऊपर लेकर हम सबके पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस का भयानक दण्ड ही प्राप्त किया था, पर अपने पुनरुत्थान के बाद स्वयं को अपनी उस कलीसिया का सिर ठहराकर जो उसके अनुयायीयों की आत्मिक देह है, उसने अपने आपको सदा के लिये सीमित कर लिया है। जब हम किसी मनुष्य के शरीर को बुरी तरह से रोग-ग्रस्त देखते हैं तो हम विचलित हो उठते हैं। शारीरिक रोगों के कारण मनुष्य की देह दुर्बल तथा व्यर्थ सी हो जाती है। कलीसिया मसीह की देह है, उसकी आत्मिक देह है, जिसके अंग उसके सब अनुयायी हैं, और मसीह अपनी कलीसिया का सिर है। परन्तु उसकी देह में कितने ही अंग ऐसे हो सकते हैं जो तरह-तरह के भयानक आत्मिक रोगों से ग्रस्त हैं। किसी भी मनुष्य के लिये वर्षों तक एक रोग-ग्रस्त शरीर में जीवित रहना वास्तव में एक बड़ा ही दुखदायी अनुभव बन जाता है। इसी संदर्भ में यदि हम मसीह के बलिदान पर विचार करके सोचें तो हम समझ सकते हैं कि उसका बलिदान वास्तव में केवल क्रूसारोहण तक ही सीमित नहीं था।

देह के द्वारा सीमित

मसीह ने अपने आप को, उस देह का सिर नियुक्त करके, जिसमें उसके सब अनुयायी अंगों के समान हैं, एक प्रकार से अपने आपको सीमित कर लिया है। क्योंकि उसकी देह में अनेकों ऐसे अंग है जिन्होंने अपने आपको सुस्त और नाकाम बना रखा है। अकसर उसकी देह सरगर्म और कार्यशील होने के विपरीत मरी हुई सी जान पड़ती है। क्योंकि उसके भीतर बहुतेरे ऐसे भी हैं जो नाना प्रकार के भयानक आत्मिक रोगों से ग्रस्त हैं।

अब आप एक देह की कल्पना करें। देह में सिर का क्या काम होता

है? सिर का दर्जा देह में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि सिर से ही देह के सारे अंगों को विभिन्न कामों को करने के आदेश मिलते हैं। अर्थात् सिर देह का मुखिया है। परन्तु सिर जो कुछ भी सोचता है और करना चाहता है उस सबके लिये वह अपने अंगों पर ही निर्भर रहता है। किन्तु कल्पना करें एक ऐसी देह की जिसके ऊपर एक ऐसा सिर विराजमान है जिसके भीतर एक बड़ा ही शक्तिशाली दिमाग है और वह बड़े-बड़े कामों को करने में सक्षम है, परन्तु उसके अंग बेकार हैं। ऐसा सिर वास्तव में अपने आप में कैसी लाचारी का अनुभव करेगा?

आरंभ से ही परमेश्वर ने सबसे अधिक महत्व पाप से मनुष्य को छुटकारा दिलाने की ओर दिया है। मनुष्य की इसी विशाल आवश्यकता की पूर्ति करने के लिये यीशु मसीह ने अपने आप को बलिदान कर दिया था। इसलिये यह आवश्यक है कि संसार के सारे लोग इस महत्त्वपूर्ण बात से परिचित हो जाएं। लोगों को हर-एक जगह यह जानने की आवश्यकता है, कि परमेश्वर ने उन्हें पाप से छुटकारा दिलाने के लिये क्या किया है। लोगों को यह जानने की आवश्यकता है, कि मसीह उनके पापों का प्रायश्चित है, और किस प्रकार उसके द्वारा वे अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। पर वे किस प्रकार जानेंगे? क्या परमेश्वर स्वर्ग से बोलकर उन्हें बताएगा?

या क्या मसीह लोगों के मनों में आश्चर्यपूर्ण ढंग से कोई काम करके उन्हें अपने पास बुलाएगा? या क्या स्वर्गदूत सुसमाचार सुनाने के लिये जगत में घूम रहे हैं?

नहीं।

तो फिर यह आत्मिक सच्चा धन किस के पास है? यह केवल उन लोगों के हाथों में है, जो उसकी आत्मिक देह में हैं। देह का सिर संसार में सब लोगों को देखता है; और वह चाहता है कि सब को उद्धार मिले; वह चाहता है कि सब लोग उसके सुसमाचार से परिचित हों। उसके दिमाग से उसका संदेश देह में आंखों तक पहुंचता है, फिर ज़ुबान पर आता है, फिर हाथों तक पहुंचता है और फिर पैरों को मिलता है और हृदय में उतर

जाता है। और जब उसकी देह के भिन्न-भिन्न अंग मिलकर एक साथ उस काम को करने लगते हैं जो वह चाहता है तो उसे यह जानकर एक विशाल आनन्द का अनुभव होता है, कि वह काम जिसे पूरा करने के लिये उसने आरंभ से निश्चय बनाया था अब उसकी देह के द्वारा किया जा रहा है। पर क्या यह सच है?

इसलिये इस बात पर भी ध्यान दें, कि सिर से आदेश मिलने के बाद भी यदि उसकी देह के अंग उसकी न सुनें और जो वह चाहता है उसे न करें, तो उसे कैसी बड़ी निराशा और वेदना का अनुभव होता होगा। ज़रा सोचें, कि जब हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में सुस्त और ढीले पड़ जाते हैं, तो वह स्वयं को कैसा असहाय अनुभव करता होगा। और जब हम, हम जो उसकी आत्मिक देह के अंग हैं, कोई गलत काम करके या अपने अनैतिक चाल-चलन के द्वारा उसके नाम पर बट्टा लगाते हैं तो उसे कैसे दु:खों का अनुभव होता होगा। सोचें। वह जो परमेश्वर का जन है, क्या वह झूठ बोलेगा, क्या वह धोखा देगा, अनैतिक चाल-चलन रखेगा, बुरी बातें सोचेगा, बुरे काम करेगा, गन्दी भाषा बालेगा, या इस प्रकार का कोई भी काम करेगा जिससे परमेश्वर की निन्दा होती है? तौभी, हम जो उसकी कलीसिया अर्थात उसकी आत्मिक देह के अंग हैं, जो कुछ भी हम अन्य लोगों के साथ करते हैं वह हम उसी के साथ करते हैं।

प्रत्येक सप्ताह प्रभु-भोज में भाग लेकर उसकी देह को याद करके हम यह मानते हैं कि हम उसमें बने रहेंगे। प्रतिदिन हम सब जो उसके अनुयायी हैं, हम सब मिलकर उसकी देह हैं, और वह अपनी देह का सिर है।

वाचा का लहू

फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा,

''तुम सब इसमें से पीओ, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।'' (मत्ती 26:27, 28)।

जिस प्रकार उसकी देह हमारे लिये जीवन है, उसी प्रकार उसका लहू भी हमारे लिये जीवन है। शरीरिक दृष्टिकोण से लहू हमें तभी दिखाई देता है जब कुछ कट जाता है या जब चोट लग जाती है। यदि लहू अधिक बह जाता है तो मृत्यु तक हो जाती है, सो इस प्रकार हम लहू और मृत्यु में सम्पर्क को समझते हैं, इन दोनों में आपसी सम्बंध है। और वास्तव में बहुत गहरा सम्बंध है।

तौभी आरंभ से ही परमेश्वर का यह आदेश है।

''पर मांस को प्राण समेत अर्थात् लहू समेत तुम न खाना।'' (उत्पत्ति 9:4)।

हमारी शारीरिक देह में लहू के क्या विशेष गुण और काम हैं? किस प्रकार लहू देह का जीवन है?

लहू : देह का जीवन

हमारी देह में करोड़ों की संख्या में जीवित कोशिकाएं हैं। इनमें से प्रत्येक कोशिका को ज़िन्दा रहने के लिये निरन्तर लहू की आवश्यकता होती है। और आश्चर्यपूर्ण बात तो यह है, कि मानव शरीर में जितनी भी नलियां और नसें हैं यद्यपि कि उनका तंत्र (नेटवर्क) लगभग 60,000 मिल जितना लम्बा है तौभी सभी कोशिकाएं एक दूसरे से अधिक दूर नहीं हैं। जैसे कि एक विशाल नदी पृथ्वी पर अनेकों मार्गों से होकर निरन्तर बहती रहती है किन्तु उससे बाढ़ नहीं आ जाती, ऐसे ही लहू हमारे शरीर में देह को ज़िन्दा रखने के लिये निरन्तर बहता रहता है।

परन्तु लहू अपना काम किस प्रकार करता है? लहू विशेष रूप से तीन तरह से अपना काम शरीर में करता है। एक तो शक्ति प्रदान करता है, दूसरे, शुद्ध करता है, और तीसरे, देह को सुरक्षित रखता है।

लहू शक्ति प्रदान करता है

लहु के भीतर एक बहुत बड़ी मात्रा में खून की लाल कोशिकाएं होती हैं। इनका काम विशेष रूप से शरीर को शक्ति प्रदान करना और अन्य

करोड़ों कोशिकाओं को शुद्ध रखने का होता है। हमारे शरीर में निरन्तर बहनेवाली खून की नदी में लाल रंग की कोशिकाएं कई प्रकार के खनिज पदार्थों से और भोजन और प्राण-वायु से लदी रहती हैं। इन्हीं कोशिकाओं में से अन्य कोशिकाएं अपने लिये निरन्तर आवश्यक भोजन लेती रहती हैं। और लगभग हर एक 20 सेंकड में खून हमारे शरीर में एक चक्कर पूरा कर लेता है। लहू की लाल कोशिकाएं न केवल शक्तिवर्धक पदार्थों का ही वितरण शरीर में करती हैं, पर ये कोशिकाएं व्यर्थ हुए पदार्थों को भी एकत्रित करके गुर्दे तक पहुंचाती हैं। और वहां से साफ़ होकर फिर से हृदय के पास लौटकर अपना अगला चक्कर लगाना आरंभ कर देती हैं, शरीर में शक्तिवर्धक पदार्थों का वितरण करने के लिये और पूरे शरीर को साफ़ करने के लिये।

इस प्रकार, जब तक हमारे शरीर में कोशिकाओं को प्राण-वायु तथा पौष्टिक आहार निरन्तर मिलता रहता है, और जब तक व्यर्थ हुए पदार्थ हमारे शरीर से निरन्तर निकलते रहते हैं, तब तक शरीर की कोशिकाएं स्वस्थ बनी रहती हैं और वे शरीर को तन्दुरस्त रखने के लिये अपना काम करती रहती हैं। परन्तु यदि लहू का बहाव किसी कारणवश बन्द हो जाए, तो कोशिकाओं को प्राणवायु की कमी महसूस होने लगेगी और सारी प्रणाली दूषित हो जाएगी। तथा वायु के अभाव के कारण शरीर कुछ ही पलों में मर जाएगा।

लहू रक्षक है

लाल कोशिकाओं की भांति ही मानव शरीर में करोड़ों सफ़ेद कोशिकाएं भी होती है, इनका काम सुरक्षा प्रदान करना होता है। वातावरण तथा वायु में सब तरफ ज़हरीले तथा प्राणनाशक जीवाणु और तत्व पाए जाते हैं जिनसे हमारे शरीर को निरन्तर सुरक्षा की आवश्यकता रहती है, और यह सुरक्षा हमें सफ़ेद कोशिकाएं प्रदान करती हैं।

आज जबकि भांति-भांति की बीमारियां पाई जाती हैं, और रोग-मुक्त होने के लिये हम कोई विशेष औषधि लेकर अपने आपको रोग मुक्त

अनुभव करने लगते हैं। पर वास्तव में औषधि या दवाई विषायुक्त और हानिकारक जीवाणुओं तथा कीटाणुओं आदि को शरीर से दूर रखने का काम करती हैं, जबकि शरीर में रोग को मिटाने का काम वास्तव में सफ़ेद कोशिकाएं ही करती हैं। शरीर में देह को रोग-मुक्त रखने के लिये सफ़ेद कोशिकाओं का एक खास और अहम स्थान होता है। कोई भी औषधि अथवा दवाई बिना सफ़ेद कोशिकाओं की सहायता के कामयाब नहीं हो सकती। एड्स जैसी बीमारी इस बात को आज प्रमाणित कर चुकी है।

लहू सफ़ाई करता है

एक और काम जो सफ़ेद कोशिकाएं शरीर में करती हैं, वह है उन प्राणनाशक तत्वों को जो नष्ट किए जा चुके हैं, शरीर से बाहर निकालना। यह एक ऐसी प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा ऐसी कोशिकाएं जो निर्बल और व्यर्थ हो चुकी हैं उन्हें शरीर से दूर कर दिया जाता है ताकि वे कोशिकाएं जो जीवित तथा प्रबल हैं बिना किसी रूकावट के अपना काम करती रहें। कभी-कभी जब शरीर में किसी संक्रमण का आगमन होता है तथा किसी अंग में लाली या सूजन आ जाती है या बुखार आने लगता है तो यह इस बात का सूचक होता है कि शरीर में हमारा लहू अपना काम सही रूप में कर रहा है।

लहू को हम केवल तभी देखते हैं जब वह शरीर में से बाहर निकलता है, किन्तु तौभी लहू का सम्बंध जीवन तथा मृत्यु से है। इसी कारण से, हम बाबइल में पढ़ते हैं कि अपनी मृत्यु से पहले, प्रभु-भोज की स्थापना के समय यीशु ने कटोरा हाथ में लेकर अपने चेलों से कहा था,

> तुम सब इसमें से पीओ.... यह मेरा लहू है.... (मत्ती 26:27, 28)।

और हम समझ सकते हैं यह भी, कि क्यों एक अन्य स्थान पर यीशु ने इस प्रकार कहा था,

> ''जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है अनन्त जीवन उसी का है....'' (यूहन्ना 6:54)।

क्योंकि जीवन वास्तव में लहू ही में है। इसलिये बाइबल में लिखा है,

''...यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' (1यूहन्ना 1:7)।

ठीक उसी प्रकार से जैसे कि हमारे शरीर में लहू प्रत्येक प्रकार के विषाक्त तत्वों से शरीर को शुद्ध रखता है। जैसे कि लिखा है,

''....वे मेम्ने के लहू के कारण....जयवन्त हुए....'' (प्रकाशितवाक्य 12:11)।

हम उसके लहू के काराण इसलिये जयवन्त होते हैं क्योंकि उसने अपना लहू बहाकर पाप के ऊपर विजय प्राप्त की थी। (यूहन्ना 16:33)।

हम, जो उसके अनुयायी हैं, दाखरस में से पीकर उसके लहू को इसलिये याद करते हैं, क्योंकि हम यह जानते हैं कि जिस प्रकार से हमारा लहू हमारे शरीर को शुद्ध करता है, उसी तरह से यीशु का लहू हमें आत्मिक शुद्धि प्रदान करता है।

अर्थपूर्ण स्मरण चिन्ह

परमेश्वर ने मसीही व्यवस्था में विशेष रूप से दो बड़े ही महत्त्वपूर्ण स्मरण चिन्हों को निर्धारित किया है। और ये दोनों ही वास्तव में बड़े ही सुन्दर तथा अर्थपूर्ण हैं, जो इस बात की हमें याद दिलाते हैं कि परमेश्वर का प्रेम हमारे प्रति कैसा महान् है, और क्योंकि वह हम से प्रेम करता है इसलिये हम अपने प्रेम को उसके प्रति उन दोनों ही स्मरणिय चिन्हों का पालन करके व्यक्त करते हैं।

1. बपतिस्मा लेने के द्वारा मनुष्य प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने तथा जी उठने को स्वयं अपने भीतर चित्रित करता है। अर्थात् बपतिस्मा लेकर मनुष्य व्यक्त करता है कि जिस प्रकार यीशु ने अपने आपको सारी मानवता के पापों के लिये दे दिया था, सो मैं भी अपने आप को उसे दे रहा हूं।

   बपतिस्मा न केवल मृत्यु का ही रूपक है, परन्तु नए जन्म का भी सूचक है। (यूहन्ना 3:3, 5)। शारीरिक रूप से जन्म लेने में तीन वस्तुएं

शामिल होती हैं, अर्थात् पानी और लहू और जीवन का आत्मा। ऐसे ही आत्मिक जन्म में भी है, जैसे कि 1 यूहन्ना 5:8 में हमें बताया गया है, ''गवाही देनेवाले तीन हैं: आत्मा और पानी और लहू, और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं।''

नया जन्म प्राप्त करने के लिये पानी में बपतिस्मा लिया जाता है, परमेश्वर का आत्मा हमें आत्मिक जीवन देता है, और यीशु का लहू जिसे उसने सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को बहाया था, हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है।

2. प्रभु-भोज लेने के द्वारा, जिसे उसके अनुयायी प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन एकत्रित होकर लेते हैं, प्रभु यीशु मसीह के बलिदान को स्मरण किया जाता है।

परमेश्वर चाहता है कि हम सब इन दोनों विशेष आज्ञाओं को, जिनका सम्बंध हमारी मुक्ति से है, अवश्य मानें और याद रखें। बार-बार नए नियम में इन दोनों ही खास आज्ञाओं को विशेष रूप से हमें बताया गया है। ये दोनों आज्ञाएं अर्थात् बपतिस्मा लेना और प्रभु-भोज में भाग लेना मात्र दो विधियां ही नहीं हैं, पर ये परमेश्वर की उन लोगों के लिये आज्ञाएं है जो उद्धार पाना चाहते हैं। बपतिस्मा लेने के उपरान्त एक व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में शामिल हो जाता है। और प्रभु-भोज लेकर परमेश्वर के संतान उसे इस बात के लिये धन्यवाद देते हैं कि उसने उनसे ऐसा महान् प्रेम रखा कि अपने एकलौते पुत्र को उनके लिये बलिदान कर दिया था।

सो न तो हम प्रभु की इस आज्ञा को केवल एक विधि मात्र करके समझें कि जो विश्वास करके बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, और न ही प्रभु-भोज को ऐसा मानें कि जब चाहे ले लिया और जब न चाहें तो न लिया। प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन, प्रभु के वचनानुसार प्रभु-भोज में भाग लेने के द्वारा हम अपने प्रभु के साथ जुड़े रहते हैं। इसलिये यह आवश्यक है।

प्रभु-भोज में भाग लेते समय अवश्य है कि प्रभु का जन उसे, और

केवल उसी ही स्मरण करे। यदि हमारा ध्यान या मन उस समय इधर-उधर भटकने लगता है, तो प्रभु-भोज लेने का उद्देश्य केवल एक विधि मात्र ही बनकर रह जाता है।

(क) प्रभु-भोज का वास्तविक अर्थ एक यादगार है। और इसी रूप में उसे, प्रभु के बलिदान को याद करने के लिये, लिया जाना चाहिए।

(ख) जब हम पुराने नियम में परमेश्वर की दी हुई आज्ञाओं के बारे में पढ़ते हैं, तो हमें यह देखने को मिलता है, कि जिस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें आज्ञाएं दी थीं उन्होंने उसकी आज्ञाओं को ठीक वैसे ही माना था। जैसे कि विश्रामदिन की रोटी के विषय में हम पढ़ते हैं। (लैव्यव्यवस्था 24:5-8)। ऐसे ही हम पढ़ते हैं कि जब यहूदी मिस्र में थे और परमेश्वर उन्हें दासत्व में से निकालकर बाहर लाया था, तो उन्हें आज्ञा दी गई थी कि वे एक विशेष तरह के भोज का आयोजन करें और उस दिन को याद रखा करें। वहां हम पढ़ते हैं, कि उस भोज को तैयार करने की जैसी विधि परमेश्वर ने उन्हें बताई थी, उन्होंने वैसे ही आगे चलकर किया था। क्या आप ऐसा सोच सकते हैं कि उन्होंने उस भोज को स्वयं तैयार करने के विपरीत मिस्रियों से रोटियां मांगकर परमेश्वर द्वारा ठहराया गया भोज खाया होगा?

कहने का मेरा अभिप्राय यहां यह है, कि प्रभु-भोज में जब हमें अखमीरी रोटी खाने की आज्ञा दी गई है, तो वह रोटी कहां से हम लेते हैं? क्या बनी बनाई रोटी या बिस्कुट या डबलरोटी या पाव-रोटी बाज़ार से खरीदकर उसे प्रभु-भोज में लेना उचित है? क्या अखमीरी रोटी को छोड़कर, जैसे कि परमेश्वर की आज्ञा है कि प्रभु-भोज में अखमीरी रोटी खाएं, किसी और प्रकार की रोटी खाना उचित है? तौभी देखने में यह आता है कि अकसर लोग इस बात पर विशेष ध्यान नहीं देते कि प्रभु-भोज में वे अखमीरी रोटी के स्थान पर क्या उपयोग में ला रहे हैं। क्या हम अपने घर में प्रभु-भोज के लिये रोटी नहीं बना सकते? बिना खमीर के, सादी

रोटी। प्रभु-भोज में, अखमीरी रोटी और दाखरस को उपयोग में न लाकर, जैसे कि वचन में लिखा है, अकसर लोग प्रभु-भोज की अवहेलना करते हैं। जिस प्रकार पौलुस ने पहली शताब्दी में मसीही लोगों को लिखकर उनसे कहा था, कदाचित् वह बात आज भी सच है कि:

> ''इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।'' (1 कुरिन्थियों 11:30)।

वास्तव में, हमें अपने दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। सदियों से जिन बातों को तोड़-मरोड़कर सिखाया गया है, लोग उन्हीं बातों को परमेश्वर का वचन मानकर आज भी मान रहे हैं। पर आवश्यकता इस बात की है कि आज लोग मनुष्यों के बनाए काएदे-कानून और रीति-रिवाज़ों को छोड़कर परमेश्वर के लिखे वचन की ओर वापस आएं, और उन सब बातों को वैसे ही मानें जिस प्रकार उसकी बाइबल में हमें बताया गया है।

आज इस बात की कल्पना करना भी हमारे लिये कठिन होगा, कि मारथा और मरियम किसी दुकान से यीशु के लिये पका-पकाया भोजन खरीदकर लाई होंगी। तौभी आज प्रभु-भोज की रोटी बनाने का लोगों के पास समय नहीं है। शायद कोई कहे कि, ''मुझे तो रोटी बनानी ही नहीं आती'' या कहे कि, ''इतने झंझट में कौन पड़े।'' वास्तव में यदि आज लोग प्रभु-भोज के विशेष महत्त्व को सचमुच में पहचान लें, तो प्रभु-भोज कि तैयारी करना उन्हें कोई झंझट नहीं प्रतीत होगा, पर वे उत्साहित होकर बड़े आनन्द के साथ अखमीरी रोटी और दाखरस का प्रबंध स्वयं करेंगे।

पर बात यह है, कि जो लोग वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और समझते हैं कि परमेश्वर ने उनसे कैसा महान् प्रेम रखा है, कि उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान कर दिया था, वे उसकी आराधना करने के लिये प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन, जैसे कि उसकी पुस्तक में दर्शाया गया है, अवश्य ही एकत्रित होंगे। चाहे उनकी संख्या कितनी भी क्यों न हो, शायद दो-चार ही परिवार हों, या फिर शायद एक ही परिवार हो। पर वे एकत्रित अवश्य होंगे। और सप्ताह के पहले दिन

अर्थात् एतवार के दिन वे इसलिये एकत्रित होंगे ताकि वे प्रभु की आज्ञानुसार प्रभु-भोज में भाग लेकर अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु के बलिदान को याद करें।

प्रभु-भोज में, बाइबल के नए नियम में जिस प्रकार दर्शाया गया है, दो वस्तुएं होती हैं। एक तो अखमीरी रोटी, जिसमें से प्रभु की देह को स्मरण करने के लिये खाया जाता है, और दूसरे, दाखरस, जिसमें से पीकर यीशु के अनुयायी उसके उस लहू को स्मरण करते हैं जिसे उसने जगत के पापों की छुड़ौती के लिये बहाया था। अखमीरी रोटी का अर्थ है, जिसमें खमीर न हो- अर्थात् साधारण रोटी या चपाती। डबल-रोटी या पाव-रोटी या बिस्कुट इत्यादि नहीं। क्योंकि उनमें ख़मीर होता है। आवश्यकता अनुसार एक रोटी बना लें, और उसमें से थोड़ा-थोड़ा तोड़कर सब खाएं और यीशु की उस देह को याद करें जिसे उसने क्रूस पर पापियों के लिये बलिदान किया था। फिर, ऐसे ही, दाखरस लें और उसमें से थोड़ा-थोड़ा पीकर सब लोग प्रभु यीशु के लहू को स्मरण करें। दाखरस का अभिप्राय अंगूर के रस से है। यदि अंगूर का रस या अंगूर न मिलें तो किशमिश के कुछ दाने लेकर उन्हें उबाल लें और उनका रस निकाल लें। परन्तु दाखरस के स्थान पर किसी और प्रकार के रस या पेय-जल को उपयोग में न लाएं, क्योंकि ऐसा करना प्रभु के वचन के विरूद्ध होगा।

(ग) प्रभु-भोज की तैयारी कलीसिया के एकत्रित होने से पहले की जानी चाहिए। और प्रभु-भोज में भाग लेने से पहले अवश्य है कि प्रत्येक जन, जैसे कि बाइबल में लिखा है, स्वयं अपने आप को जांच ले। (1 कुरिन्थियों 11:28)। सारी गम्भीरता के साथ प्रभु-भोज में भाग लिया जाना चाहिए। पहले रोटी के लिये धन्यवाद दें परमेश्वर को कि उसने हमसे ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने पुत्र को हमारे लिये बलिदान कर दिया था, और प्रभु यीशु ने हमसे इतना प्रेम रखा कि उसने हमारे पापों का प्रायश्चित करने को अपने आप को दे दिया था। और फिर प्रभु का प्रत्येक अनुयायी रोटी में से थोड़ा सा

तोड़कर खाए और यीशु की देह को याद करे। इसी प्रकार, इसके बाद, दाख-रस के लिये धन्यवाद दिया जाए, जो यीशु के लहू की याद के लिये है। धन्यवाद देने के बाद, उसमें से थोड़ा-थोड़ा सब पिएं और प्रभु के उस लहू को याद करें जिसे उसने मानवता के पापों के छुटकारे के लिए बहाया था।

(घ) यह भी अति आवश्यक होता है, कि प्रभु-भोज को जल्दबाज़ी में न लिया जाए, पर सारी गम्भीरता के साथ लिया जाए। बाइबल में से उन स्थानों में से भी उस समय पढ़ा जा सकता है जहां प्रभु-भोज के ऊपर प्रकाश डाला गया है। इसलिये केवल एक रस्म या रीति को ही पूरा करने के लिये जल्दी-जल्दी प्रभु-भोज नहीं लिया जाना चाहिए। याद रखें, कि हम अपने उस प्रभु के बलिदान को स्मरण करते हैं, प्रभु-भोज में भाग लेकर, जिसने स्वर्ग के सारे सुखों को त्याग दिया था, और हमें नरक में जाने से बचाने के लिये उसने अपने आपको बलिदान कर दिया था।

जैसे कि हमने इससे पहले देखा था, प्रभु-भोज एक यादगार का भोज है। प्रभु-भोज में भाग लेकर हम अपने प्रभु को और हमारे प्रति उसके प्रेम को याद करते हैं। हम प्रभु के बलिदान को याद करते हैं। प्रभु-भोज कोई 'प्रसाद' नहीं हैं, परन्तु एक यादगार है। जिस प्रकार संसार में बहुत से स्मारक इत्यादि हैं, जिन्हें देखकर लोग उन लोगों को याद करते हैं, जिन्होंने उन्हें बनवाया था, या जिनके स्मरण में उन्हें बनवाया गया था। ऐसे ही प्रभु-भोज भी है। प्रभु-भोज की स्थापना स्वयं प्रभु यीशु ने ही अपने अनुयायीयों के लिये की थी, और उन्हें आज्ञा देकर उनसे कहा था कि मेरे स्मरण के लिये ऐसा ही किया करना।

किन्तु, लोगों के बनाए हुए स्मारक पुराने होकर नष्ट हो जाते हैं, पर यीशु ने हमें उसे और उसके बलिदान को याद रखने के लिए एक ऐसा स्मारक दिया है जो उस समय तक कायम रहेगा जब तक वह स्वयं वापस न आ जाए। प्रभु-भोज एक ऐसा साधन और उपाय है, प्रभु यीशु के

बलिदान को याद करने का, कि उसका आयोजन हम पृथ्वी पर कहीं भी कर सकते हैं। प्रभु-भोज लेने के लिये किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं होती। प्रभु-भोज कहीं पर भी लिया जा सकता है। जहां कहीं भी प्रभु यीशु के अनुयायी हैं, चाहे उनकी गिनती अधिक हो या थोड़ी हो, वे प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन एक साथ एकत्रित होकर प्रभु के बलिदान को याद करने के लिए प्रभु-भोज का आयोजन करके प्रभु-भोज ले सकते हैं।

एक बात इस सम्बंध में और अवश्य ही याद रखें, कि बपतिस्मा देने के लिये या प्रभु-भोज देने के लिये किसी विशेष व्यक्ति की आवश्यकता नहीं होती। कलीसिया में कोई भी भाई इन दोनों कामों को कर सकता है। कोई भी बपतिस्मा दे सकता है और कोई भी प्रभु-भोज दे सकता है। ये दोनों ही आज्ञाएं प्रभु ने अपने अनुयायीयों को दी थीं।

प्रभु राज्य कर रहा है

हम सबका यह विश्वास है कि परमेश्वर आत्मिक रूप में सब जगह

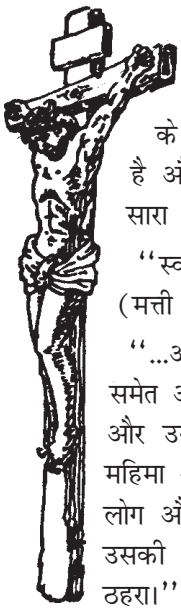

राज्य करता है। पर क्या वह पाप से परिपूर्ण इस संसार में भी राज्य कर रहा है? इस सम्बंध में कदाचित लोगों के भिन्न-भिन्न मत हो सकते हैं। परन्तु बाइबल के द्वारा हमें यह शिक्षा मिलती है, कि परमेश्वर सर्वविद्यमान् है और यीशु मसीह जो प्रभु है, उसे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है। प्रभु यीशु ने कहा था,

''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।'' (मत्ती 28:18)।

''...और देखो, मनुष्य के संतान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।'' (दानिय्येल 7:13, 14)।

''....और मेम्ना.... प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है.....'' (प्रकाशितवाक्य 17:14)।

एक जगह प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था,

''क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।'' (मत्ती 7:14)।

मसीही लोग कभी-कभी जब इस बात पर विचार करते हैं कि इस जगत में कितने ही लोग हैं जो धार्मिक दृष्टिकोण से नाना प्रकार के मतों को मान रहे हैं, पर हम उनकी तुलना में तो बहुत ही थोड़े से हैं, और

इससे वे अकसर विचलित हो उठते हैं। पर हमें यह अवश्य याद रखना चाहिए, कि प्रभु का मार्ग सकरा मार्ग है और उस पर चलनेवाले लोग भी थोड़े ही हैं। और हम जिस प्रभु के लोग हैं, और जिसके मार्ग पर हम चल रहे हैं, वह महान् है, और वही स्वर्ग और पृथ्वी का और जो कुछ भी उनमें है उन सबका स्वामी है।

परमेश्वर प्रकृति का स्वामी है

बाइबल से हमें यह जानकारी मिलती है कि परमेश्वर से कुछ भी छिपा नहीं है। यद्यपि उसने मनुष्यों को स्वेच्छा के साथ उत्पन्न किया है, और सब लोग अपनी-अपनी इच्छा से यह चुनाव कर सकते हैं कि वे किस की बात मानेंगे- परमेश्वर की या शैतान की- और यद्यपि यह सच है कि अधिकतर लोग शैतान के मार्ग पर और इस संसार की अभिलाषाओं के पीछे दौड़ रहे हैं, परन्तु फिर भी परमेश्वर ही सारे जगत का स्वामी है। उसी ने जगत को और प्रकृति को बनाया है और वही सारे जगत को बनाए रखता है। अय्यूब की पुस्तक में अय्यूब 38:8-11 में इसी बात पर प्रकाश डालकर लेखक समुद्र के विषय में इस प्रकार कहता है,

> ''यहीं तक आ, और आगे न बढ़, और तेरी उमड़नेवाली लहरें यहीं थम जाएं।''

इब्रानियों 1:1-3 में लिखा है कि, वह, ''....सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भालता है....''

परमेश्वर का अधिकार सर्वव्यापक है

मनुष्यों के कोई भी कार्य परमेश्वर से छिपे हुए नहीं है। पृथ्वी पर बहुत से ऐसे अधिकारी है और ऐसे शासक हैं जो मनमानी करते हैं। उन्हें जनता की चिन्ता नहीं रहती। वे लूटते हैं और सताते हैं। पर एक दिन उन सबको परमेश्वर के सामने आकर अपना-अपना लेखा देना पड़ेगा। वे सब, सभी अन्य लोगों की ही तरह, परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी

हैं। किन्तु परमेश्वर कब, किसको, कहां, और कैसे इस्तेमाल करके अपनी इच्छा को पूरा कर सकता है, कोई इन्सान नहीं जानता। जब इस्राएली मिस्र में दासत्व में थे, परमेश्वर ने वहां के शासक फ़िरौन से इस प्रकार कहा था,

> ''परन्तु सचमुच मैंने इसी कारण तुझे बनाए रखा है कि तुझे अपनी सामर्थ्य दिखाऊं और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूं। क्या तू अब भी मेरी प्रजा के सामने अपने आपको बड़ा समझता है?'' (निर्गमन 9:16, 17)।

इस्राएलियों से आरंभ में परमेश्वर ने, अपने दास मूसा के द्वारा, प्रतिज्ञा करके इस प्रकार कहा था,

> ''सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे सामने आशीष और शाप दोनों रख देता हूं। अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की इन आज्ञाओं को जो मैं आज तुम्हें सुनाता हूं मानो, तो तुम पर आशीष होगी, और यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को नहीं मानोगे, और जिस मार्ग की आज्ञा मैं आज सुनाता हूं उसे तजकर दूसरे देवताओं के पीछे हो लोगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो, तो तुम पर शाप पड़ेगा।'' (व्यवस्थाविवरण 11:26-28)।

पर इस्राएलियों ने, जैसे कि बाइबल हमें बताती है, परमेश्वर की आज्ञाओं को ठीक से नहीं माना था, और इसलिये परमेश्वर ने उन्हें अन्य देशों के हाथों प्रताड़ना दिलवाई थी। यहां तक, कि आगे चलकर परमेश्वर ने अश्शुर देश को उनके विरूद्ध खड़ा करके उन्हें अश्शूरियों के हाथों में दे दिया था। अश्शूर के विषय में यूं लिखा है,

> ''अश्शूर पर हाय, जो मेरे क्रोध का लठ और मेरे हाथ में का सोंटा है। वह मेरा क्रोध है। मैं उसको एक भक्तिहीन जाति के विरूद्ध भेजूंगा, और जिन लोगों पर मेरा रोष भड़का है उनके विरूद्ध उसको आज्ञा दूंगा कि छीन-छान करे और लूट ले, और उनको सड़कों की कीच के समान लताड़े। परन्तु उसकी ऐसी मनसा नहीं

है, न उसके मन में ऐसा विचार है; क्योंकि उसके मन में यही है कि मैं बहुत सी जातियों का नाश और अन्त कर डालूं....।

इस कारण जब प्रभु सिय्योन पर्वत पर और यरुशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब मैं अश्शूर के राजा की गर्व की बातों का और उसकी घमण्ड भरी आंखों का बदला दूंगा। उसने कहा है, ''अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैंने यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूं....'' क्या कुल्हाड़ा उसके विरूद्ध जो उससे काटता हो डींग मारे या आरी उसके विरूद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या सोंटा अपने चलानेवाले को चलाए या छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है। ....इसलिये प्रभु सेनाओं का यहोवा यों कहता है, हे सिय्योन में रहनेवाली मेरी प्रजा, अश्शूर से मत डर; चाहे वह सोंटे से तुझे मारे और मिस्र के समान तेरे ऊपर छड़ी उठाए। क्योंकि अब थोड़ी ही देर है कि मेरी जलन और क्रोध उनका सत्यानाश करके शान्त होगा। सेनाओं का यहोवा उसके विरूद्ध कोड़ा उठाकर उसे मारेगा....'' (यशायाह 10:5-7, 12, 13, 15, 24-26)।

यहां से पढ़कर हमें यह सीखने को मिलता, है,

1. परमेश्वर चाहता है कि सब लोग स्वयं अपने लिये चुनाव करें कि वे क्या चाहते हैं। उसने अपनी आज्ञा माननेवालों को आशीषित करने की प्रतिज्ञा की है, और जो उसकी आज्ञा नहीं मानते वे दण्ड पाएंगे।
2. परमेश्वर लोगों के साथ उसी तरह से सम्बंध रखता है, जिस प्रकार का सम्बंध परमेश्वर के साथ उनका है।

(क) जो लोग उसके आत्मिक परिवार में हैं उनके साथ वह पिता और उसकी संतान जैसा सम्बंध रखता है। परमेश्वर की वह संतान जो उसकी आज्ञाकारी है, उन्हें वह आशीषित करता है। परन्तु यदि उसकी कोई संतान, इस्राएलियों की तरह, उसकी आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं, तो उन्हें वह प्रताड़ित करता है (इब्रानियों 12: 5-7) ताकि वे अपनी गलतियों को सुधारकर उसके पास वापस

आ जाएं। पर यदि वे अपना मन बुराई से नहीं फिराते और बुराई करने में लगे रहते हैं, तो एक दिन वे परमेश्वर के संतान होने का अधिकार खो देते हैं।

(ख) जो लोग परमेश्वर के आत्मिक परिवार में नहीं है, परमेश्वर उन्हें उनके अपने मन के अनुसार चलने के लिये छोड़ देता है, या फिर ऐसा भी हो सकता है, कि परमेश्वर कुछ ऐसे ही लोगों को इस्तेमाल करके उनके द्वारा स्वयं अपने ही उन लोगों को प्रताड़ित करे जो उसकी आज्ञाओं की अवहेलना करते हैं। परन्तु कहीं पर भी जब बुराई बहुत अधिक बढ़ जाती है, तो परमेश्वर वहां लोगों को अवश्य दण्डित करता है।

(ग) कोई भी शासन या शासक चाहे कितना भी शक्तिशाली प्रतीत क्यों न हो, पर वास्तव में परमेश्वर से बड़ी कोई भी शक्ति नहीं है और उससे बड़ा कोई भी शासक नहीं हो सकता।

इतिहास इस बात का साक्षी है, कि जब परमेश्वर के चुने हुए लोग उससे दूर चले गए थे तो परमेश्वर ने बाबुल के प्रशासन को इसलिये बड़ा ही शक्तिशाली बना दिया था ताकि वह उन लोगों को दण्ड दें और इस प्रकार दु:खी होकर वे लोग परमेश्वर को याद करके उसके पास लौट आएं। इस काम को करने के लिये परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को राजा बनाकर खड़ा किया था। परन्तु उसकी ताकत जब बहुत अधिक बढ़ गई थी तो उसने घमन्ड के नशे में भरकर कहा था,

''क्या यह बड़ा बेबीलोन नहीं है जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ्य से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?'' (दानिय्येल 4:30)।

इस कारण परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को प्रताड़ित किया था, और बाद में नबूकदनेस्सर ने इसलिये इस प्रकार कहा था,

''....तब मैंने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है

उसकी स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा, उसकी प्रभुता सदा की है, और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहनेवाला है। पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है, और कोई उसको रोककर उससे नहीं कह सकता है, ''तू ने यह क्या किया है?'' (दानिय्येल 4:34, 35)।

जिस समय यीशु पर मुकदमा चलाया जा रहा था, तो पिलातुस ने यीशु से पूछा था,

''....क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है, और तुझे क्रूस पर चढ़ा देने का भी मुझे अधिकार है?'' (यूहन्ना 19:10)।

तब यीशु ने उसे उत्तर देकर कहा था,

''यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।'' (यूहन्ना 19:11)।

फिर हम हेरोदेस राजा के बारे में भी पढ़ते हैं, कि जब वह घमण्ड से फूल रहा था तो किस प्रकार उसे दण्ड मिला था। लिखा है:

''ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहनकर सिंहासन पर बैठा, और उनको व्याख्यान देने लगा। तब लोग पुकार उठे,

''यह तो मनुष्य का नहीं ईश्वर का शब्द है।'' उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा न दी; और वह कीड़े पड़कर मर गया।'' (प्रेरितों 12:21-23)।

रोमियों 13:1-7 में परमेश्वर द्वारा ठहराई गई उस व्यवस्था के बारे में हम पढ़ते हैं जिसे उसने उन लोगों के लिये ठहराया है जो अधिकार रखते हैं,

''हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि

कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इसलिये जो अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करनेवाले दण्ड पाएंगे। क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण हैं; अत: यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर, और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी; क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिये हुए नहीं; और परमेश्वर का सेवक है कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे। इसलिये अधीन रहना न केवल उस क्रोध के डर से आवश्यक है, वरन् विवेक भी यही गवाही देता है। इसलिये कर भी दो क्योंकि शासन करनेवाले परमेश्वर के सेवक हैं और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। इसलिये हर एक का हक्क चुकाया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो, जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए, उसका आदर करो।''

इस प्रकार, हम देखते हैं, कि आरंभ से ही मनुष्यों को पृथ्वी के ऊपर सब बातों का प्रबंध करने का अधिकार तो दिया गया है, पर सब अधिकारों के ऊपर स्वयं परमेश्वर का ही अधिकार है। मनुष्य चाहे परमेश्वर के अधिकार को माने या न माने; उसकी इच्छा पर चले या न चले, किन्तु परमेश्वर सब परिस्थितियों में अपनी इच्छा को पूरा करना जानता है। इसलिये उसका अधिकार सर्वोपरि है।

परमेश्वर का अधिकार आत्मिक जगत में

आत्मिक जगत वह है जिसे हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते। आत्मिक जगत में स्वर्गदूत हैं और वे आत्माएं हैं जो मृत्यु के द्वारा अपने-अपने शरीरों से अलग हो चुकी हैं।

स्वर्गदूतों का वर्णन करके एक जगह इस प्रकार कहा गया है:

''....उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी।'' (प्रकाशितवाक्य 5:11)।

2 पतरस 2:4 में हम उन स्वर्गदूतों के बारे में, इस प्रकार पढ़ते हैं, जिन्होंने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया था,

''क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अंधेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्द रहें।''

इसी सम्बंध में यीशु ने एक धनवान और लाज़र की कहानी के द्वारा आत्माओं के निवास स्थान का वर्णन करके लूका 16:19-31 में इस प्रकार कहा था,

''ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुंचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया, और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं.....''

प्रकाशितवाक्य 6:9-11 में भी उन लोगों की आत्माओं के विषय में हमें मिलता है जो पृथ्वी पर मर चुके थे परन्तु अब आत्मिक भाव से स्वर्ग में थे। लिखा है,

''...तो मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा जो परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी वध किए गए थे। उन्होंने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, 'हे स्वामी, हे पवित्र और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी पर रहनेवालों से हमारे लहू का बदला कब तक न लेगा?' उनमें से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया, और उनसे कहा गया कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दास और भाई जो तुम्हारे समान वध होनेवाले हैं उनकी भी गिनती पूरी न हो ले।''

''इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है. ...'' (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

पुथ्वी पर दो राज्य

इस जगत में पृथ्वी पर दो राज्य हैं, क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को स्वेच्छा से जीवन व्यतीत करने का अवसर दिया है, इसलिये प्रत्येक मनुष्य अपनी ही इच्छा से यह चुनाव कर सकता है कि पृथ्वी पर मैं किस राज्य में रहूं। पृथ्वी पर एक राज्य शैतान का है। शैतान उस समय से अपने राज्य पर प्रभुता कर रहा है जब से स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की इच्छा का विरोध किया था और जब से आदम और हव्वा ने परमेश्वर की इच्छा पर चलना छोड़ दिया था। शैतान के राज्य में वे स्वर्गदूत हैं जो परमेश्वर के अनुग्रह से गिर गए थे, और दुष्टात्माएं और परमेश्वर की आज्ञा न माननेवाले सभी लोगों की आत्माएं भी हैं, और वे सब लोग भी हैं जो परमेश्वर की इच्छा के विरोध में पृथ्वी पर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

दूसरा राज्य परमेश्वर का है। परमेश्वर के राज्य में वे स्वर्गदूत हैं जो परमेश्वर की इच्छापूर्ण करने के लिये उसके सेवक हैं। और परमेश्वर के राज्य में वे सब धर्मी लोग हैं जो मर चुके हैं और वे जो अभी पृथ्वी पर जीवित हैं। अब्राहम, हनोक, एलिय्याह, दानिय्येल और सभी धर्मी लोग जो मर चुके हैं और जो अभी ज़िन्दा हैं, सभी उसके राज्य में हैं।

यीशु ने पृथ्वी पर जन्म लेकर जब अपनी कलीसिया को स्थापित किया था, तो इस प्रकार इस जगत में स्वर्ग के राज्य का आरंभ हो गया था। इसलिये परमेश्वर के परिवार में जन्म लेने के द्वारा प्रत्येक मनुष्य

का प्रवेश परमेश्वर के राज्य में हो जाता है। जो लोग यीशु मसीह की कलीसिया में हैं, वे उसके राज्य में हैं, क्योंकि उसकी कलीसिया ही उसका राज्य है, जिसमें परमेश्वर यीशु के द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों को, संसार के अंधकार के वश से छुड़ाकर प्रवेश दिलाता है। (कुलुस्सियों 1:13, 18; रोमियों 16:16)। उन लोगों की आत्माएं जब इस भौतिक जगत को छोड़कर यहां से चली जाएंगी तो उन्हें परमेश्वर के आत्मिक राज्य में अनन्त निवास स्थान मिलेगा।

फिलिप्पियों 2:5-11 को पढ़कर हम सीखते हैं कि क्योंकि यीशु मसीह ने अपने आप को शून्य बनाया था,

> ''....और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसे अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।''

परमेश्वरत्व में यीशु, **वचन**, सर्वदा विद्यमान था, परन्तु मनुष्यों का पाप से उद्धार करने को वह स्वर्ग को छोड़कर एक मनुष्य के रूप में होकर पृथ्वी पर आ गया था, उसने स्वर्ग में अपने सब विशेष अधिकारों को तथा महिमा और प्रताप को त्याग दिया था। परमेश्वर ने उसे सारे जगत के पापों के लिये प्रायश्चित घोषित करके उसे जगत के पापों के लिये दण्डित किया था। और अब उसी को परमेश्वर ने अति महान् किया है। उसका नाम, परमेश्वर के निकट सब नामों में श्रेष्ठ है। उसी के आगे एक दिन सारे प्राणी घुटने टेकेंगे।

पर क्योंकि वह एक मनुष्य बनकर मनुष्यों का संगी बन गया था, इसलिये उसके व्यक्तित्व में एक विशेष परिवर्तन हो गया था। यद्यपि उसने मृत्यु के ऊपर विजय प्राप्त करने के पश्चात् वापस उस महिमान्वित वातावरण में फिर से प्रवेश कर लिया है जिसमें वह आरंभ से वर्तमान

था, और उसी महिमा को वह अपने अनुयायीयों को भी देता है (''वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों, जैसे कि हम एक हैं'' यूहन्ना 17:22), तौभी उसने अपने उन विशेष अधिकारों से स्वयं को वंचित बनाए रखा है जो आरंभ में स्वयं उसी के थे। इसलिये अब जो महिमा उसकी है वह उसे परमेश्वर द्वारा दी गई है, आज वह परमेश्वर के दाहिने है, इसलिये क्योंकि परमेश्वर ने उसे यह अधिकार दिया है। आज जो उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकार है (मत्ती 28:18) वह उसे परमेश्वर ने दिया है। परन्तु इससे पहले वह स्वयं सब महिमा और अधिकार का स्वामी था, पर अब जो कुछ भी उसके पास है वह सब उसके पास इसलिये है क्योंकि उसे वह सब कुछ दिया गया है। वह राजाओं का राजा है, अर्थात वह सारे विश्व का प्रभु है, न केवल शारीरिक दृष्टिकोण से ही परन्तु आत्मिक रूप में भी– क्योंकि राज्य उसे दिया गया था। (दानिय्येल 7:13, 14)। वह मेम्ना है. ... प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है। (प्रकाशितवाक्य 7:14)। वह यीशु मसीह है, और सारी पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है। (प्रकाशितवाक्य 1:5)।

उसी प्रभु के राज्य तथा अधिकार का वर्णन बाइबल में एक जगह इन शब्दों में किया गया है,

> ''वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इक्ट्ठा करेंगे।'' (मत्ती 24:31)।

उसके असंख्य स्वर्गदूत, तथा उसके चुने हुए लोग जो स्वर्गलोक में हैं और जो पृथ्वी पर हैं, उसकी आज्ञाओं को मानने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। उसकी सामर्थ्य से बड़ी केवल एक ही सामर्थ्य है, जिसका वर्णन हमें इन शब्दों में मिलता है,

> ''क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया है

तो प्रत्यक्ष है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, तो वह आप अलग रहा'' (1 कुरिन्थियों 15:27)।

प्रभु यीशु मसीह के पास आज सारा अधिकार है, क्योंकि वह सब अधिकार उसे परमेश्वर ने दिया है।

अनादि पुत्र

प्रस्तुत विषय पर सारी बातों पर विचार करने के पश्चात् अब हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद से उसका सम्बंध हमेशा के लिये मनुष्यों के साथ स्थापित हो गया है, अर्थात वह अब परमेश्वर का पुत्र और मनुष्यों का भाई है।

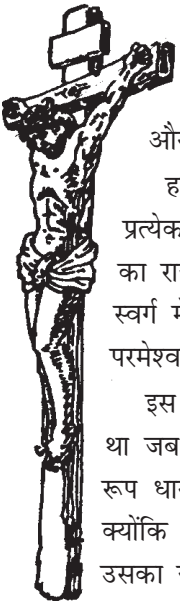

हमने यह भी सीखा है, कि क्योंकि उसने परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को माना था, इसलिये परमेश्वर ने उसे राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु बना दिया था। और आज वह स्वर्ग में और पृथ्वी पर सारा अधिकार रखता है, और केवल परमेश्वर ही उसके अधिकार के बाहर है।

इस कारण, जिस बलिदान का आरंभ उस समय शुरू हुआ था जब वचन ने अपने आपको शून्य बनाकर एक मनुष्य का रूप धारण कर लिया था तो वह बलिदान अभी भी जारी है, क्योंकि राज्य करने का अधिकार उसे दिया गया है, स्वयं उसका नहीं है, जैसा कि आरंभ में था।

परन्तु इसके बाद क्या होगा? जब इस पृथ्वी और आकाश का अंत हो जाएगा और जब सारे धर्मी जन एक नई पृथ्वी तथा नए आकाश में प्रवेश कर लेंगे, तब क्या होगा? क्या उसके बलिदान का अंत हो जाएगा, और क्या वचन फिर से परमेश्वरत्व में वापस जाकर उसी प्रकार से उसमें उसके साथ एक हो जाएगा जिस प्रकार से वह पहले उसके साथ उसमें था?

प्रकाशितवाक्य 19:11-16 में **वचन** के बारे में दर्शाया गया है, कि किस प्रकार आज वह राज्य और न्याय कर रहा है,

''फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है। उसकी आंखें आग की ज्वाला हैं और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। उस पर एक नाम लिखा है, जिसे उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। वह लहू छिड़का हुआ वस्त्र पहने है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहने हुए उसके पीछे-पीछे है।

जाति-जाति को मारने के लिये उसके मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है। वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है: **''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।'' ''**

और तब अंत इस प्रकार होगा,

''....उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-8)।

''फिर मैंने छोटे-बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।'' (प्रकाशितवाक्य 20:12)।

''पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है....'' (यूहन्ना 5:22)।

''और ये (बुराई करनेवाले मत्ती 25:41-45) अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।''

''इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ्य का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सबसे अंतिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा वह मृत्यु है।

क्योंकि ''परमेश्वर ने सब कुछ उसके (मसीह के) पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा।

और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा, जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।'' (1 कुरिन्थियों 15:24-28)।

ये सब बातें जिन्हें अभी बाइबल से हमने पढ़ा है इस बात पर प्रकाश डालती हैं, कि इस वर्तमान समय से लेकर न्याय के दिन तक क्या कुछ होगा। परन्तु अंतिम बैरी अर्थात् मृत्यु के नष्ट हो जाने और धार्मियों के स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त कर लेने के बाद, **वचन** अपनी उस अमर तथा अविनाश देह से अलग नहीं हो जाएगा जिसे उसने अपने स्वर्गारोहण के समय प्राप्त किया था और जो उसे मानवता के साथ सदैव बांधे रखेगी। इसके विपरीत, उस समय वह अपने उस अधिकार को जो उसे राजाओं का राजा होने को दिया गया था समर्पित कर देगा, तथा स्वयं अपने आप को भी परमेश्वर के अधीन कर देगा, ''ताकि सबमें परमेश्वर ही सब कुछ हो।'' ये शब्द भविष्य में आनेवाले समय से हमें परिचित करवाते हैं और यह भी दर्शाते हैं कि परमेश्वरत्व में वचन का अनन्तकाल

में क्या स्थान होगा।

परन्तु यदि पृथ्वी पर धर्मी बनकर मनुष्य परमेश्वर के परिवार में जन्म ले सकता है और धर्मी लोगों को उनकी मृत्यु के उपरांत स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाने का आश्वासन दिया गया है, तो फिर परमेश्वरत्व में वचन का स्थान पहले जैसा ही क्यों नहीं हो सकता?

गलतियों 4:4-7 में हमें यह बताया गया है, कि मनुष्यों को किस आधार पर परमेश्वर के संतान होने का अधिकार दिया गया है,

> ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है। इसलिये अब तू दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।''

सो परमेश्वर ने उचित समय पर अपने पुत्र को भेजा था, और वह पुत्र मसीह था। उसका नाम इससे पूर्व मसीह नहीं था, अर्थात् पृथ्वी पर आने से पहले उसका नाम मसीह नहीं था। परन्तु यह नाम उसे परमेश्वर का पुत्र बनने पर दिया गया था। यह नाम उसे तब दिया गया था जब **वचन** अपने आप को शून्य करके मनुष्य के रूप में हो गया था। वही मनुष्य अर्थात् मसीह, मनुष्य के लिये बलिदान हुआ था, और वही मरणोपरान्त फिर जी उठा था, और वही आज परमेश्वर के दाहिने बैठकर परमेश्वर और अपने भाईयों के बीच एक मध्यस्थ बनकर राज्य कर रहा है। इसलिये, यीशु मसीह की आवश्यकता मनुष्यों को हमेशा रहेगी न केवल इसी जगत में, परन्तु आनेवाले जगत में भी।

उसके द्वारा परमेश्वर ने अपने और मनुष्यों के बीच में एक नया

सम्बंध कायम किया है। और वह क्या है? वह यह सम्बंध है कि उसके द्वारा अन्य लोगों को लेपालक होने का पद मिल सके। अब इस बात की कल्पना करके सोचें, कि परमेश्वर मनुष्य को उत्तराधिकारी बनाना चाहता है; और मनुष्य भी उत्तराधिकारी बनना चाहता है। पर उत्तराधिकारी बनने के दान को प्राप्त करने के लिये एक मध्यस्थ की आवश्यकता होती है। परमेश्वर का पुत्र और मनुष्यों का भाई यीशु मसीह हमारा मध्यस्थ है। क्योंकि उसके द्वारा हमे परमेश्वर के लेपालक होने का पद प्राप्त होता है।

परन्तु यदि मसीह परमेश्वर और हमारे बीच में से निकल जाए और फिर से अपने उसी स्थान पर जिसमें वह परमेश्वरत्व में आरंभ में था, लौट जाए, अर्थात् **वचन** के रूप में जिस प्रकार से वह आदि में था, यदि ऐसा हो जाए तो न तो पुत्र होगा और न पहलौठा होगा। और यदि ऐसा होगा, अर्थात् पहलौठा न होगा तो क्या अन्य संतान हो सकते हैं?

किन्तु जिस प्रकार अभी हमने देखा है, कि परमेश्वर ने हमारे मनों में अपने पुत्र के आत्मा को भेजा, जो पिता और पुत्र के सम्बंध को व्यक्त करता है और हमें परमेश्वर के संतान होने का अधिकार देता है। इसलिये जिस प्रकार पिता और पुत्र का सम्बंध निरन्तर बरकरार है उसी तरह से उसके द्वारा हमारा सम्बंध भी परमेश्वर के साथ बना रहता है। हमारे बड़े भाई यीशु मसीह ने जो अधिकार प्राप्त किए हैं, उन्हीं अधिकारों की बदौलत अर्थात् उन्हीं के आधार पर हमें लेपालक या उत्तराधिकारी होने का हक मिला है।

एक और स्थान पर मसीह के पुत्र बने रहने के बारे में यूं लिखा हुआ है,

> ''...परन्तु उस शपथ का वचन (जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी कि उसके वंश के द्वारा जगत में उद्धार आएगा) उस पुत्र को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के लिये सिद्ध किया गया है।'' (इब्रानियों 7:28)।

इब्रानियों 5:8, 9 में बताया गया है, कि पुत्र दु:ख उठा-उठाकर सिद्ध बना था, अर्थात् अपने उस बलिदान के द्वारा जो उसने एक बार हमेशा के लिये किया था। इसलिये जब उसने सारी मानवता के पापों के लिये अपने आपको क्रूस के ऊपर बलिदान किया था, तो उसके दु:ख उठाने से वह सिद्ध ठहराया गया था (अर्थात उसने सारी मानवता का उद्धारकर्ता बनने का स्थान प्राप्त किया था) और इस प्रकार पुत्र के रूप में वह युगानुयुग के लिये सिद्ध किया गया था, जिसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर के साथ उसके पुत्रत्व का सम्बंध सदैव बना रहेगा।

वचन के बारे में बाइबल में लिखा है, कि सब कुछ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजा गया है। (कुलुस्सियों 1:16)। इस कारण सब वस्तुओं का स्वामी स्वयं **वचन** ही है, उसी के द्वारा हम उत्तराधिकारी बनाए जा सकते हैं। मसीह के बारे में लिखा है कि वह सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया गया है:

> ''....परमेश्वर ने.... इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया...'' (इब्रानियों 1:1, 2)।

रोमियों की पुस्तक के 8वें अध्याय में परमेश्वर के आत्मिक परिवार के विषय में हमें इस प्रकार पढ़ने को मिलता है, 15-17 आयतों में लिखा है,

> ''क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालक की आत्मा मिली है, जिससे हम 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारते हैं।
>
> आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं; और यदि संतान हैं तो वारिस भी वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम

उसके साथ दु:ख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं।''

यहां हम न केवल यह पढ़ते हैं, जैसे कि गलतियों 4 अध्याय में भी हमने पढ़ा था, कि हम परमेश्वर के वारिस हैं, परन्तु यहां यह भी लिखा हुआ है, कि हम मसीह के संगी वारिस है।

अब यदि मसीह परमेश्वर का वारिस है, और उसके भाई उसके साथ संगी वारिस हैं, तो उन्हें विरासत में मिलेगा क्या?

1. नया आकाश और नई पृथ्वी। (प्रकाशितवाक्य 21, 22)।

''जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।'' (प्रकाशितवाक्य 21:7)।

2. महिमा, जिसका वर्णन रोमियों 8:17 में मिलता है :

''और यदि संतान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं।''

3. मसीह के साथ उसके सिंहासन पर बैठने की आशीष :

''जो जय पाए मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसे मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।'' (प्रकाशितवाक्य 3:21)।

कौन वास्तव में जान सकता है कि मसीह के भाईयों को किस प्रकार की महिमा और उत्तरदायित्व और आत्मिक आशीषें प्राप्त होंगी? उस आने वाले आत्मिक जगत की कल्पना तक करके हम उसका वास्तविक अनुमान सही में नहीं लगा सकते। पर जो प्रतिज्ञा उसने की है उसका वर्णन हम इन शब्दों में अवश्य कर सकते हैं कि वह जो भी है और जो कुछ भी उसके पास है, अंत में उस सबसे वे सारे लोग लाभान्वित होंगे जो उसके द्वारा जयवन्त होंगे।

निष्कर्ष

अंत में हमें चाहिए कि हम इस विषय पर विचार करके सोचें कि मनुष्यों का उद्धार करने के लिये और पाप से मुक्ति प्रदान करके परमेश्वर के साथ हमारा मेल कराने के लिये परमेश्वरत्व ने अपनी महान् योजना को किस प्रकार सफल बनाया था। उसका महान प्रेम और विशाल बलिदान वास्तव में मनुष्यों की समझ से परे है, पर जो लोग परमेश्वर की बाइबल में लिखी बातों से परिचित हैं, वे जानते हैं कि यह सब बातें वास्तव में सच हैं।

कुछ समय पूर्व, आपको याद होगा, अपने इस अध्ययन में, हमने इस प्रश्न पर विचार किया था, कि मनुष्य जो पाप के कारण शारीरिक और आत्मिक दोनों रूप से परमेश्वर से अलग है, क्या केवल एक शारीरिक बलिदान के द्वारा ही उसके पापों का सम्पूर्ण प्रायश्चित हो सकता था? और हमने इस सम्बंध में यह देखा था कि यीशु मसीह का महान् बलिदान केवल शारीरिक बलिदान ही नहीं था परन्तु वह आत्मिक भी था। और उसने मानवता के लिये जब अपने आप को दे दिया था तो उसका वह बलिदान केवल क्रूस पर उसकी मृत्यु तक ही सीमित नहीं था, परन्तु वह बलिदान हमेशा के लिये था। वे लोग जो उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, वे इस कारण हमेशा के लिये परमेश्वर के साथ उसकी सब आशीषों का आनन्द उठाएंगे क्योंकि उनके भाई यीशु मसीह का लहू उनके और परमेश्वर के मध्य इस बात का साक्षी बनकर हमेशा उपस्थित रहेगा कि उनके पापों का प्रायश्चित किया जा चुका है।

इसी कारण से आज भी हम जो परमेश्वर के आत्मिक परिवार में उसके विश्वास-योग्य जन हैं, हम प्रार्थना के द्वारा उसके सम्मुख पूरे हियाव के साथ आते हैं (इब्रानियों 4:16), क्योंकि हमारे भाई यीशु मसीह का प्रेम तथा उसका बलिदान जो परमेश्वर के अनुग्रह से उसने

हमारे लिये किया था इस बात का प्रमाण है कि हम परमेश्वर के संतान हैं। मसीह में हमारा उद्धार सुरक्षित है; और वह प्रति-दिन हमारी रक्षा करता है, यह भी सुनिश्चित है।

''सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा? परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर ही है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है।

फिर, कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल या नंगाई या जोखिम, या तलवार?

जैसा लिखा है, ''तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं, हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।''

परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु न जीवन न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं न वर्तमान न भविष्य न सामथर्य, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।'' (रोमियों 8:31-39)।

सो जबकि परमेश्वर ने और यीशु मसीह ने हम से ऐसा विशाल प्रेम रखा है, तो क्या हमें भी अपने आपको उसके प्रति पूर्णरूप से समर्पित

करके अपने प्रेम को उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके लिये व्यक्त नहीं करना चाहिए? और क्या हम नहीं चाहेंगे कि परमेश्वर के अद्‌भुत प्रेम के इस सुसमाचार को सारे संसार के सब लोग जानें?

जिस यीशु मसीह ने अपने आप को जगत के सारे लोगों के लिये बलिदान किया था, उसी ने इस प्रकार कहा था,

> ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।''

बाइबल के अनुसार....

प्रभु यीशु मसीह का एक अनुयायी बनने के लिये मनुष्य को:

1. यीशु मसीह में सारे मन से विश्वास लाना चाहिए।
2. हर एक बुराई तथा अंध-विश्वास से अपना मन फिराना चाहिए।
3. यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर, उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा तथा पापों से उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए।

   (मरकुस 16:16; प्रेरितों. 2:38; प्रेरितों. 8:35-39)।

बपतिस्मा लेने का अर्थ है, जल के भीतर गाड़े जाना। जो व्यक्ति प्रभु यीशु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेता है, उसे जल के भीतर इसलिये गाड़ा जाता है क्योंकि वह अपने पहले के जीवन को छोड़कर उसके लिये मर जाता है; और फिर जल की समाधि में से बाहर निकलकर, वह यीशु मसीह में होकर, एक नया जीवन निर्वाह करने लगता है। (रोमियों 6:3-6)।

इस प्रकार अपने सब पापों से छुटकारा पाकर मनुष्य प्रभु यीशु मसीह में होकर एक नई सृष्टि बन जाता है। और मसीह

उस व्यक्ति को अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (2 कुरिन्थियों 5:17; गलतियों 3:27; प्रेरितों. 2:47; मत्ती 16:18)।

कलीसिया शब्द का अर्थ है, ''एक मंडली'' अर्थात मसीह की कलीसिया उन सब लोगों की एक मंडली है जिन्होंने अपने सारे मन से यीशु मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर उससे उद्धार पाया है और अब वे प्रतिदिन उसकी इच्छानुसार चलकर अपना जीवन निर्वाह करने में प्रयत्नशील हैं। (1 पतरस 2:21)।

अधिक जानकारी तथा सम्पर्क के लिये पता :

Sunny David
Church of Christ
P.O. Box 3815
New Delhi-110049
Email: sunny_davidin@yahoo.co.in